विद्यापति : पुनर्मूल्यांकन

प्रधान सम्पादक

श्री दीनानाथ झा

प्रबन्ध सम्पादक

श्री राजेश्वर झा

सम्पादक

श्री हँसराज



प्रकाशक

मैथिली साहित्य संस्थान

पटना

[मूल्य तीन रुपया मात्र

विद्यापति : पुनर्मूल्यांकन

•

प्रधान सम्पादक
श्री दीनानाथ झा

प्रबन्ध सम्पादक
श्री राजेश्वर झा

सम्पादक
श्री हँसराज



•

प्रकाशक
मैथिली साहित्य संस्थान
पटना

[मूल्य तीन रुपया मात्र



मुद्रक
श्री कामेश्वर प्रसाद
कालिका प्रेस, आर्यकुमार पथ
पटना–४

मैथिली साहित्य संस्थानक

पृष्ठभूमि

'विद्यापति : पुनर्मूल्यांकन' अपनेक हाथ मे अछि। स्वर्गीय डॉ० अमर नाथ झा सँ विद्यापतिक प्रसंग गप्प करैत ई निश्चय भेल छल जे विद्यापतिक काव्यकृति एवं व्यक्तित्व पर अधिकारी विद्वानलोकनि सँ, मुख्यतः आधुनिक दृष्टिकोण रखनिहार अध्यापक वर्ग सँ, निबन्ध लिखबाओल जाए आ से पुस्तकक रूप मे प्रकाशित हो। अमरनाथ बाबू चल गेलाह आ बात पुरना गेल। फेर विचार भेल जे प्रयास कएल जाय। अतः आइ सँ तीन वर्ष पूर्व हमरा लोकनि पत्राचार आरम्भ कएल। निरन्तर प्रयास कएला पर जे निबन्ध उपलब्ध भए सकल से अपने लोकनिक समक्ष प्रस्तुत कएल अछि। जँ अमर नाथ बाबूक जीवन काल मे ई काज होइत तँ हुनक निबन्ध अवश्य भेटैत। सन्तोष एतबे जे आदित्य बाबूक निबन्ध भेटि गेल।

निबन्धकारलोकनिक प्रति हमरालोकनि की आभार प्रकट करू? त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पितम्। हमरालोकनि तँ संकलयिता मात्र छी। भाषाक दृष्टियेँ निबन्धकारलोकनिक स्वतन्त्रता केँ ध्यान मे राखल गेल अछि।

संकलनक प्रकाशनक हेतु हमरालोकनि मैथिली साहित्य संस्थानक आभारी रहब।

यदि एहि प्रयास सँ विद्यापतिक काव्यक मर्म बुझबाक दिशा मे विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक रुचि उत्पन्न भेल तँ हमरालोकनि अपन श्रम केँ सार्थक मानब।

पटना, विद्यापति स्मृति पर्व.
२१-११-१९६६

श्री दीनानाथ झा
श्री राजेश्वर झा
श्री हंसराज

विद्यापति : पुनर्मूल्यांकन



स्व० डा० अमरनाथ झा

(जन्म—१८९७ ई० : मृत्यु—१९५५ ई०)

विविक्तवर्णाभरणा सुखश्रुतिः
प्रसादयन्ती हृदयान्यपि द्विषाम् ।
प्रवर्त्तते नाकृतपुण्यकर्मणाम्
प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती ॥

"स्वस्ति, गजरथेत्यादिसमस्तप्रक्रियाविराजमान श्रीमद्रामेश्वरीवरलब्ध-प्रसादभवानीभवभक्तिभावनापरायणरूपनारायणमहाराजाधिराज श्रीमच्छिवसिंह देवपादाः समरविजयिनो जरैलतप्पायां विसपीग्रामवास्तव्यसकललोकानभूकर्षकांश्च समादिशन्ति। ज्ञातमस्तुभवताम्। ग्रामोऽयमस्माभिः सप्रक्रियाभिनवजयदेवमहाराज पण्डितठक्कुर श्रीविद्यापतिभ्यः शासनीकृत्यप्रदत्तोऽतोयूयमेतेषांवचनकरीभूपकर्षणादिकं कर्मकरिष्यथेति। ल० स० २९३ श्रावणशुदि सप्तम्यांगुरौ॥

श्लोकास्तु

अब्दे लक्ष्मणसेनभूपतिमते वह्निग्रहद्वयाङ्किते,
मासि श्रावणसंज्ञके मुनितिथौ पक्षे बलक्षे गुरौ।
वाग्वत्याः सरितस्तटे गजरथेत्याख्याप्रसिद्धे पुरे,
दित्सोत्साह-विवृद्धबाहुपुलकः सभ्याय मध्येसभम् ॥१॥
प्रज्ञावान् प्रचुरोर्वरंपृथुतराभोगं नदीमातृकम्,
सारण्यं ससरोवरंच विसपीनामानमासीमतः।
श्रीविद्यापतिशर्मणे सुकवये वाणीरसास्वादविद्
वीरः श्रीशिवसिंहदेवनृपतिर्ग्रामन्ददे शासनम् ॥२॥
येन साहसमयेन शस्त्रिणा तुङ्गवाहवरपृष्ठवर्तिना,
अश्वपत्तिबलयोर्बलंजितंगज्जनाधिपतिगौड़भूभुजाम् ॥३॥
शैप्यदूम्भ इव कज्जलरेखा श्वेतपद्म इव शैवलवल्ली,
यस्यकीर्तिनवकेतकान्त्यां म्लानिमेतिविजितोर्हरिणाङ्क ॥४॥
द्विषन्नृपतिवाहिनीरुधिरवाहिनीकोटिभिः।
प्रतापतरुवृद्धये समरमेदिनीप्लाविता।
समस्तहरिदङ्गनाचिकुरपाशवासः दामः।
सितप्रसरपाण्डुरं जगति येन लब्धं यशः ॥५॥
मतङ्गजरथप्रदः कनकदानकल्पद्रुमस्तुला-
पुरुषमद्भुतं निजधनैः पिता दापितः।
अखानि च महात्मना जगति येन भूमी-
भुजा परापरपयोनिधिप्रथममन्त्रपात्रंसरः ॥६॥

नरपतिकुलमान्यः कर्णशिक्षावदान्यः परि-
चितपरमार्थो दानतुष्टार्थिसार्थः ।
निजचरितपवित्रो देवसिंहस्यपुत्रः स जयति
शिवसिंहो वैरिनाग्रेन्द्रसिंहः ॥७॥
ग्रामे गृह्णन्त्यमुष्मिन् किमपिनृपतयो हिन्दवो ये
तुरुष्का गोकोलस्वात्ममांसैः सहितमनुदिनं-
भुञ्जते ते स्वधर्मम् ।
ये चैनदग्रामरत्नं नृपकररहितंपालयन्ति प्रतापैं-
स्तेषांसत्कीर्त्तिगाथा दिशि दिशिसुचिरंगीयतांवन्दिवृन्दैः ॥८॥

—ताम्रपत्रक अभिलेख

विषय-सूची

विद्यापतिक काव्य-वैदग्ध्य

डॉ० श्री आदित्यनाथ झा, आइ० सी० एस०

मिथिलाक घर-आङन बाट घाट मठ-मन्दिर महाकवि विद्यापतिक पदसँ गुञ्जित रहैत अछि। वयःसन्धिक आयुसँ लए कें जरावस्था पर्यन्तक नर ओ नारी एहि पद-सबकें अपन जीवनक, क्षण क्षणक मधुर-कोमल सरस चित्रक रूपमे देखैत छथि ओ युग-युग व्यतीत भेलहु उत्तर एहि पद सबहिक अमरत्व बढ़ितहिं जाए रहल अछि। विद्यापतिक पद लोकक कंठहार थिक। आगङ्ग-हिमाचल भूमि मे बसल लोकक मानस हिनक प्रत्येक पदकें कण्ठ मे बसओने जीवित रखैत आएल अछि। वयःसन्धिक अवस्था मे चकिता बाला, रूपसम्पत्तिसँ गर्विता तरुणी, पतिक भुजामे बद्ध कामिनी, अथवा प्रौढ़ावस्थाक दीप्त रूपसँ आलोकिता महिला—सब केओ हिनक पदक स्वर ओ शब्दक स्पर्शसँ आइओ धरि ओहिना रोमाञ्च-कण्टकित होइत छथि जेना राजा शिवसिंहक अतिरूपा रानी राजरानी लखिमा होइत छलीह होएत। काव्यक सबसँ पैघ सिद्धि इएह थिक जे लोकमानस एवं जनजीवन ओकरा कोन प्रकारसँ प्राणनिधि बनाए संजोगि रखने अछि। महाकालक निर्झर रथचक्र अपन घर्षरसँ युगक पश्चात् युगकें ध्वस्त करैत आएल अछि किन्तु एहि मैथिल-कोकिलक वाणी अविच्छिन्न ओ अव्याहत मिथिलाक गगनमे गुञ्जित होइत रहल अछि। ई वाणी सत्ये कालविजयिनी अछि।

एहि लोकप्रियताक कारण थिक विद्यापतिक काव्यक सर्वाङ्गीण सामर्थ्य। अपन काव्यक प्रशंसा करैत अहंकारी ई कवि महाकवि कालिदासहिक समान दर्पोक्ति कएने छथि जे—

बालचन्द विज्जावइ भासा।
दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा॥

ई आत्मबोध केवल वर्ण्य (Subject) ओ रूपहिक (Form) नहि, प्रत्युत हिनक काव्यक निहित (Content) सौन्दर्य (Beauty) ओ मर्म (Sentiment)क श्रेष्ठताक द्योतक थिक।

जीवनकें विद्यापति सम्पूर्ण मनुष्यक सम्पूर्ण दृष्टिसँ देखैत छलाह। तँहि तँ विद्यापतिक काव्यक वर्चस्व तीक्ष्ण अछि। अनुभूतिकें वैयक्तिक धरातल पर आनि

ओहिमे योगी भोगी ओ द्रष्टाक निर्वैयक्तिकताक निर्वाह करबामे जे कवि समर्थ होइत छथि हुनके शृङ्गार-राग देहक गान भैओके अविनस्वर रूपक गान भए जाइत अछि। ग्रिअरसन साहेब जखन मिथिलाक नारीक कण्ठसँ ई पद सब सुनलैन्हि तँ एही अविनश्वरताक अनुभूतिसँ व्याकुल भए ओ कहने छलाह जे हिन्दू धर्मक सूर्य अस्त भए जाए, राधा ओ कृष्णक प्रति आस्था समाप्त भए जाए तथापि विद्यापति जाहि पद सबमे राधाकृष्णक प्रेमभोगक वर्णन कएलैन्हि अछि ओहि हेतु लोकक अनुराग कहिओ क्षीण नहि भए सकैत अछि।

कोनहु मैथिलक हेतु विद्यापतिक प्रशंसाक निमित्त शब्दक अभाव होएब स्वाभाविक अछि, कारण, नेनहिसँ एहि कविक उत्तान-शृङ्गारहुक पद सब हमरालोकनिक रक्तमे मीलल अछि, पचि गेल अछि। चरबाह-हरबाहक कण्ठसँ, परिवेशक कन्या तरुणी वा युवतीक कण्ठसँ, सिद्ध गायकक कण्ठसँ किंवा मन्दिर मे भक्तिक आवेशसँ उन्मत्त भक्तक कण्ठसँ शृङ्गारक गान सुनैत सुनैत ई पद सब व्यक्तित्वक अंश भए जाइत अछि। भाषाकेँ एतए अनिर्वचनीयताक वेदना होअए लगैत अछि। रतिक किलोलकेँ वाणी द्वारा शुद्ध सौन्दर्यक रूपमे मुखरित करबाक हेतु, ओ कोनहु युगक रचना किएक ने हो, भीषण क्षमता, दारुण सिद्धि ओ अटूट विश्वास चाही। जयदेव विद्यापति चण्डीदास एही शक्तिसँ जनमनहारी भए गेल छथि। सूरकेँ इएह क्षमता प्राप्त छल। मुदा परवर्त्ती रीतिकालक रचयिता मे एकर अभाव छल; हुनक रूप-आसक्ति सहज ओ तन्मय नहि छल। ओ मनक सहज स्फोटसँ नहि लिखल; मनकेँ चिन्तनक दबाव सँ पीड़ित कएल ओ तखन पदरचना कएल। तेँ रीतिकालक शृङ्गार की तँ कलुषित लगैत अछि अथवा कृत्रिम। ध्येय दूषित भेल तँ समस्त परवर्त्ती कृष्णकाव्य दूषित ओ अश्लील भए गेल। किन्तु विद्यापतिक जे पद अश्लीलताक परिधिक मध्यहु मे अबैत अछि—जेना वयःसन्धिस्थ कन्याक उरोजक वर्णन, विपरीत रति अथवा संभोगक चित्र—ओहु पद सबकेँ कन्या ओ महिलागणक बीचहु मे वयस्क गायक तन्मय भएभए गबैत छथि ओ ताहि मे हुनका ने कनिओ संकोच होइत अछि, ने कुण्ठा, ने लज्जा। ई थिक विद्यापतिक काव्यक श्रेष्ठत्व जे ओ निर्वसन, नग्न विहार-रत देहक रूपकेँ दिव्य ओ गेय बनाए देल अछि।

शृङ्गारक गानकेँ दैविकता ओ भगवल्लीलाक मोट आवरण मे झँपबाक प्रयास तँ पश्चात् आरम्भ भेल। पहिने तँ एकरा नितान्त सहज एवं जीवनक निरन्तर अंश मानल जाइत छल। काव्य, चित्रकला, भित्तिचित्र, संगीत ओ मूर्त्तिकला कोनहु क्षेत्र मे आर्यावर्त्तक केओ ऋषि वा मनीषी काम, शृङ्गार, रतिक सरस सजल अङ्कनक हेतु कोनो वर्जना नहि कएल अछि, कतहु ओकर निषेध नहि

कएल। दक्षिणक वा उत्कलक मन्दिर सबमे अङ्कित मिथुन-लीला एकर साक्षी अछि ओ मानए पड़त जे जयदेवहुकें एही अङ्कित छवि सबसँ प्रेरणा प्राप्त भेल छलैन्हि। भारतक जातीय जीवन मे आरम्भहि सँ शृङ्गार ओ धर्म दूनू नीर-क्षीर जकाँ मिलल अछि। वेदहुक ऋचा सब मे शृङ्गारक उन्मुक्त गान अछि तथा ओहूमे ऐहिक सौन्दर्य ओ मिथुनव्यापारक स्वच्छन्द वर्णन भेटैत अछि। ओही उपमान सब मे प्रकृतिहुक पर्यवेक्षण कएल गेल अछि तथा नारी-ऋषिलोकनि एहन एहन ऋचा रचने छथि जाहि मे देहक सौन्दर्य ओ देहक भोग-सामर्थ्यकें द्विगुण करबाक हेतु देव वरुणसँ उन्मुक्त कण्ठें आकुल निवेदन कएल गेल अछि। हमरालोकनिक धर्म मे ई सत्य सब केओ स्वीकार करैत छथि जे मनुष्य-जन्म बड़ तपसँ भेटैत छैक। ताहि परसँ सौन्दर्य तँ जानि नहि जे कतेक दारुण तपसँ प्राप्त होइत छैक। निरुपमा किंवा अनुपमा हमार मे गोटेक गड़ल जाइत अछि। एही कारणें ईश्वरहु कें एहि "अपुरुब के विधि आनि मिलाओल खितितल लाबनि सार" अथवा "धनि धनि रमनि जनम धनि तोर" रूप मे देखल जाइत रहल अछि। एहि भारतीय चिन्ता-धारा मे कहिओ वा कतहु कनिओ कुण्ठाक बोध नहि भेल अछि। एहि धर्मक मूल मे अछि आनन्दवाद। जहिआसँ वेद मे इन्द्रकें देवक प्रतिष्ठा भेटल, तहिआसँ ऐहिकताक रूप निखरए लागल। तैँहि तँ विद्यापति वैष्णवगान मे रति-भोग लीलाकें आधार बनाओल ओ अमर भए गेलाह।

एहि कथामे सबहुँ विद्वानकें ऐकमत्य अछि जे कृष्णकाव्यक गङ्गा सर्वप्रथम पूर्वी लोकभाषामे अवतरित भेल अछि। गङ्गा पश्चिम सँ पूबकें जाइत छथि मुदा कृष्णकाव्यक गङ्गा पूबसँ पश्चिमकें गेल अछि। भक्तिक उत्पत्ति द्रविड़ देशमे भेल; रमानन्द प्रभृति ओकरा प्राच्य देशमे आनल ओ तखन कृष्ण-राधाक एहि गङ्गा-यमुनामे भक्तिक सरस्वतीक समाहार भेल। जयदेव-चण्डीदास-विद्यापतिक राधा "प्रेम-पुतलि" छथि; एकान्ततः हाड़-मांस-रक्तक नारी छथि। हुनकामे दिव्यता अछि किन्तु सहजता ओहिसँ बाढ़ि अछि। जयदेवकें कृष्णराधा गानक प्रेरणा पुरी-कोणार्कक उत्कीर्ण छविसँ भेल होइन्ह किन्तु सबसँ अधिक जे हुनका भेटलैन्हि से लोक भाषा सँ। राधा ओ कृष्ण तँ लोक-गीतमे बसि गेल छलाह, सामान्य जनताक प्राणमे मीलि गेल छलाह। लोकवाणी हुनक शृङ्गार, उत्तान शृङ्गार कें तन्मय भएकें गबैत छल। कृष्ण-धमाली ओ शुक्ल धमालीक पद जाहिमे राधाकृष्णक लीलाक घोर अश्लील वर्णन अछि बङ्गाल उत्कल ओ पूर्व बिहारक गली-गलीमे, कोठा सोफामे, तरुण-तरुणीक मनमे गुञ्जित होइत छल। जयदेवक विलासी कृष्ण ओ काम पीड़िता राधाक चित्र एही गीत सबहिक परिष्कृत रूप थिक ओ विद्यापतिमे प्रवाहित सहज मानवीय वासनाक छवि राधिका एही लोकवाणीक रमणीय राधिका थिकीह। सम्पूर्ण वैष्णव

पदावली एकरे सहज विकास थिक। विद्यापतिक प्रसङ्ग एहि उक्तिक पुष्टिमे अन्य मैथिल कविगण यथा उमापतिक गीतक प्रमाण देब पर्याप्त होएत।

साहित्यिक दृष्टि सँ विद्यापति उपमा ओ उपमान दृश्य ओ दृष्टि सब किछु जयदेवसँ ग्रहण कएल ओ तँहि हुनका अभिनव-जयदेवक उपाधि देल गेल मुदा महाकवि कालिदासक प्रभाव नगण्य नहि अछि। विद्यापतिक निरावरण केलिवर्णन सँ कालिदासक कुमारसम्भवक चित्र कतेक बड़ल चड़ल अछि। जयदेव, विद्यापति, सूर—केओ कालिदासक एहि महिम उपमा सब सँ रञ्जित उत्तान शृङ्गारक प्रभावसँ वञ्चित नहि रहि सकलाह। साहित्यिक दृष्टि सँ विद्यापतिक काव्यक उत्स कुमारसम्भवहिक परिवेशमे ताकल जाए सकैत अछि किएक तँ जयदेवहुक उत्स कालिदासहिक काव्यमे अछि।

कालिदासक युगमे शिव पार्वतीक स्थान जनमनमे ओएह छल जे जयदेव-विद्यापतिक युगमे राधा-कृष्णक भए गेल छल। लोकमानस अपन प्रेम शृङ्गार रति ओ विलासक प्रेरणा शिव-पार्वतीक केलि-कथाहिसँ ग्रहण करैत छल। शिव-पार्वती यदि कालिदासक युगमे ओना बन्द्य रहितथि जेना ओ विद्यापतिक युगमे भए गेल छलाह तँ सम्भवत: कालिदासकेँ कुमारसम्भवमे उमाशंकरक एहन घोर शृंगार वर्णन करबाक साहस नहि होइतन्हि। परवर्ती युगमे पार्वती जगज्जननी भए गेलीह ओ शिव देवाधिदेव, ओ ओहि स्थानमे जनता अपन प्रेमदेव ओ इष्टदेवक रूपमे राधा-कृष्णकेँ प्रतिष्ठा कए लेल। विद्यापति शिव-पार्वतीक सम्भ्रमित छथि किन्तु राधाकृष्णक लीलामे अकुण्ठित। पूर्वहिं प्रतिपादित भेल अछि जे एहि धर्मक मूलमे अछि आनन्दवाद। ई हमरालोकनिक विशेषता थिक। मुसलमानक धर्म मे अल्ला सर्वसत्तावान् अधीश्वर ओ शासक छथि, हुनका समक्ष नतमस्तक होएबाक थिक। ईसाई धर्मक ईश्वर दु:खक त्राता छथि, परोपकारी छथि मुदा एहि धर्मक मूलमे दु:खक वेदना अछि, ओतए भक्त फाँसी पर टाङल जाइत अछि। किन्तु आर्यधर्म किंवा हिन्दू धर्मक ईश्वर पति छथि, पत्नी छथि, प्रिय छथि, सहज छथि, लीलामय छथि। हुनका सँ वात्सल्य, रति, भोग, मित्रता, समता कोनहु वस्तुक निवेदन कएल जाए सकैत अछि। वैष्णव भक्तिधारामे इएह बात अधिक सँ अधिक सहज भए गेल अछि।

विद्यापतिक काव्य पर कालिदासक प्रभाव कतेक ओ कोन रूपक अछि ताहि हेतु किछु प्रसङ्गक उल्लेख पर्याप्त होएत। कुमारसम्भवक आठम सर्ग मे अछि—

शूलिन: करतलयुगेन सा संनिरुद्ध्य नयने हृतांशुका।
तस्य पश्यति ललाटलोचने मोघयत्न विधुरा रहस्यभूत्॥

—कुमार० ८-७

विद्यापति एकरा ग्रहण कएल किन्तु विशेष लोकगम्य अधिक सुन्दर अथच प्रभविष्णु रूप मे—

"जखनें लेल हरि कंचुअ अछोड़ि ।
कत पर युगुति कएल अंग मोड़ि ॥
कर न मिझाए दूर जर दीप ।
लाज न मरए नारि कठजीव ॥"

राधा कृष्णक लोचन तँ नहि मुनलथिन्ह मुदा आओर अधिक मानवीय रीतिसँ जरैत दीपकेँ मिझाएबाक चेष्टा करए लगलीह जे कृष्ण हुनक नग्न देह नहि देखए पावथि । अथवा ओ सोपालम्भ सप्रगल्भ भए बजलीह—

बिहर से रहसि हेरने कोन काम
से नहि सहबहि हमर पराण ।
कहुँ नहि सुनल यहन परकार
करए बिलास दीप लए जार ॥

"रति करू, मुदा हमरा देखबाक कोन काज अछि । ई हमरा सहल नहि होएत । बाप रे, कतहु सुनल नहि थिक जे विलास करए तँ दीप बारिकेँ ।" चित्रक साम्य अछि मुदा मानव-स्पर्श विद्यापति मे कतेक बेसी अछि से सहृदय संवेद्य थिक ।

कालिदासक उपमा सँ विद्यापति कोना प्रत्यक्ष प्रेरणा लेल अछि से द्रष्टव्य थिक ।

तासां मुखैरासवगन्धगर्भैर्व्याप्तान्तराः सान्द्रकुतूहलानाम् ।
विलोलनेत्रै भ्रमरै गवाक्षाः सहस्रपत्राभरणा इवासन् ॥

विद्यापति कहैत छथि—

"भमर भरम मुख लोटए रे जनु कमल - तरास ।"

नववधू शयनगृह जाइत अछि तँ अनुभवक अभाव मे संभोगक भय सँ कँपैत अछि । कालिदास अत्यन्त सुन्दर उपमा देल अछि—

एष चारुमुखि योग्यतारया युज्यते तरलबिम्बया शशी ।
साध्वसादुपगतप्रकम्पया कन्ययेव नवदीक्षया वरः ॥

—कुमार० ८—७३

चन्द्रमाक समीप जाइत तारा थरथर कँपैत अछि जेना नवोढ़ा प्रथमहि संभोगक हेतु जाइत थरथर कँपैत हो ।

सुन्दरि चललिह पहु घर ना ॥
चहु दिस सखि सब कर धर ना ॥
जइतहु लागु परम डर ना ॥
जइसे ससि काँप राहु डर ना ॥

एतए चन्द्रमा ओ ताराक उपमा बदलिकें चन्द्रमा ओ राहुक उपमा कए देल गेल अछि मुदा व्यञ्जकता विशेष अछि।

अथवा जइसे डगमग नलिनिक नीर।
तइसे डगमग धनिक शरीर ॥

एकरो चित्रभाव ओएह अछि।

विद्यापति अपन परवर्ती कविकें अत्यधिक प्रभावित कएने छथि। सूरक सदृश महारथी विद्यापतिक प्रभावसँ मुक्त नहि छथि। एक दू गोट उदाहरण पर्याप्त होएत, विद्यापतिक पद अछि—

दुहु दिस दाह दहन जइसे दगधइ आकुल कीट परान।
ऐसन बल्लभ हेरि सुधामुखि कबि विद्यापति भान ॥

सूर उपमा रखलैन्हि

उभय उग्रदव दरु-कीट ज्यों शीतलताहि चहै।
सूरदास अति बिकट बिरहिनी कैसहु सुख न लहै ॥

पुन: विद्यापतिक पद अछि—"सारंग नयन बयन पुनि सारंग" इत्यादि जकर समकक्ष सूरक "सारंगनयन" कूट पद अछि। एना सूर विद्यापतिक अनेकानेक उपमान, उपमा, ओ रूपक ग्रहण कएल अछि जकर उल्लेख एतए प्रसंगान्तर होएत।

कृष्ण राधिकाकें प्रथमहि देखल तखन विद्यापतिक शब्द मे कृष्ण मे कामक संचार केहन कठिन ओ मारण भेल,

सजल परस खसु अम्बर रे देखल धनि देह।
नव जलधर तर संचर रे जनु दामिनि रेह ॥
आज देखल धनि जाइत रे मोहि उपजल रंग।
कनकलता जनु संचर रे महि निर अवलम्ब ॥

एहि मे उपमा बेजोड़ अछि, मर्म प्राणकें बिद्ध कए दैत अछि, भाव प्रत्येक तरुणक अपन भाव थिक। इएह सहजता विद्यापतिक काव्यक प्राण थिक। सूर सेहो प्रथम दर्शनक झाँकी एहिना देने छथि। मुदा एहि झाँकी मे तरुण वासनाक गन्ध नहि, किशोर कामुकताक विस्मय मात्र अछि।

औचकही देखी तहँ राधा नैन बिसाल भाल दिये रोली।
नीलबसन फरिआ कटि पहिरे बेनी रुचिर पीठ लकझोरी।
सूर श्याम देखत ही रीझे नैन नैन मिलि परी ठगोरी॥

दूनू चित्र महान् अछि, पूर्ण अछि। एक चिक युवतीक विदग्ध कएनिहार चित्र, दोसर चिक किशोरीक मनोहारी चित्र। विद्यापतिक उपमा "नव जलधर तर संचर रे" कालिदासक एक महान् उपमाकेँ मन पाड़ि दैत अछि।

नीलमेघाश्रिता विद्युत् स्फुरन्ती प्रतिभाति मे।
स्फुरन्ती रावणस्याङ्के वैदेहीव तपस्विनी॥

दूहुक आश्रय भिन्न अछि किन्तु उपमाक चित्र कतेक समान ओ प्रभावशाली अछि। तहिना विद्यापति ओ तुलसीदासहुक शृङ्गारक वर्णन मे अद्‌भुत साम्य अछि। विद्यापति "राधा-रूप निहारल माधव" क मुखसँ ई पंक्ति कहाओल—

जहँ जहँ पदयुग धरई—तहँ तहँ सरोरुह झरई॥

तुलसीक राम फुलवाड़ी मे सीताकेँ देखल ओ तखन—

जहँ बिलोक मृगशावकनयनी। मनु तहँ बरस कमलसितश्रेणी॥

उपमाक कोटि मे अन्तर अछि मुदा वर्ण्य एके अछि।

विद्यापतिक कामलुलिता, रूपगर्विता अथवा विरहविधुरा राधिका विश्व-साहित्य मे बेजोड़ छथि। जयदेवसँ साक्षात् प्रेरणा ग्रहण कए कृष्णकथाक वर्णन कएनिहार ई राजकवि जयदेवकेँ कतेको क्षेत्र मे पाछाँ छोड़ि बढ़ि गेलाह अछि। जेना, जयदेवहुक काव्य मे मात्र वासकसज्जा अभिसारिका मुग्धा नायिका, हुनक संभोगक नग्न उत्तान चित्र अथवा वियोगक प्राकृत चित्रकेँ देखि ओकरहु लोककाव्य मानबाक भावना मन मे उठैत अछि किन्तु जयदेव कृष्णक देवरूप सुरक्षित रखबाक बारंबार प्रयास कएलैन्हि अछि। विद्यापति एहन प्रयास नहि कएल अछि ओ तेँ विद्यापतिक गीत सहज ओ मानवीय भए गेल अछि। एहि दृष्टिसँ जे अन्तर वाल्मीकि ओ तुलसीदास मे छैन्हि सएह अन्तर विद्यापति ओ जयदेव मे छैन्हि। विद्यापतिक गीत मे विलासक वैदग्ध्य जयदेवहि सन छैन्हि मुदा राधिकाक अनुनय मे विद्यापति जयदेवकेँ पाछाँ छोड़ि आगाँ बढ़ि गेल छथि। नारी जखन पुरुषक छलसँ व्यथित होइत अछि तखन ओकर हृदयक जे उद्‌गार होइत छैक ताहि मे विद्यापतिक वैदग्ध्य अनुपम अछि, ओ बेजोड़ छथि। राधाक सखी कहैत अछि—"जकर एहन धनि कामकला सनि से किए करु व्यभिचार"। व्यथित राधा उत्तर दैत छथि "कुल-कामिनि छलौँ कुलटा

भए गेलौं कानुसँ प्रीति लगाई" । पुन: ओ कहैत छथि—

तिरिया जनम नहि देह हे विधाता
तिरिया जनम नहि देह ।
तिरिया जनम यदि दीन्ह हे विधाता
जनि कुपुरुससे नेह ।।

ई राधिका सामान्य मैथिल ललना प्रतीत होइत छथि। सूरदासक राधा जकाँ कृष्णक प्रति देव-भावक आभास हिनका नहि छैन्हि अथवा जयदेवक राधा जकाँ अथवा चण्डीदासक राधा जकाँ करुणा-मिश्रित आदरहुक भाव हिनका नहि छैन्हि। ई नारीक सहज गुण थिक जे पुरुष यदि व्यभिचार करैत अछि तँ काममयी रमणी सेहो अपन अधिकार चिन्हैत अछि, जनैत अछि। अन्तमे तँ राधा अपन सखी सँ एतेक धरि कहैत छथि जे—

सजनी दूर कर ओ परसंग ।
देवक दोस सनेह यदि उपजय लम्पट सन जनु होय ।

विद्यापतिक राधाकेँ कृष्णकेँ लम्पट धरि कहबामे कनेको संकोचक अनुभव नहि होइत छैन्हि ।

जयदेवक कोमल-कान्त पदावली मे लोक-रस तँ अछि किन्तु ओहि मे अलौकिकता सेहो अछि तथा भौतिक परिवेश कोनहु काल्पनिक धरातल सदृश लगैत अछि जतए कोनहु प्रकारक भय नहि छैक। किन्तु विद्यापतिक राधा ओ कृष्णक मिलन ओ वियोगक धरातल एही लोक मे अछि, ओहि परिवेश मे जे आइओ मिथिलाक गाम-गाम मे वर्तमान अछि। लोकजीवन जेना रसक उपभोग करैत अछि ओहिना विद्यापतिक राधा ओ कृष्ण सेहो करैत छथि ।

"रतिलम्पट कान्ह" बाटमे 'धनि' केँ जाइत देखैत छथि; हुनका मनमे "रंग" उपजैत छैन्हि तथा ओ ओहि "अपुरुब बाला" क संग छलबल सँ 'देवदेयासनि' बनि लाख परकारेँ भेँट करैत छथि। एना विद्यापतिक गीत मे मिथिलाक तात्कालिक लोक परिस्थितक चित्र स्पस्ट भए जाइत अछि। एहि गीत सब मे यमुनातट, वृन्दावन, वंशी-नाद, रास इत्यादि बड़ विरल भेटत। वयःसन्धिक बेला मे वर्तमान कन्याक "पहिल बदरि सम पुन नवरंग" रूपेँ उठैत कुच सँ लए "कनक-शम्भु" वा "कनक-कटोरा" भए पूर्ण उरोजवाली तरुणीक वर्णन अछि जे वासगृह मे पहिने तँ लाज सँ दीप मिझबए चाहैत छलि मुदा एतेक प्रगल्भ भए जाइत अछि जे "प्रति अङ्ग चुम्बन रस अनुमोदन

थरथर काँपए राधे''। ओ ढीठ भए विपरीत-रति रचैत अछि सेहो तेहन बेगरों जे—

''अम्बर खसल धराधर उलटल
धरनी डगमग डोले।
खरतर बेग समीरन संचर
चंचरिगण कर रोले''

रीतिकालक कविलोकनि एहि विपरीत रति केँ अपन काव्यक विषय बनाए एकरा मात्र कलुषित कए देल, घृणास्पद रूप सँ नग्न ओ जुगुप्सित बनाए देल। किन्तु विद्यापतिक ई विपरीत-रतिक चित्र विश्वकाव्यक अद्भुत निधि भेल अछि।

पिअमुख सुमुखि चूम तजि ओज।
चाँद अधोमुख पिबए सरोज॥

जयदेवक राधा सेहो एहि विदग्ध विलास मे अप्रतिम अछि—''रतिविपरीते तड़िदिव भीते घन इव तरलबलाके'' किन्तु विद्यापतिक चित्र देखू—

आकुल चिकुर बेढ़ल मुखशोभ
राहु कएल ससिमंडल लोभ
बिपरितरति कामिनि कर केल
× × ×
किंकिनि रटत नितम्बिनि छाज
मदन महारथ बाजन बाज
फूअल चिकुर भाल घस अङ्ग
जनु जामुन मिलु गंग तरंग॥

ई रूपशोभा एहन अश्लीलहु केँ मन्दिर मे गएबाक योग्य बनाय देलक अछि।

बिगलित चिकुर मिलित मुखमंडल
चान्द बेढ़ल घनमाला।
मनिमय कुण्डल स्रवन दुलित भेल
घाम तिलक बहि गेला।
सुन्दरि तव मुख मंगल दाता॥
किङ्किनि किनकिन कंकन कनकन
घन घन नूपुर बाजे
रति रन मदन पराभव मानल
जय जय डिमडिम बाजे॥

एहि गीत कें विद्यापतिक श्रेष्ठ पद मे अन्यतम मानए पड़त। उपमा अवज्ञार्थ नाद ध्वनि ओ संगीत सब दृष्टि सं ई एक गोट अभूतपूर्व रचना अछि। तुलसीदास सेहो एहिना नादसौन्दर्यक प्रयोग कएने छथि।

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि

कहत लखन सन राम हृदय गुनि

मानहु मदन दुन्दुभी दीन्हा·····

मुदा मनिमय कुंडल इत्यादिक अनुप्रास-योजना तथा किङ्किणि किनकिन इत्यादिक नाद-सौन्दर्य जाहि चित्र कें जाग्रत करैत अछि ओकर उपमा दुर्लभ अछि। एहनहि उपमा सबहिक बल पर विद्यापति कखनहु कालिदासक संग स्पर्द्धा करैत छथि।

ओ ई सब शक्ति विद्यापति कें एहि कारणें सम्प्राप्त भेल छैन्हि जे ओ देहक रूपक अकुण्ठित उपासक छथि। रूपक वर्णन मे विद्यापति कें अशेष सिद्धि भेटल छैन्हि। नारीक देह सौन्दर्य विद्यापति कें पूर्णरूपेण अभिभूत कएने छल। एही देहक रूप कें विद्यापति तेहन स्तर पर राखि देल जतए सं ओकरा नीचा उतारब सम्भव नहि अछि।

तोहर बदन सम चान्द होअए नहि

कैओ जतन विधि कैला।

कए बेरि काटि बनाओल फेरिकए

तैओ तुलित नहि भेला।

उपमा ओ उपमानक एहि परिवर्तित चित्र मे असम्बद्धता नहि अछि प्रत्युत रूप मन कें घेड़ि लैत अछि। राधाक रूप एहन अछि जे—

अपरुब के विहि आनि मिलाओल

छिति तल लावनि सार॥

ई उपमा 'छवि-गृह दीप-शिखा जनु बरई' सं अधिक महत्त्वपूर्ण अछि, बेसी भारी लगैत अछि।

माधव कि कहब सुन्दरि रूपे

कतेक जतन विहि आनि समारल देखल नयन सरूपे।

विद्यापतिक पद मे नारीक मानव रूप अछि। सद्यःस्नाताक रूपवर्णन करबाक काल सहजोक्ति काव्यक एहन संयम दुर्लभ अछि।

कामिनि करए सनाने ।
हेरइत हृदय हनए पँचबाने ।।
चिकुर गरए जलधारा ।
जनि शशिमुख डर रोअए अँधारा ।
तितल बसन तन लागू ।
मुनिहुक मानस मन्मथ जागू ।।

अथवा प्रति प्रभात मिथिलाक घाट सब पर दृश्य चित्र—

केस निघारइत बह जलधारा ।
चमर गरए जनु मोतिम हारा ।।

एहन राधा के देखि कान्ह कोना मूच्छित नहि होथु ।

ससन परस खसु अम्बर रे देखल धनि देह ।
नव जलधरतर संचर रे जनु दामिनि रेह ।।
सहजहि सुन्दर आनन रे भँउह सुरेखलि आँखि । इत्यादि

एतेक सहज भाव सँ सौन्दर्यक चित्र अंकित करबाक कतेक कवि कें शक्ति होएतैन्हि ।

पुरुषहुक रूप विद्यापति कें ओहने प्रिय छलैन्हि । कृष्ण कें देखि राधा कें लगैत छैन्हि—

कमलयुगल पर चांदक माला ।
तापर उपजल तरुण तमाला ।।

तैंहिं तँ राधाक आँखि बन्हाए जाइत छैन्हि—

मधुक मातल उड़ए न पारए
तइओ पसारए पाँखि ।।

ओ सखी सँ कहैत छथि—

सामर सुन्दर ए बाटें आएल
तें मोर लागल आँखी ।।

स्त्रीक सर्वावस्थाक चित्र विद्यापति अङ्कित कएल । रीतिकालीन काव्यक जन्मे भेल छैक विद्यापतिक काव्यक पूर्णता ओ चारुता सँ । वयःसन्धि सँ विरहिणी धरि युवती नारीक एहन रूप-चित्रण बिनु वैयक्तिक अनुभवें सम्भव नहि भए सकैत

अछि। मानव स्वभावक जेहन चित्र—बाला सँ युवती धरिक मध्यवर्ती समस्त। अवस्थाक—विद्यापति उतारल अछि से दुर्लभ अछि।

सैसव यौवन दुहु मिलि गेल स्रवनक पथ दुहु लोचन लेल।
मुकुर लइए अब करइ सिङार सखि पूछइ कइसे सुरत बिहार।
सुनइत रस कथा थापए चित्त जइसे कुरंगिनि सुनए संगीत।
खन-खन दसन छटाछट हास खने खने अधर आगे गहु बास।

मुदा विद्यापतिक जेहने विलक्षण अछि सम्भोगक चित्र, ओहने हृदयग्राही अछि विप्रलम्भक वर्णन। विरहक वेदना सँ विधुर राधाक चित्र विश्व साहित्य मे अतुलनीय लगैत अछि—

एकसरि ठाढ़ि कदमतर रे पथ हेरए मुरारी।
हरि बिनु हृदय दगध भेल रे झामर भेल सारी॥

ई केवल राधाक नहि, अनन्त कालसँ ठाढ़ि विरहिणी समग्र नारी जातिक चित्र थिक जकर व्याकुलताक व्याख्यामे शब्द समर्थ नहि अछि। पथ हेरैत राधाक हृदय दग्ध छैन्हि, साड़ी झामर भए गेल छैन्हि। एहि काल मे प्रवहमान समस्त विस्तार समाएल लगैत अछि। विरहक विराटताक एहि चित्र कें विद्यापतिक काव्यक गौरव मानए पड़त।

सामान्य नारी जकाँ राधा अनुनय करैत अछि—

माधव तोहें जनु जाह बिदेसे।
हमरो रंग रभए लए जएबह लएबह कोन सँदेसे॥

एहन काव्यवैदग्ध्य उपमा-उपमानक जाल मे व्यक्त नहि भए सकैत अछि। ई लोकवाणीक वेदना थिक।

कृष्ण सँ वियुक्ता राधा पर जे बितैत छैन्हि तकरा एहि उपमामे कवि केहन सशक्त अभिव्यक्ति देल अछि—

गोकुल चान चकोरलरे चोरी गेल चंदा।
बिछुड़ि चलल दुइ जोरी रे जिब दइ गेल धंधा॥

मिथिलाक साधारण नारी जकाँ राधा कागकें पुचकारैत अछि—

काक भाख निज भाखह रे पहु आओत मोरा।
खीर खाँड़ भोजन देब रे भरि कनक कटोरा॥

दुःखिता राधाक ई वचन—

सरसिज बिनु सर सर बिनु सरसिज की सरसिज बिनु सूरे।
जौवन बिनु तन तन बिनु जौवन की यौवन पिअ दूरे॥

एक दिशि तँ सहजता ओ ग्रामीण उपमाक पराकाष्ठा लाँघि जाइत अछि, दोसर दिशि ई काव्यक बेजोड़ उपमा भए गेल अछि। किन्तु परिणाम की भेल ?

लोचन धाए फेधाएल हरि नहि आएल रे।

बाट तकैत तकैत राधाक आँखि पथराए गेलैन्हि। हुनक पश्चात्ताप मे जे स्वर अछि से तकनहु प्रायः नहि भेटत !

'यौवन रूप अछल हुइ चारि—से देखि आदर कएल मुरारि।' आब राधा कें कृष्ण किएक पूछथु ?

चारू कात पेड़ि-पेड़ि जखन मेघ लगैत अछि तखन राधाक वेदना प्रचण्ड भए जाइत अछि। एहि पद कें संगीतकार मेघमलार मे बान्हि लाखो बेरि गओने होएताह—

सखि हे हमर दुखक नहि ओर।
ई भर बादर माह भादव सून मन्दिर मोर॥
झम्पि घन गरजन्ति सन्तत भुवन भर बरसन्तिआ।
तिमिर दिगभर घोर यामिनि अथिर बिजुरी पाँतिआ॥

एक दिशि एकर बिरहव्यञ्जना काव्यशक्तिक अतिक्रमण करैत अछि दोसर दिशि नाद सौन्दर्य ओ छन्दशक्ति पराकाष्ठा पर पहुँचि जाइत अछि। भाव ओ भाषा रूप ओ विषयक एहि रूपक नीरक्षीर सङ्गम सत्ये स्तुत्य अछि। बिरहक धरातल विद्यापतिक काव्य मे एही भूमि पर अछि, कोनहु कल्पित लोक मे नहि।

'के पतिया लए जाएत रे मोर प्रियतम पास।'

कृष्णसखा राधाक विरह-व्याकुलताक एहि रूपें वर्णन करैत अछि—

माधव देखल वियोगिनि बामे।
अधर न हास बिलास सखी संग अहनिशि जप तुअ नामे॥

उद्धव कहैत छथि—

"माधव कत परबोधव राधा।
हाहरि हाहरि कहितहि बेरि-बेरि।
अब कर जीव समाधा॥"

विद्यापतिक कृष्णो देवता नहि, सामान्य मनुष्य छथि। ओ राधा कें योग-ज्ञानक समाद नहि पठबैत छथिन्ह, सुधि लेबाक हेतु मित्र कें पठबैत छथिन्ह। हुनको व्यथा कवि कें नहि बिसरलैन्हि—

"रामा से किए बिसरल जाइ।"

हुनका मन पड़ैत छैन्हि जे जखन ओ बिदा होइत छलाह तखन राधा कोना मूच्छित भए गेल छलीह—

> कर धरि मथुरा अनुमति मङइत ततए पड़लि मुरुछाई।
> से बिनु राति दिवस नहि भावए ताहि रहए मन लागी ।।

ई अभिव्यक्ति देवत्व नहि जगबैत अछि, कृष्णक विवशताक प्रति पाठकक मनमे वेदना जगबैत अछि, प्रेमक पराकाष्ठाक चित्र विद्यापति ओहि गीत मे खीचल अछि जाहिमे राधा माधव माधव रटैत माधवक रंगमे रङि जाइत छथि।

> "अनुखन माधवमाधव रटइत राधा भेल मधाई।"

केहन अप्रतिम अछि रूपक ई अप्रतिम चित्र, वासनाक अतुल्य वर्णन।

राजा शिवसिंहक जखन परोक्ष भए जाइत अछि, हुनक ने कोनो पता लगैत अछि ने हुनक खब भेटैत अछि तखन कविक नयनमे बसल रूपक दर्पण विचूर्ण भए जाइत अछि। विद्यापति जेना शपथ ग्रहण करैत छथि "आब नहि लिखब शृंगार।" हुनक मनमे भक्ति जाग्रत होइत अछि ओ तखन मिथिलाक गली-गली मे भक्तिक तरंग आप्लावित भए जाइत अछि। रूपक क्षणभंगुरता पर कवि कें घोर निराशा होइत अछि।

> माधव हम परिणाम निराशा।
> तातल सैकत वारिबिन्दुसम सुत मित रमनि समाज।
> तोहे बिसरि मन ताहि समरपल मोहे मन होव कोन काज ।।

इत्यादि शब्द मे एना स्पष्ट रूप सँ आत्मस्वीकृति करबाक साहस एहने कोनहु कवि कें होएत। अपना कें जखन ओ भगवानक चरणमे समर्पित कएल तँ सेहो ओही तल्लीनता सँ।

> "तोहें जगतारन दीन दयामय अतए तोहर बिसवासा।"

ओ एही विश्वासक बल पर महाकवि दर्शन धर्म भक्ति ओ पूजाक गंगा अपन नचारीक गीत मे बहाए देल। महादेवक ई नचारी—

> अमिअ चुमिअ महि खसत बघम्बर जागत हे।
> होएत बघम्बर बाघ बसहा धरि खाएत हे।
> जटा सञो छलकत गंग भूमि भरि पाटत हे।
> होएत सहस्रमुख धार समेटलो ने जाएत हे।
> मुण्डमाल टुटि खसत मसानी जागत हे।
> तोहें गौरा जएब पड़ाइ नाच के देखत हे।

शिवक विराट रूपक अतुल्य वन्दन थिक। देह कें जड़ीभूत कएनिहार जेहन वर्णन गीता मे कृष्णक कएल गेल अछि ताही प्रकारक एहू विराटत्वक वर्णन अछि। रूपक आराधक शिव यदि जागथि तँ रूपमयी स्त्री ओहि विराटत्व कें सह्य नहि कए सकति, भागि जाइति, एहि अभिव्यञ्जना मे जीवनक सत्य सहस्र मुखर अछि।

अतः विद्यापतिक काव्यवैदग्ध्यक एहि संक्षिप्त समीक्षाक उत्तर किछु निर्णय पर पहुँचब सुगम अछि। मानए पड़त जे विदग्ध विलास सँ विद्यापतिक काव्य परिपूर्ण अछि; रूप शृंगार, देहक भोग, लोक जीवन मे स्त्री-पुरुषक कामद ग्राह्य-अग्राह्य आचार, विरह, विरहक वेदना ओ भोगक दैवत्व—विद्यापति कोनहु क्षेत्र कें नहि छोड़ल, जीवनक पूर्णताक ओ गीतकार छलाह। ठाम-ठाम कालिदासहुक वैदग्ध्य कें छूबाक क्षमता हिनक वैदग्ध्य छल।

टाल्स्टाय एक गोट सुन्दर प्रतिमान देने छथि, समयक नयन। हम कहबाक हेतु विवश छी जे विद्यापति कें इएह समयक नयन प्राप्त छल। तँहि हिनक कोनहु पदमे ओकर वर्ण्य विषय किछु हो अस्वाभाविकता कतहु नहि अछि। देखू, अनमेल विवाह जकर प्रचार मिथिलामे कहिओ बन्द नहि भेल—पैघ तरुणी कें छोट पति—विद्यापति तकरहु नहि छोड़ल—'पिआ मोर बालक मोञे तरुणी' प्रभृति पदमे एकरे व्यञ्जना अछि। विद्यापतिक अप्रस्तुत विधान मन कें उद्दीप्त करैत अछि, पुरानो कथा कें रमणीय ढंग सँ कहि विस्मित कए देबाक जेना हुनका वर प्राप्त रहए। यौवनक प्रति विद्यापति कें उद्दाम भोगलालसा छैन्हि, रूपक प्रति असाधारण आसक्ति छैन्हि, ओ सब किछु कें समाहारक शब्द मे कहबा मे इएह कहए पड़त जे विद्यापति कें सर्वाङ्गीण काव्य दृष्टि प्राप्त छल, जीवनक कोनहु क्षेत्र कें ओ अस्पृष्ट नहि छोड़ल ओ सब क्षेत्रमे हुनक कविता "जय जय डिमडिम बाजे"क ध्वनि उपस्थित करैत अछि।

०

विद्यापतिक श्रृङ्गारिक कविता

प्रो० श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र

कविता वा काव्य हमरा लोकनि के आनन्द प्रदान करैछ। कारण की? कारण ई जे ओ हमरा लोकनि के मधुर प्रतीत होइछ ओ ओकर माधुर्य हमर अन्तर मे जाहि वस्तु के जागृत करैछ ओ वस्तु थिक काव्यक रस। कवि काव्यक रचना करैत छथि, ओहि मे चन्द्रमा, ज्योत्स्ना, पुलकित यामिनी, मलयानिल, भ्रमर गुञ्जन, नायक नायिकाक राग-विराग, अनुराग सब किछु रहैछ किन्तु काव्य राज्य मे प्रवेश करबाक प्रधान द्वार, काव्य उद्यानक शतदल कमल, काव्यक जीवनी-शक्ति मलय पवन नहि, भ्रमर गुञ्जन नहि, नायक-नायिकाक रति नहि ओ थिक रस। रस केकरा कहैछ? "रसो वै सः।" परमात्मा रस स्वरूप छथि। रस के जे बुझए सएह रसिक, सब रसिक नहि। सहस्त्र सहस्त्र जन मे क्वचिते रसिक भेटताह। नौ प्रकारक रस मे आदि रस सब मे श्रेष्ठ। कारण, एहि मे मनुष्यक परिपूर्ण मनुष्यत्वक विकास, एहि सँ प्रेम, प्रेम सँ भक्ति आ भक्ति सँ मोक्षक साधन।

काम की थिक? मनुष्यक सहजात संस्कार। फूलक कोढ़ीक अप्रस्फुटित दलक बन्धन मे काम आबद्ध रहैछ। असतर्क मुहूर्त्त मे वसन्तक मृदु दक्षिण पवन जखन ओकरा जगा देलक तखन ओ आँखि खोलिकें देखलक—पृथ्वीक वक्षस्थल पर पुलक समारोह—कन्दर्पक पुष्प धनुष मे शिञ्जनीक मंजु टंकारक ध्वनि, वायुक द्वारा कानक समीप आबि कए किछ कहलकैक—"जागू हे जागू, यौवन आबि गेल।" तखन हृदय मे प्रचण्ड बुभुक्षा, नयन युगल मे तरल उन्मादनाक अञ्जन। यौवनक प्रथम उन्मेषक संगे-संगे तरुण-तरुणी मे अपनाकें एक दोसरक भुजलता मे निबिड़ रूप मे आबद्ध भए जएबाक इच्छा, भुजलताक कठिन बन्धन मे, एहि आलिंगन मे मुक्ता-मालाक व्यवधानो दुःसह।

कवि के स्रष्टा कहल गेल अछि दोसर प्रजापति थिकाह। परञ्च ई प्रजा-पति पंचभूत द्वारा नहि भाषा द्वारा सृष्टि करैत छथि। कवि कें अपन कविकर्म लेल लौकिक प्रयोजनक भाषा कें एक नव रूप देबए पड़ैछ। कवि अपन प्रतिभाक कौशल सँ शब्दक चयन मे, रचना एवं ग्रन्थ मे, भाषा मे जे सुर तथा व्यञ्जना लबैछ ओहि सँ भाषा कें वाणी रूप प्राप्त होइछ।

मिथिलाक भूमि, मिथिलाक जलवायु, मिथिलाक संस्कृति मे एक चिरन्तन सत्य निहित अछि। इएह सत्य अपना कें नव-नव रूप मे, नव-नव भाव मे प्रकाशित

करैत अछि। मिथिलाक साहित्य, दर्शन, काव्य, धर्म-कर्म, समाज, लोकरीति मे मिथिलाक शस्य श्यामल खेत मे, मधुगन्धवाही मुकुलित आम्रकानन मे, ग्राम्य कुटीर मे, मन्दिरक सान्ध्य आरती मे, तुलसी दल तथा गङ्गाजल मे जे सत्य अपना केँ विघोषित करैत ओकरे प्राण तरङ्ग एक दिन अकस्मात एक अपूर्व सहस्र दल कमलक समान मिथिलाक गीत काव्य मे प्रस्फुटित भए उठल छल। ओहि मे प्राणक संग, मर्मक संग, भाषा एवं भावक संग, धर्म-कर्मक संग, जीवनक बाह्य एवं अन्तरक संग, एक प्राण स्पर्शी मिलन छल। एहि महामिलनक हेतु एक दिन मिथिलाक प्राण विभोर भए गेल छल। ओहि महामन्दिर मे जे पूजा नियमित रूपेँ चलि रहल अछि तकरे पुरोधा हमर महाकवि विद्यापति छलाह।

एक दिशि बौद्ध धर्म आहि काल मे नास्तिकता एवं वितण्डावाद मे परिणत भए रहल छल तथा दोसर दिशि वेदान्तक ब्रह्मवाद तथा वैदिक महायज्ञयागादि अनुष्ठान साधारण जनक निमित्त केवल शुष्क तर्क जाल प्रतीत होइत छल तथा समाज मे अकर्मण्यता जनित नैराश्यक कारण जीवनक प्रति मिथ्या वैराग्यक भावना पसरल छल, ओहि समय मे बंगाल मे चण्डीदास ओ बिहार मे विद्यापतिक जन्म भेल छल। ई कवि लोकनि जन मनक सम्मुख एक प्राणमय आध्यात्मिकताक आदर्श रखलन्हि जाहि मे आध्यात्मिकताक संग-संग जीवनक सुन्दर एवं मधुर पक्षक समावेश छलैक। ई कवि लोकनि सौन्दर्य एवं माधुर्यक भावना मे जनता केँ तल्लीन कए देलैन्हि। एहि परिस्थिति मे विद्यापतिक जन्म भेल छल ओ हुनक रसाप्लुत प्रेम-गीत निराश जनताक हृदय मे आशाक, जीवनक प्रति अनुरागक संचार कए देलक। विद्यापतिक गीतक मधुर झंकार केँ सुनि कए अमृत सागरक मीनक समान मिथिलावासीक चित्त ओहि काव्य रसामृत मे निमग्न भए गेल। कवि आदि रसक जे सरस मन्दाकिनी बहओलन्हि ओहि मे लोकक चित्त एहि प्रकारेँ उवद्रुत करए लागल जे विषय-भोगक जगत केँ छोड़ि केँ अनु अतीन्द्रिय रसानुभूतिक कोनो अमृतमय लोक मे पहुँचि गेल।

विद्यापति अपन गीतिकाव्य मे मधुर भावापन्न भक्तिभावक प्रतिपादन कएल अछि। एकर सुसंस्कृत सूक्ष्म रूप अछि आत्मा वा परमात्माक मिलन ओ लोकप्रिय स्थूल रूप अछि राधाकृष्णक प्रेम मिलन। मानव प्राणक अन्तरभूमिक संगे विश्व प्राणक मिलनभूमिक जे अपूर्व दृश्य अछि, प्रत्यक्ष इन्द्रियक संग अतीन्द्रिय महामिलनक जे रस अछि, ओएह श्रेष्ठ कल्पना कलाक राज्य थिक। संसार एवं परमार्थक मिलन सम्पूर्ण जीवन थिक एवं एहि महामिलनक प्रधान दूत प्रेम अछि। एक मात्र प्रेमहि एहि मिलनक महामंत्र।

वैष्णव कवि लोकनि प्रेमक भाषा मे एक अपार्थिव नित्य प्रेमक वर्णन कएल अछि। वासना जन्य भोग क्षुधाक संकेत करैत एक अनन्त विराट्

क्षुधा कें रूपायित कएल अछि—भोगक रक्त मांस सँ भोगातीतक दिव्य मूर्त्ति अङ्कित कैलन्हि अछि; ससीमक आसन पर असीम के प्रतिष्ठित कैलन्हि अछि। वैष्णव कवि लोकनि मे दिव्य प्रेमक एक स्निग्धोज्ज्वल दीप शिखा जे आरतीक घृत प्रदीप जकाँ कृष्ण प्रेमक अग्नि संस्पर्श सँ प्रज्वलित भए उठैछ। ओहि मे धुआँ ओ कालिमा नहि; वेदनातुर मानव हृदयक स्खलन एवं पतनक भय नहि। भोगातीतक संगे मनुष्य कें आत्माक जे एक नित्य सम्बन्ध अछि, वएह सम्बन्ध स्थूल भोगक भाषा मे अभिव्यक्त भेल अछि। प्राकृत भोग केवल वाणीएटा धरि, अप्राकृतक भोगे वास्तविक। जे प्रकृत रसिक, अध्यात्म जगताक साहसिक आत्मा Adventurous souls, जिनक "श्री हरिस्मरणे सरसं मनः" वैह साधनामय जीवन मे रासबिहारीक रास लीलाक अनुकरण कए सकैत छथि। कविजयदेव अपनाकें 'पद्मावती रमण' कहने छथि। चण्डीदासक जीवन-नाटकक नायिकारजकिनीरामी-विद्यापतिक कविताक उत्स लखिमा देवी। ई सब भगवानक प्रेम सँ भरल रसिक महाजन छलाह—Poets of the Infinite.

जयदेवक राधा कृष्णक प्रेममे भावविह्वला, चंडीदासक राधा प्रेममे मुग्धा, विद्यापतिक राधा विलास कलामयी, किशोरी। यौवनक इषद् उद्गम भेल छैन्हि। वयः सन्धिक अवस्था। शैशव, यौवनक एक संगहि समागम आँखि कान पर्यन्त पहुँचि कें अनु यौवन आगमनक वार्त्ता सुना रहल अछि। वचन मे चातुर्य, अधर पर हास्यक मंद रेखा। वयःसन्धिक अपूर्व वर्णन—

शैशव यौवन दुहु मिलि गेल
श्रवणक पथ दुहु लोचन लेल
वचनक चातुरी लहु-लहु हास,
धरनीय चाँद करत प्रकाश
शैशव यौवन दरसन भेल,
दुहु दल दन्द परि गेल।
कबहुँ बाँधए कच कबहुँ बिथारि,
कबहुँ झाँपय अंग कबहुँ उघारि।
अतिथिर नयन अथिर किछु भेल,
उरज-उदय थल लालिम देल।
चरण चंचल चित चंचल भान,
जागल मनसिज मुदित नयान।

"The bossom swelled lightly with its full youth. The countenance was such as might select some artist that his

skill should never die. Imaging forth such perfect beauty."

विद्यापतिक राधा वास्तवमे एक अपूर्व सौन्दर्य—सृष्टि, कालिदासक शब्दमे "सृष्टिराद्यै व धातुः।" विधाताक प्रथम सौन्दर्य-सृष्टि। कृष्ण एहिरूप पर मुग्ध छथि। रूप-माधुरी कें निहारिते रहि जाइत छथि। आधा आँचर खसल अछि, हँसी आधा मुँह धरि आबिकें रहि गेल अछि, आधा आँखि धरि आनन्द तरंग आबिकें रुद्ध भए गेल अछि, अर्थात् भिन्न उरोज पर दृष्टि निबद्ध भए गेल अछि, मोतीक समान दसन पंक्ति झलकैत अछि जाहि पर प्रवाल तुल्य अधर मिलि गेल अछि :—

आध आँचर खसि आध बदन हँसि आधहि नयन तरंग।
आध उरज हरि आध आँचर भरि तब धरि दगधे अनंग।
दसन मुकता पाँति अधर मिलायत मृदु कहतिहि भाषा।

विद्यापतिक कविता हमरालोकनि कें प्रेम राज्य मे विचरण करबैछ। प्राणक अतलस्पर्शी रूप-सागर मे डुबकी लगा कें ओहि सागरक मनोरम सौन्दर्यक दर्शन करबैछ। मुदा प्रेमक जे ई अपूर्व सौन्दर्य एहिमे केवल नर-नारीक यौन मिलनहि धरि नहि। विद्यापतिक राधा समस्त आराधिका गणक type symbol प्रतीक। प्रेम-लीला मे भगवान रमण, भक्त रमणी। भक्त ओ भगवानक ई प्रेम सम्बन्ध-प्रवहमान प्रेमक स्रोत—"Rippling tide of love which flows secretly from God into the soul and draws it mightily back to its source."

"तोहे जनमि पुन तोहे समाओत सागर लहरि समाना"

समुद्रक लहरि समुद्र सँ उत्थित भए कें पुनः समुद्र मे लीन भए जाइत अछि ओहिना प्रेमक उत्स जे परमात्मा हुनका सँ प्रेम प्रच्छन्न भाव सँ प्रवहमान भय कें जीवात्मा मे प्रवेश करैत अछि ओ अपना दिसि प्रबल रूपें आकृष्ट करैछ। आध्यात्मिक प्रेम राज्यक ई एक विलक्षण रहस्य थिक।

सब प्रकारक बाधाक रहितो राधाक अन्तःशलिला प्रेम—निर्झरिणी अबाध गति सँ प्रवाहित होइत अछि—राधा सुकुमारी—कुसुम पल्लव तनु-घनान्धकार मे साँपके फण पर लात राखि कें—'पंथ विजन अतिघोर'—संकेत स्थान मे अभिसारक हेतु चललीह। लाज नहि, भय नहि। यदि प्रियतमक संग एकात्मक भाव सँ मिलनक आकांक्षा तखन प्रिया कें निरावरण होबहि पड़तैन्हि—As long as the soul has not throw of all her veils, however thin she is unable to see God." श्री मद्भागवत मे श्री कृष्ण उधव सँ कहैत छथि—

"तामन्मनस्का मत्प्राणा मदर्थे त्यक्त-दैहिकाः।
ये त्यक्त-लोक-धर्माश्च मदर्थे तान्बिभर्म्यहम ॥"

गोपीगण गृह-परिवार, लोक धर्म सब किछु त्यागि कें हमरा मे मन, प्राण समर्पण कए एकात्मिका भए गेलीह अछि।

विद्यापति अपन कविता मे प्रेम देवताक आराधना कएल अछि। हिनक कविता रस पूर्ण परिपक्व फलक तुल्य, जाहिमे छिलको अछि, आँठीओ अछि ओ जेकर रस मे अनुपम माधुर्य अछि। जीवनक सुख-दुःखक मध्य प्राणक जे साक्षात्कार होइछ ओ प्राणक साक्षात्कारक संग-संग हमरा लोकनिक हृदय एवं मनमे जे रसोच्छ्वास उद्वेलित भए जाइछ ओकरे आभास हमरा विद्यापतिक कविता मे भेटैछ। हिनक कवितामे इन्द्रिय भोग, रूप, रस-गंधक अनुपम सामञ्जस्य एवं मिलन। सुकुमार शब्द चयन एवं कल्पनाक चमत्कार मे भाषाक कोनो कवि हिनक समता भरिसके कए सकैछ। हिनक अनुपम कल्पना मन कें मुग्ध कए दैछ—

"जब गोधूलि समय बेली
धनि मन्दिर बाहर भेली
नव जलधर बिजुरि रेहा
दन्द पसारिअ गेली।
धनि अलप बयसि बाला
जनि गाँथलि पुहब माला।"

गोधूलिक समय मे जखन राधा घर सँ बाहर भेलीह अपना पाछू मे एक रेखा जकाँ छोड़ैत अएलीह जनु नवीन मेघ मे विद्युत रेखा। नवीन फूलक माला सन राधा। अल्प वयस छलीह। गोधूलि बेला मेघक पृष्ठभूमि आ चलनिहार प्रकाश—अंधकारमे चलनिहार प्रकाश, प्रकाश एवं अंधकार मे द्वन्द्व। ई चलचित्र कालिदासक उपमाक स्मरण करा दैछ—

"सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ"　　　—रघुवंश
"सञ्चारिणी पल्लविनीलतेव।"　　　—कुमारसंभव

राधाक अलौकिक रूप लावण्यक, हुनक लज्जारुण सुकुमार भावक जेहेन चमत्कार पूर्ण वर्णन विद्यापति कएल अछि तथा ओहि वनक चतुर्दिक उपमाक जे अरण्य ठार कए देलैन्हि अछि ओ पाठकक मन कें एक अनिर्वचनीय आनन्द सागर मे निमग्न कए दैछ। छन्दक प्रवाह एवं सङ्गीतक लय संग-संग झंकृत भए श्रोता कें सम्मोहित कए दैछ।

विद्यापति विरह एवं संगम दुनूक वर्णन अनेक पक्ष मे कएल अछि। नायक श्री कृष्ण नायिका राधा के शयनावस्था मे छोड़ि के चलि जाइत छथि। विरह वेदना स व्याकुल नायिका अपन दुःख व्यक्त करैत कहैत छथि—

एक सयन सखि सूतल रे
आछल बालम निसि मोर
न जानल कति खन तेजि गेल रे
बिछुरल चकेवा जोर

× × ×

मधु निशा वेली धनि नेलि नीन्द।
पुछिव न गेले मोहि निठुर गोबिन्द॥
जाए खने दिलह आलिङ्गन गाढ़।
जनि जुयार चरु से सेल पाढ़॥

सम्पूर्ण प्रकृति मे आनन्दोल्लास केवल विरहिणी राधाक हृदय मे शून्यताक हाहाकार। एहि विरहक उपयोगिता की? भगवान भक्त के विरहानल मे किएक दग्ध करैत छथि? विरहा-ताप स उज्ज्वल करबाक हेतु। एहि रूप, रस, गन्ध, स्पर्श भरल पृथ्वीक मध्य रहि के निखिलक विरहस प्रेमिकाक आत्मा क्रन्दन कए उठैछ। तखन प्रेमिकाक अन्तहृदय चीत्कार कए उठैछ—

"सखि हे हमर दुखक नहि ओर
ई भर बादर माह भादर सून मन्दिर मोर"

एहि अवस्था मे राधिका विरहिणीक मन मे ई विचार उठैछ जे प्रियतम छोड़ि के चलि गेलाह। हमर भाग्यक दोष थिक: "हमर अभाग हुनक नहि दोस।"

"पिया बिसरल सखि पुरुब पिरीति
जखन कपाल बाम सम विपरीत
मरमक वेदन मरमहि जान
आनक दुःख आन नहि जान।"

"In the dark night of the soul comes Krishna to Radha. In the midst of a psychic storm (विरह) mercenary love is for ever disestablished and the new state of pure love is abruptly established". विरह क दावानल मे वासना जन्य प्रेमक सदा लेल अन्त ओ विशुद्ध प्रेम सुस्थित। "सङ्गम विरह विकल्पे वरमिह विरहः।"

विरहक पश्चात् मिलन ओ ओहि मिलन मे महामिलनक हेतु असीम व्याकुलता । राधाक व्याकुलता विद्यापतिक निम्न सुप्रसिद्ध पद मे सम्यक् रूप सँ व्यक्त भेल अछि—

सखि कि पूछसि अनुभव मोय
सोइ पीरिति अनुराग बखानिते तिल तिल नूतन होय
जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल
सेहो मधुर बोल श्रवणहि सुनल श्रुति पथे परसन गेल
कत मधु-यामिनी रभसे गमायल न बुझल कैसन केलि
लाख-लाख युग हिय-हिय राखल तइयो हिया जुड़ल न गेल ।

ई थीक चिर नूतन भाव मे रसोल्लासक विषय थिक । जन्मे सँ हम रूपक मध्य नयन केँ डुबा केँ रखने छी, तथापि ओहि रूपक सीमा नहि भेटल । लाख-लाख वर्ष धरि हृदय मे राखिओ केँ ओहि प्रियतम केँ अपन हृदय मे तल्लीन नहि कए सकलीह । हृदय जुड़ायल नहि, नयनक रूप तृष्णा नहि शान्त भेल ई थीक मिलन थिक जाहि मे भक्तक मुँह सँ वाणी बहराइछ—"I am my Beloved and my Beloved is mine". एहि अवस्था केँ मिस्टिक (रहस्यवादी) लोकनिक भाषा मे 'amalgamation with God', 'immersion in the Absolute' आख्या देल गेल अछि । स्फुलिङ्ग वह्नि ज्वाला मे लीन भए गेल, बिन्दु सागर मे समा गेल । महामिलन मे भक्त-भगवानक भेद नहि रहि जाइछ । अर्थात् व्यक्तित्वक आत्यन्तिक विलोप भए जाइछ : 'It is the annihiliation of selfhood—the doing away of separateness'. राम-लीलाक प्रसंग मे भागवतकार लिखैत छथि—

"इत्युन्मत्त वचो गोप्यः कृष्णान्वेषणकातराः ।
लीला भगवतस्तास्ता ह्यनुच क्रुस्तदात्मिकाः ॥"

श्री कृष्ण जखन रास मण्डल सँ अन्तर्धान कए गेलाह् तखन गोपी गण हुनक ध्यान मे तन्मय अपना केँ श्री कृष्ण सँ अभिन्न बुझि केँ हुनक लीला क अनुकरण करए लगलीह ।

"Love is that blame which when it is kindled devours every thing except the Beloved".

एक उर्दू कविक उक्ति अछि : "बहुत ढूँढ़ा तुझे फिर भी न पाया । अगर पाया पता अपना न पाया ।" विद्यापति एहि भाव केँ निम्न प्रकारेँ वर्णन कएल अछि—

"अनुखन माधव माधव सुमरइत
सुन्दरि भेलि मधाई
ओ निज भाव सुभावहि बिसरल
अपने गुण लुबधाई
माधव अपरूप तोहर सिनेह ।"

एहि प्रकार विद्यापतिक सम्पूर्ण कविता मधुर रस सँ प्लावित । एहि मधुर रति केँ भक्ति साहित्य मे सर्वोच्च स्थान । मानवीय समस्त सम्बन्ध मे पति-पत्नीक सम्बन्ध सब सँ मधुर । एहि आनन्द मे ओहि दिव्य आनन्दक किञ्चित आभास । दार्शनिक ओपेन्सकीक कथन अछि—Love 'sex' these are but a foretaste of mystical sensations–consequently in true mysticism, there is no sacrifice of feeling. रहस्यानुभूति मे काम भावना क अवदमन नहि, उन्नयन ।

विद्यापतिक शृङ्गारिक कविता मे प्रचुर प्रेम-वर्णन भेलो सन्ता ओकरा हम कामुकता नहि कहि सकैत छी । दुनू मे ओतबे अन्तर अछि जतबा अन्तर नयनाभिराम कुसुम प्रफुल्लित वासन्ती रजनी मे नवीना युवतीक मोहन कटाक्ष चालित अङ्ग भङ्गी, ओकर मृदु मधुर हास्य जे मन मे एक उग्र लालसा उत्पन्न करैछ । दोसर दिशि जखन गोधूलि वेलाक आधा आलोक एवं आधा अन्धकार मे तुलसी चौराक समीप सन्ध्या कालक दीप लए केँ लज्जानम्रमुखी गृहस्थ वधुक मोहन चित्र हमर हृदयक समस्त चपल वासना केँ नष्ट कए दैछ ।

विद्यापतिक अजस्र गीत माधुरीक सुधा-धारा मे एक समय मे समस्त मिथिला निमज्जित भए गेल छल । समाज-जीवन मे एहि कविताक प्राण प्रतिष्ठा भेल छल । परन्तु, हाय, ओ प्राणोन्मादनकारी सुधा स्रोत क्रमशः शुष्क होमय लागल । विधर्मीक आक्रमण सँ आत्मरक्षा करबाक हेतु मिथिला अपन चतुर्दिक आचार-व्यवहार केँ पाषाण-प्राचीर ठाढ़ कए देलक । शुष्क कर्मकाण्ड एवं बाह्याडम्बर । भूत-प्रेत, ओझा, डाईनीक पूजा । कविता-बल्लरी रस सिञ्चनक अभाव मे मुरझाय लागल ओ चिर वसन्तक एहि मैथिल कोकिलक पीयूष वर्षिणी वाणी केँ हम बिसरि गेलहुँ ।

O

विद्यापतिक विशेषता

प्रो० श्री अमरनाथ ठाकुर

लेखक प्रारम्भिहि मे सूचित करब उचित हैत जे साहित्यक पंडित लोकनि एखन धरि विद्यापतिक उचित मूल्यांकन नहि कैने छथि। हिन्दी साहित्यक विषय मे लिखल गेल एकटा विद्वत्तापूर्ण सर्वेक्षण-निबन्ध मे विद्यापतिक संबंध मे हमरा मात्र-औपचारिक सूचना भेटल अछि। एहि सर्वेक्षण मे एतबे सूचित भेल अछि, जे विद्यापति अपभ्रंश मे रचना केनिहार एकटा आदिकालीन कवि छलाह, तथापि ओ कतिपय मनोहारी, मधुमय गीतक रचना कैलनि। अधिकांश साहित्यालोचक विद्यापतिक सम्बन्ध मे एके प्रकारक निश्चित अभिमतक पुनरावृत्ति कय संतुष्ट भए जाइत छथि आ हुनक ऐतिहासिक महत्त्व सँ ओतप्रोत होइत, हुनक आन्तरिक महानता केँ पूर्णतः बिसरि जाइत छथि। बुझना जाइत अछि, विद्यापतिक रचनावलीक संपूर्ण शाता केँ 'एकत्र भावेँ' मूल्यांकन करबाक कोनो विशद चेष्टा एखन धरि नहि कैल गेल अछि। विद्यापतिक अधिकांश आलोचक संभवतः ध्यान मे नहि रखैत छथि जे तिरहुत गीत हुनक महान उपलब्धि अछि, मुदा एहि उपलब्धिक अवतारण विद्यापति काव्य मे आनो ठाम आनो प्रकारक उपलब्धि सभक वैभवशाली संदर्भ मे होइत अछि, एहि संदर्भ सँ विच्छिन्न रूपेँ नहि।

अनेक दृष्टिएँ विद्यापति अभूतपूर्व अतुल्य आ कवि छलाह। देशक विभिन्न प्रदेश आ विभिन्न भाषा साहित्य हुनका प्रति दावी !करैत अछि। हुनक गीतात्मक काव्यक रसाप्लावित मुख्यधारा साहित्यक अनेक शाखा प्रशाखा मे प्रवाहित भेल अछि आ एहि उपशाखादि केँ एहि सीमा धरि आप्लावित कैने अछि जे काल-क्रम कोनो-कोनो उपशाखा मुख्य धारा सँ अधिक महत्वपूर्ण भए गेल अछि।

हमरा ई तथ्य अधिक महत्त्वपूर्ण बुझना जाइत अछि जे विद्यापतिक गीतमाला विगत पाँच शताब्दी सँ एकटा संपूर्ण जन-समुदायक जीवन मे एहि तरहेँ व्याप्त अछि जेना कोनो समय मे विश्वक आन कोनो देश मे कोनो कविक जन-जीवन मे एतेक व्यापक रूपेँ अन्तः प्रवेश नहि पओने अछि। बाइबिल आ रामायण अहिना अथवा अहू सँ वृहत रूपेँ जन-जीवन मे प्रभावित कैने छल, मुदा, ई दुनू मुख्यतः धर्म ग्रन्थ थीक। बंगालक महान् आधुनिक कवि, रवीन्द्रनाथ अगस्त प्रभाक बंगला साहित्य आ बंगाली संस्कृति पर छलनि। रवीन्द्र-गीत आ रवीन्द्र-संगीतक स्वर लहरी सँ बंगाली

समाज मुग्ध, विमोहित भए गेल छल । मुदा, रवीन्द्रनाथ ओहि प्रकारेँ कहियो बँगला भाषी समाजक आन्तरिकता नहि पाबि सकलाह, जेना विद्यापति मैथिली भाषी समाजक एलंत्री मे जीवन, प्राण मे, संगीत जकाँ रसि-बसि गेल छथि ।

एहि निबंधक छोट परिधि मे विद्यापतिक बहुमुखी प्रतिभा आ बहुस्तरीय उपलब्धि सभक प्रति न्याय करब संभव नहि अछि । अस्तु अंग्रेजी काव्यक, पाठकक रूप मे, हमरा विद्यापति काव्यक जे पत्र सभ सँ अधिक महत्वपूर्ण परिलक्षित भेल अछि, तकरो चर्चा धरि हम एहि निबंध केँ सीमाबद्ध रखैत छी ।

विद्यापति पदावली लिखबाक लेल देसिल भाषा के प्रश्रय देलनि आ एहि ग्रामीण, घरौआ भाषा मे एहेन मनोमुग्धकारी संगीतक उद्‌घाटन कैलनि जकर प्रतिफलेँ एहि भाषा केँ मात्र साहित्य मंच पर स्थाने टा नहि भेटल, अपितु ई भाषा शास्त्रीय, संस्कृत भाषाक प्रधान प्रतिस्पर्द्धी बनि गेल । ई उचित छल जे विद्यापति केँ अभिनव जयदेवक उपाधि भेटल छलनि ।

अंग्रेजी काव्यधारा मे विद्यापतिक समानान्तर समानधर्मी कवि छलाह स्पेन्सर । स्पेन्सर सेहो देसी भाषा मे मधु शृंगार काव्यक रचना केलनि । मुदा, स्पेन्सर अपन कविता मे प्राचीनता आ प्राचीन काव्य पद्धतिक आश्रय लैत छथि, जखन कि विद्यापतिक भाषा एखनहुँ आधुनिक अछि, अपन शिल्प आ अपन भावधारा मे आधुनिकता सँ मंडित अछि । अत्यन्त कोमल, मधुर आ रसपरिपाकपूर्ण होइतो विद्यापति मे स्थानीय बोलीक नमयता आ मुहावरे दारीक प्रधानता अछि। गत्यात्मकता एवं सहजता स्पष्टताक कारणे विद्यापतिक कतेको पंक्ति, केतेको पद जनसाधारणक दैनन्दिन प्रयोग भाषा मे स्वीकृत भए गेल अछि,

उदाहरणार्थ :—

(१) बड़ भूखल नहि दुहु करे खाय ।
(२) लाजे मरे न नारि कठ जीव ।
(३) अलपओ अवसर दान अमोल ।
(४) आगि जारि पुनि आगिक काज ।
(५) बानर मुख नहि शोभए पान ।

आ शब्दावली मे एतेक सहज रहितहुँ, विद्यापति गीतिक गेयता किंवा संगीतात्मकता नष्ट नहि होइत अछि । प्रत्येक गीत कोनो ने कोनो शास्त्रीय राग मे बान्हल गेल अछि, आ कोनो गीत मे ई अनुभव नहि होइत अछि जे ताल अथवा लयक रक्षार्थ एको ठाम भावार्थक हत्या अथवा अवहेलना कैने छथि ।

प्रेम भावनाक शृंगारिक कविक रूप मे विद्यापतिक समतुल्य समानान्तर कोनो कवि अंग्रेजी साहित्यक सम्पूर्ण काव्यधारा मे उपलब्ध नहि छथि। वैट, प्रेम उपालम्भक पेट्रार्चन (Petrarchan) गायक शेक्सपियर, डोन, बर्न्स, शैली, ब्राउनिंग, हार्जी एवं चौट्स अंग्रेजी साहित्यक प्रमुखतम शृंगार कवि छथि। प्रेमक विभिन्न पक्ष के ई सभ कवि अभिव्यक्त एवं अपन कविता मे आरोपित केने छथि। एहि मे सँ किछु कवि प्रेमी व्यक्तिक रागात्मक अन्तद्वन्द उपस्थित केने छथि, मुदा, ई कवि सभ मात्र प्रेमी पुरुषक भंगिमा सँ प्रेम भावना कें चित्रित केने छथि, एतदर्थं प्रेमिकाक रजकरा हेतु प्रेमे ओकर संपूर्ण अस्तित्व अथवा अस्तित्वक संपूर्णता थीक। प्रेम भावना हिनका सभक काव्य मे स्पर्शहीने रहि गेल विद्यापतिक कवितावली मे स्त्री कें उचित स्थान आ उचित अभिव्यक्ति भेटल छैक। विरह पीड़िता, प्रेम मातलि स्त्री हृदय मे अन्तर्दृष्टिक असाधारण नम्रता सँ प्रवेश कए विद्यापति प्रेमिका स्त्रीक मनोभावना मनोदशाक सम्पूर्ण परिधि कें उद्घाटित कएने छथि। संगहि विद्यापति ओहू भाव मनोभाव कें सफलतापूर्वक व्यक्त कए सकल छथि जे रतिकाल मे रतिक विषय मे आ रतिक उपरान्त नायिकाक हृदय मे उत्पन्न होइत छैक, मुदा अंग्रेजी काव्यक कोनो तथाकथित दुस्साहसी कवि एहि नायिकाक उद्गार कें व्यक्त करबाक चेष्टा पर्यन्त नहि कएने छथि।

विद्यापति पदावली रति-भाव आ भक्ति-भावक अपूर्व मिश्रण थीक। अधिकांश काव्य साहित्य मे साधारणतः ई दुनू भावधारा समानान्तर रूपें एकहि संगे प्राहमान भेल अछि। मुदा, विद्यापतिक रचनावली मे एहि समानान्तर भाव धाराकें प्रवाहित रहबाक एकटा अतिविशिष्ट कारण अछि। अपन संगरक्षक सामन्त सभक आग्रह कें पूर्ण करबाक हेतु दरबारी काव्य आ प्रणय प्रसंग काव्यक प्रति एवं सभाक तथा जनसाधारणक आग्रह कें पूर्ण करबाक हेतु मुसलमानी धर्म सम्प्रदायक आक्रमण सँ हिन्दुत्वक रक्षा करबा मे समर्थ भक्ति-काव्य आ युद्ध-काव्यक प्रति विद्यापति आग्रहशील भेलाह। मूलतः आ मुख्यतः शृंगार काव्य प्रस्तुत करैत रहलाह तथापि मानिनी राधा आ प्रेमी श्रीकृष्णक दिव्य युगल जोड़ि मे आपन पदावलीक नायक-नायिकका बना कए ओ एहि शृंगार-काव्य कें भक्तिक रंग एवं आवरण देलनि।

विद्यापति पदावलीक प्रतिमावली (Images) अत्यन्त विस्तृत एवं वैभवपूर्ण अछि। हुनक अनेक कविता मात्र उपमा-उपमेयक गुच्छा बुझि पड़ैत अछि आ अनेक कविता मे जयदेव तथा अन्य संस्कृत कवि सभक काव्यक प्रतिध्वनि होइत अछि, बुझना जाइत अछि। मुदा, विद्यापतिक अधिकांश पद आ गीत नवीन, पवित्र आ

मौलिक अछि एवं व्यक्तिगत काव्य प्रतिमाक विशिष्टता सँ ओतप्रोत अछि। अपन अनुभव बाहुल्य साहसिकताक कारणे विद्यापतिक बिम्ब विधान आ प्रतिमावली अंग्रेजीक बहुप्रशंसित मेटाफिजिकल (Meta-phyical) कवि वृन्दक समतुल्य समकक्ष अछि एवं कतेक विषय मे विशिष्ट से हो अछि। समकालीन समाज जीवनक सम्पूर्ण आयाम सँ, पुराण सँ, साहित्य सँ युद्ध, व्यापार, नियम, कानून, न्यायालय, प्रकृति सभ सँ विद्यापति अपन बिम्ब योजना गढ़ने छथि। अपन काव्य उद्देश्यक पूर्तिक लेल उपयुक्त आ उपयोगी कोनो बिम्ब मे अति सामान्य अथवा अत्यन्त असाधारण, अति दिव्य ओ नहि बुझैत छलाह। अतएव विद्यापतिक कोनो बिम्ब योजना पर्याप्त काल्पनिक अछि, आ कोनो-कोनो बिम्ब योजना अंग्रेजी कवि डोन अथवा मार्वेलक दूरारूढ़ कल्पनावादी अहंमन्यताक तुलना मे सामर्थ्यपूर्वक समतुल्य ठाढ़ होइत अछि।

आध्यात्मवादी (मेटाफिजिकल) कवि सभक जकाँ विद्यापतिओक गीत नाटकीय तत्व सँ परिपूर्ण अछि। विद्यापति पदावलीक उद्भव अधिकांशतः असामान्य परिस्थिति सँ होइत अछि, स्वारोहक तात्कालिकता आ नम्यता सँ युक्त विशिष्ट चरित्रक विशिष्ट उक्ति कें शब्दबद्ध करैत अछि। उदाहरण रूपें विद्यापतिक कतिपय प्रसिद्ध गीतक प्रथम पंक्ति उद्धृत कएल जा सकैत अछि—

(क) कतन बेदन मोहि देसि मदना।
(ख) मनमथ तोहि कि कहब अनेक।
(ग) कोइ डरासि सखि चलु हमे संग।
(घ) उठ-उठ माधव कि सुतसि मंद।
(च) सुनु-सुनु सुन्दरि धर अवधान।
(छ) माधव तुहु नहि जाहु परदेस।

आ एहि पद सभक तुलना सर्वप्रमुख आध्यात्मवादी अंग्रेजी कवि डोनक निम्नांकित पंक्ति सभ सँ कैल जा सकैत अछि :—

१. हम बिस्मित छी शपथपूर्वक, की केलहुँ हम आ अहाँ
आबत केलहुँ प्रेम प्रसंग
(I wonder by my both, what thou & I
Did till we loved.)

२. ईश्वरक शपथ थीक, अहाँ मुँह बन्द राखू
आ करए दिअ हमरा प्रेम

(For God's sake, hold your tongue and
let me love.)

३. मधुरतम प्रेम अहाँकेँ वर्जर कए देब
नहि अछि हमरा काम्य
(Sweetest love, I do not go
For weariness of thee)

डोन विरही प्रेमी युगलक तुलना कुतुबनुमाक विपरीत सुदी कांटा सँ कैने छलाह, आ प्रेम कविता मे एहि रेखा गणितीय बिम्ब प्रतिमा के पाबि आलोचकगण आनन्दातिरेक सँ विह्वल भए गेल छलाह। विद्यापति हमरा सभ केँ ई प्रतिमा दैत छथि—

खने-खने नयन कोन अनुसरई।

की ई प्रतिमा रेखागणितीय नहि थीक ? की ई प्रेम कविताक रेखागणितीय प्रतिमा अधिक स्वाभाविकता सँ आ समयक हिसाबे डोनक कविता सँ लगभग दू सय वर्ष पहिने रचित नहि भेल अछि ? डोनक सुप्रसिद्ध चतुर्दशपदी (सॉनेट) "Batter my heart" (बैटर माई हार्ट) एहि उक्ति सँ समाप्त होइत अछि—

हमरा स्वीकार करु बन्दी करु हमरा, कारण
हमरा अहाँ नहि करब आलिंगनबद्ध
तँ हम कहियो मुक्त नहि होयब,
कहियो हम पवित्र पावन नहि होयब
जँ हमरा अहाँ नहि करब
भोग तृप्त ।

आ, आलोचकगण भक्ति-काव्य मे एहि वासनामय, रत्यात्मक बिम्ब विधान मे कवि साहसक चरमोत्कर्ष मानि लैत छथि, मुदा एहि उक्ति समक संदर्भ सँ, विद्यापतिक सम्बन्ध मे ओ सभ की मन्तव्य प्रकाश करताह—

(क) गिरिया नखअ पयोधर परसित
गिम गज मोतिय हारा ।
काम कम्बु भरि कनक सम्भु परि
ढारस सुरसरि धारा ।।

(ख) चन्दन चरचु पयोधर ।
ग्रिम गज मुकता हार ।
भसम भरल जनि संकर रे ।
सिर सुरसरि जल धार ।।

जखन हम विद्यापतिक बिम्ब समारोह सँ अंग्रेजी कविक समय समानरूप बिम्बयोजना सभक तुलना करैत छी तँ हमरा सभ ठाम विद्यापति अधिक युक्तिसंगत, स्वाभाविक आ प्रियतर लगैत छथि। कैम्पन (Campion) लिखने छथि। हुनक मुखाकृति मे एकटा पुष्प उद्यान अछि आ एहि उपमाक प्रशंसा मे अंग्रेजी आलोचक मुक्तकण्ठ वा विभोर भए गेल छथि। एहने उपमा रूपक सूरदास द्वारा अद्भुत एक अनुपम बाग मे प्रस्तुत कैल गेल अछि आ हिन्दी समालोचक अतिशयोक्ति अलंकार मे एकर प्रशंसा कैने छथि। मुदा विद्यापति अही रूपक योजना कें अधिक स्वाभाविक रूपें अधिक संगीतमय गीत में आयोजित कैने छथि—

माधव कि कहब सुन्दरि रूपे।
कतेक जतन विहि आनि समारल
देखल नयन सरूपे ॥

अंग्रेजी कवि हैरिकक—जावत धरि सम्भव हो, गुलाब कलिका संग्रह करू (Gather' ye rose buds while you may) तात्कालीन सुखवादी काव्य धारणाक क्लासिक उदाहरण मानल गेल अछि। मुदा विद्यापतिक ई धारणा एहि सँ अधिक स्वाभाविक आ स्वीकारयोग्य अछि।

प्रथम सिरिफल गरबे गमओलह,
जे गुन गाहक आबे।

कारण एहि ठाम ओ स्त्री अपन अभिमत प्रकट कए रहल अछि, जे अपन यौवन-काल व्यर्थ गमौने अछि आ जे एहि सत्य कें हृदय मे, रक्त संचार मे अनुभव कैने अछि।

अंग्रेजी काव्यक सम्पूर्ण बोल मे कतहु कवि शब्दवली मे एहन सहजता, एतेक गतिमय, एतेक विह्वल, एहेन दिव्य आ प्रभावशाली रूपायन [आ एतेक परिचित स्वर नहि प्राप्त भए सकैत अछि।

आजु नाथ एक सुख महावत लागत हे—

एहन विशिष्ट कवि छथि विद्यापति जनक वा याज्ञवल्क्यक द्वारा पवित्र बनाओल गेल संस्कृति आ पाण्डित्यक श्रीसंपन्न परम्परा सँ अलंकृत विभूषित मिथिलाक पावन माटि पानि मे अवतरित एहेन कवि जे सीताक एहि प्रभामंडित भूमि कें अपन अक्षत अनुपमेय आ अक्षय स्वर संगीत सँ रसाप्लावित कैलनि। एहेन कवि जे हमर परिचित आन कोनो कवि सँ अधिक स्पष्ठ आ सार्थक सशक्त रूपें हमरा सभकें ई अनुभूति ई दृष्टि प्रदान करैत छथि जे कविता जीवनक एकटा अभिन्न अविच्छिन्न अंग थिक, जीवनक बाह्य शृंगार मात्र नहि थिक।

विद्यापतिक काव्यक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्रो० राधाकृष्ण चौधरी

मिथिला भारतीय इतिहासक एक पवित्र एवं पावन भूमि युग-युग सँ रहल अछि एवं एकर गौरव सेहो भारतीय इतिहास मे अक्षुण्ण मानल गेल अछि। युग-युग सँ मिथिलाक देन भारतीय संस्कृतिक क्षेत्र मे अपूर्व रहल अछि। भारतीय संस्कृतिक जे विभिन्न अंग अछि ताहि मे मिथिलाक योगदान वैदिक युग सँ आई धरि अपन व्यक्तित्व कें बनौने रहल अछि। दर्शन, तर्क, स्मृति, निबन्ध एवं साहित्यक क्षेत्र मे समस्त पूर्वोत्तर भारतक मध्य मिथिलाक वैशिष्ट्य सर्वमान्य रहल अछि। ओना राजनैतिक इतिहासक दृष्टिकोण सँ भने मिथिलाक रूप निखरल नहि हो मुदा सांस्कृतिक इतिहासक अध्ययन कएनिहार कें मिथिलाक गौरवमयी परम्पराक आँचर पकड़ए पड़बे करतन्हि। अहिठाम प्रत्येक युग अपन वैशिष्ट्य एवं गरिमाक परिचायक रहल अछि आर सुविस्तृत ढंग सँ अध्ययन केनिहारक हेतु प्रत्येक युग अपना आप मे सर्वांगीन चित्र प्रस्तुत करैत अछि।

विद्यापति जाहि भूमि मे अवतरित भेलाह से भूमि वन्ध्या नहि अपितु उर्वरा अछि। विद्यापति मिथिले मे भेलाह, आन ठाम नहि ई एक विचारणीय विषय। ताहु सँ पैघ बात ई जे ओ जाहि काव्यधारा के प्रवाहित केलन्हि से मात्र 'धार' नहि रहि महासमुद्रक रूप धारण केलक आर ओहि महासमुद्र मे तत्कालीन समस्त काव्य-धारा विला गेल। अहि महासमुद्रक निर्माताक पृष्ठभूमि अध्ययनहि सँ हमरा लोकनि वस्तुस्थितिक सतह धरि पहुँचि सकैत छी अन्यथा नहि। भारतीय इतिहास मे समन्वयक जे प्रवृति प्राचीन काल मे देखबा मे अबैत अछि से शनैः शनैः ह्रासोन्मुख भए रहल छल आर ओहि दिसि ककरो ध्यान जाएनहि रहल छलैक। देश भरि मे 'कूप मण्डुकता' पंडितपंथक परिचायक मात्र छल आर अहि बातक भान विदेशी यात्रियो लोकनि कें होमए लागल छलन्हि। भारत मे अवरजातक क्रम कहियो बन्द नहि भेल मुदा जखनहि हमरा लोकनि 'पंडितपंथ'क फेरा मे पड़ि गेलहुँ तखनहि हमरा लोकनिक ज्ञानक फाटक सेहो बन्द भए गेल।

मनुक्ख भने अपना बाट मे अवरोधक प्रक्रिया चालू कए लिअ मुदा प्रकृति अपन नियम कें सतत् प्रवाहमान रखिते अछि आर प्रकृतिक इएह रूप ओकर वैशिष्ट्य मानल गेल अछि। जखन हमरा लोकनि 'तिलक तार' बनबैत छलहुँ किवा 'जाल'क

सिद्धान्वेषण करैत छलहुँ तखनहि जनसाधारण प्रकृतिक कोरा मे अपना हेतु 'जन-भाषा'क प्रसार एवं प्रचार मे लागल छल आर ओहि फले 'जनभाषाक' प्रगति भेल। मनुक्ख अपना आवश्यकतानुसार सब किछु निर्माण करैत अछि आर तैं जखन पंडित पंचक बोझ वो सहि नहि सकल तखन वो अपना हेतु भाषा वो साहित्यक निर्माण सेहो केलक जे कालान्तर मे प्रस्फुटित भेल आर 'मैथिली' ओकर प्रतिफल। हिन्दू-मुसलमानक मध्य राजनैतिक इतिहास मे जे अर्थ रखइत हो, साहित्यक क्षेत्र मे तँ ई स्पष्ट देखना जाइछ जे १२-१३म शताब्दी धरि अबैत मिथिलाक क्षेत्र मे प्रचुर मात्रा मे अरबी-फारसी शब्दक प्रयोग प्रारम्भ भए गेल छल। ई कोनो एक अघटन घटना नहि छल प्रत्युत् सामाजिक संस्कृतिक विकासक एक क्रममात्र। संस्कृत एक दुरूह भाषा भए गेल छल जकर साधारणीकरणक एकमात्र प्रयास बारहम शताब्दी मे जयदेव कएने छलाह मुदा ओहू प्रयास सँ संस्कृत प्रगतिशील जनताक ओहि आकांक्षा-उत्कंठा कें सन्तुष्ट नहि कए सकल जकरा हेतु जनता व्यग्र छल।

१००० ई०क पश्चाति गुजरात सँ बंगाल धरि करीब एके भाषा छल जाहि मे तद्भव-तत्समक विभेद कें जँ हटा देल जाइक तँ सर्वत्र साम्य छल। ओहि युगक साहित्यिक प्रवृत्ति कें जँ ध्यानपूर्वक देखल जाइक किवा ओकर साहित्यिक अध्ययन कैल जाइक तँ ई स्पष्ट देखना जाए सकैत अछि जे भाषागत साधारण भिन्नताक बावजूदो ओहि मे एकटा एहेन साम्य छैक जे भारतीय संस्कृतिक एकरूपता झलकि उठैछ। सभ काव्यक श्रोत भेल—प्रेम (लौकिक किंवा अलौकिक)। लोरिकक परम्परा आठम-नवम शताब्दीक होइतहुँ समस्त उत्तर भारत मे प्रचलित रहल आर् १४म शताब्दीक मुल्ला दाऊद ओहि परम्परा मे 'चन्दायन' काव्यक रचना केलन्हि। छत्तीसगढ़ सँ मिथिला धरि ई जे एक परम्पराक रूप मे सुरक्षित अछि से मात्र अहिबातक प्रमाण जे जनमानस कोनो वस्तु कें जँ धरैत अछि तँ ओकरा अमरत्व प्रदान करैत छैक। सिद्ध कविक गीत सँ विद्यापति धरि जे साहित्यिक विकासक क्रम अछि तकर मूल विशेषता इएह जे अहि मे जनताक भाषा कें माध्यम मानल गेल आर ओकरे बढ़ाओल गेल। विद्यापति मे हमरा लोकनि जाहि परिपक्वताक अनुभव करैत छी से मात्र एकाध सय वर्षक साहित्य नहि वरन् शताब्दिक चिन्तन-मननक प्रतिफल।

अहि सम्बन्ध मे प्राकृत-पैंगलमक चर्चा करब असंगत नहि बुझना जाइछ। अहि ग्रंथ क रचना कतए, कोनठाम आर किनका हाथें भेल से नहि कहि मुदा एतबापरि स्पष्ट अछि जे अहि मे बहुत रास कवि लोकनिक रचना संकलित अछि आर अहि महक विशेष कवि पूर्वी भारतक छलाह। प्राकृत-पैंगलम् में पाँचसए (५००) सँ अधिक एहेन शब्द अछि जे एखनहु धरि मैथिली मे व्यवहृत अछि—ठीक ओहि रूपें

जेना हमरा लोकनि अधुना लिखैत छी । ओहि मे हरिब्रह्म एवं चण्डेश्वरक उल्लेख तँ सहजहिँ अछिये । बहुत रास पद तँ ओहि ग्रंथ मे एहनो अछि जे जँ एखनो कोनो कवि (मिथिलाक) ओकरा अपना नाम सँ चला देथि तँ चलि जायत । एहना स्थिति मेँ एक सोचनीय विषय जे प्राकृत पैंगलम्' कोन स्थिति एवं कालक ग्रंथ थीक आर एकर प्रभाव तत्कालीन साहित्य पर कतेक अछि ।

विद्यापति जाहि युग मे भेल छथि से राजनैतिक दृष्टिकोण सँ अस्त-व्यस्तता एवं अनियमितताक युग छल । उत्तरी भारत मे बहुत रास छोट-छीन राज्य छल आर कतेक रासक छिट-फुट नाम तँ 'प्राकृत-पैंगलम्' मे भेटैत अछि । दिल्ली सँ बंगाल धरि छोट पैघ बहुत राज्य छल जाहि मे मिथिला अपन स्तित्व बनौने छल । तुगलकवंशक शासक पश्चाति केन्द्रीय सत्ता क्षीण भएगेल छल आर जाहिठाम जकरा जे हाथ लगलैक से सब ताहिठाम अपन हथिया लेने छल । दिल्ली, जौनपुर आर बंगालक बाद मिथिलेटा एकटा एहेन राज्य छल जाहिठाम ब्राह्मण वंशक राज्य बाँचल छल आर ओ लोकनि ओकरा सोहागक पटोर जकाँ संजोगने छलाह । कुदृष्टि चारू कात सँ छल । ठोस आदर्शक अभाव तँ सहजहिँ छलहे आर स्वयं विद्यापति अहि दिसि हमरा लोकनिक ध्यान आकृष्ट केने छथि अपन **कीर्त्तिलता** मे । चूँकि आदर्श पुरुषक सबठाम अभाव देखल गेल छल तेँ महाकवि विद्यापति इतिहासक मंथन केलन्हि आर 'पुरुष परीक्षा' लिखि 'आदर्श पुरुष'क अपन परिकल्पना उपस्थित केलन्हि । ओहि मे वीर, सुधी, सविद्य आर पुरुषार्थवान् पुरुषक कल्पना कैलगेल अछि आर एवं प्रकारेण आदर्श पुरुषक से हो । प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति सँ प्रेरणा लेबाक प्रणाली अहुखन जीवनक छल आर महाकवि वस्तु स्थिति केँ ध्यान मे रखैत किछु उपयोगी ग्रन्थक रचना केलन्हि । समाज एवं संस्कृति, राजनीति एव कूटनीतिक एहन कोनो अंश नहि अछि जाहि पर महाकविक दृष्टि नहि गेल हो । लिखनावली सँ तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, प्रशासनिक एवं सामान्य व्यवहारिक स्थितिक पता चलैत अछि । स्मृति, निबन्ध, जनशास्त्र आर कानून पर सेहो कविक कलम चलल छल ।

प्रश्न अछि जे जखन चारूकात एहेन अस्त-व्यस्तता छल आर मिथिला सामन्त-वादी समाज व्यवस्थाक एकटा केन्द्र तखन विद्यापति सन पैघ प्रतिभाक आविर्भाव कोना भेल ? विद्यापति विश्वक महान् कवि एवं द्रष्टाक कोटि मे छथि, ई तँ निस्संदेह कहल जाए सकैछ आर तेँ समस्त विश्वक सन्दर्भ मे विद्यापति केँ देखबाक प्रयास करबाक चाही । मात्र मिथिला क चौहद्दी मे बान्हि के विद्यापति केँ राखब भावुक युग मे अपन ज्ञानक अभावक परिचय देब हैत । १४-१५ म शताब्दी मे

समस्त विश्व मे उथल-पुथल मचल छल आर विशेष कए चिन्तनक क्षेत्र मे तँ जेना एकटा 'विररो' उठल छल। भारत ओहि सँ बाँचल कोना रहैत। एक दिसि किछु पंडित पंथी लोकनि सपरिवार लोम केँ कूपमण्डूक बनाकेँ रखबाक प्रयास मे तल्लीन छलाह आर दोसर दिसि कवि आर द्रष्टा अपन मचल विचार केँ जनताक भाषाक माध्यम सँ जनता धरि पहुँचेबा मे व्यस्त। दुइ प्रवृतिक मध्य संघर्ष चलि रहल छल और एकर उदाहरण मिथिलाक इतिहासो सँ भेटैत अछि। ओहि युग मे पुरान-पुरान ग्रंथक आधार पर निबमावलीक संकलन मात्र भेल, कोनो मौलिक ग्रंथक रचना नहि—विशेषकए संस्कृत मे। जन भाषाक विकास भेल आर ओहि मे सब प्रकारक ग्रंथक रचना से हो। मिथिला मे मैथिलीक रूपक निर्धारण भए चुकल छल आर एकर प्रमाण अछि ज्योतिरीश्वर ठाकुरक '**वर्णन रत्नाकर**' और '**धूर्तसमागम नाटक**'। उमापतिक नाटक मे जे मैथिली गीत अछि, ताहि सम्बन्ध मे वाद-विवाद रहितहुँ, एतबा स्पष्ट अछि जे मैथिलीक प्रतिष्ठित रूप स्थापित भए चुकल छल। तथापि भाषाक स्थिति केँ मान्यता 'पंडित पंथी' लोकनिक नहि भेटि रहल छलन्हि —विद्यापति स्पष्ट रूपेँ कहने छथि—

"बालचन्द विज्जावइ भासा।
दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा॥
ओ परमेसर हर सिर सोहइ।
ई निच्चय नाअर मन मोहइ॥"

संस्कृत केँ साधारणीकरणक प्रयास भेला उत्तरो संस्कृत मनमोहक नहि बनि सकल। पश्चिम मे मारटिन लूथर भाषाक प्रयोग सँ ईश्वर आर जनता जनर्दनक मध्यक खाई केँ भरलन्हि आर भारत मे, विशेष कए पूर्वी भारत मे विद्यापति अपन कोमल पदावली सँ मात्र जनताक मनेटाकेँ नहि मोहलन्हि अपितु समस्त उत्तर भारतीय भाषाक अग्रणी भेलाह आर जनमानस केँ उच्छ्वासित करैत कैक भाषाक प्रवर्त्तक सेहो। तँ किमाश्चर्यम् कि एके सँगे बंगला, हिन्दी आर मैथिली हुनको अपन प्रथम कविक संज्ञा देबा मे अपना केँ गौरवान्वित बुझैत अछि।

ओ जे युग छल ताहि मे आवश्यकता छल नेतृत्वक आर महाकवि मात्र कविये नहि छलाह वरन् एक महान नेता सेहो। मिथिलाक तिमिराच्छन्न मेघ मे ओ एक एहेन देदिप्यमान नक्षत्र छलाह जिनक छटाक प्रकाश अद्यावधि मिथिला, नेपाल, असम, बंगाल आर उत्कलधरि चमकि रहल अछि। छोट-छीन बात मे नहि उलझि, महाकवि युगक आह्वान सुनलैन्हि आर युगक चुनौती केँ स्वीकार केलन्हि। जखनहि केओ 'लकीरक फकीर' हेबा लेल प्रस्तुत नहि होइछ, तखनहि ओकर विरोध व्यापक रूपेँ

प्रारम्भ होइत छैकि आर जे किओ ओहि विरोधक सामना करैत अपन कर्तव्यनिष्ठताक परिचय दैत अछि सैह महान कहबैछ। महाकविक संग इएह विशेषता छलन्हि। महान संस्कृतज्ञ होइतहुँ, ओ अपना कें जनता सं दूर नहि रखलन्हि आर जनताक उल्लास आर उच्छ्वास कें लएकए ओ आगाँ बढ़लन्हि आर सफल भेलाह—मिथिलाक कतेको विद्वान जन्म लेलन्हि आर गत भेलाह मुदा विद्यापति अहुखन जीवित छथि ठीक ओहिना (किछु अंश मे बेसियो) जेना ओ अपना युग मे छलाह। भारतीय संस्कृतिक शृंखला मे विद्यापति ओहि शीर्षस्थान पर छथि जाहिठाम कालिदास सं टैगोर धरि सुशोभित छथि। प्राचीन सं प्रभावित महाकवि विद्यापति अपन परवर्त्ती कवि कें ओहि सं बेसी प्रभावित केने छथि। हुनक कविता दिल्लीक मुसलमानी शासक सं लएकए बंगालक महाभक्त चैतन्य कें मंत्रमुग्ध करैत रहल।

महाकविक काल मे मिथिलाक की स्थिति छल तकर सर्वेक्षण केला उत्तरे हमरा लोकनि हुनक काव्यक महत्वक अनुशीलन कए सकैत छी। कर्णाट् वंशक पश्चाति मिथिला मे ओइनिवार वंशक स्थापना भेल छल आर ओहि वंशक संग विद्यापति एवं हुनक परिवारक घनिष्ट सम्बन्ध छल। ओइनिवार वंशक सब शासाक संग विद्यापति एवं हुनक परिवारक सदस्यक सम्बन्ध मधुर छल आर ओ ओहि राज्यक मात्र एक महा कवि बेसा नहि वरन् एक महान निर्देशको छलाह। समस्त मिथिला मे ताहि युग मे एक प्रकारक अनिश्चितता छल आर साधारण लोक अपन आर्थिक दुर्बलता सं आक्रान्त छल। ओहि युग मे ई जे परिस्थिति छल तकर निदानक हेतु किओ विशेष चिन्तित नहि बुझना जाइत छथि आर तैं राजनीतिक आर सामाजिक स्तर पर एक प्रकारक निराशा बनल रहैत छल। महाकवि द्रष्टा होइत छथि और ओ अपन युगक प्रतिनिधि सहो। विद्यापति अपन जन्मभूमिक नैराश्यपूर्ण स्थिति कें देखलन्हि आर ओकर निदानार्थ सबटा उपचारो केलन्हि आर अधुना जे हमरा लोकनि मैथिल हेवाक गौरव करैत छी तकर सम्पूर्ण श्रेए ओहि महाकवि कें छन्हि जे हमरा लोकनिक नेतृत्व आई सं छ सं वर्ष पूर्वहि कए गेल छथि।

ई सर्वविदित अछि जे मध्ययुग मे जखन भारतक आन प्रान्त जकाँ मिथिलो मे हिन्दू-मुसलमानक आपसी सम्पर्क सँ समन्वयात्मक प्रवृत्ति बढ़ि रहल छल तखनहि दार्शनिक पृष्ठभूमि मे मिथिला मे कर्मकाण्डक वृद्धि सेहो भए रहल छल। ओहि कर्म-काण्डक प्रभाव अहुखन हमरा लोकनिक जीवन पर अछिये तैं ओहि युग मे मैथिली संस्कार पद्धतिक विकास से हो भेल। ओहि युगमे १४०० मीमांसक लोकनिक एक महासम्मेलन सेहो भेल छल। विद्यापति स्वयं अहि प्रभाव सँ बाँचल नहि छलाह आर ओ 'वर्ष-कृत्य' नामक ग्रन्थक रचना केने छलाह। एक दिसि महाकवि मैथिल

परम्पराक निर्वाह केलन्हि आर दोसर दिसि ओ समयानुसार मैथिलक नेतृत्व सेहो केलन्हि। अहि दृष्टिकोण सँ महाकविक कविताक अध्ययन अद्यावधि नहि भेल अछि आर तँ जँ हमरा लोकनि अहि दिसि प्रयास करी तँ ओ सर्वथा स्तुत्य रहत। विद्यापतिक काव्य भेल एकटा अथाह समुद्र जकरा अवगाहन केला सँ एकाधटा मोती सबके भेटबे करतन्हि।

महाराज शिवसिंह आर विद्यापति एक दोसराक पूरक मात्र। मुदा विद्यापति निम्नांकित राजा सभहिक उल्लेख सेहो करैत छथि—राय भोगीश्वर, कीर्त्तिसिंह, देवसिंह, शिवसिंह, पद्मसिंह, नरसिंहदेव, भैरवसिंह देव, राय अर्जुन, चन्द्रसिंह, पुरादित्य, इब्राहिमशाह, व्यासदेव, आलम इत्यादि आर शिवसिंहक मंत्री अच्युत, अमृतकर आदि। समस्त राजा-महाराजाक मध्य ओ शिवसिंहक परम मित्र छलाह अहि मे सन्देह नहि। ओ मात्र राजा आर मंत्रियेटा नहि वरन् कीर्तिलता आर कीर्तिपताका मे कतेक आर व्यक्ति के अमर कए गेल छथि। अहि पंक्तिक लेखकक पूर्वज रउत रजदेवक वर्णन ओ कीर्तिपताका मे केने छथि। एतेक गोटयक हेतु सब किछ लिखितो विद्यापति स्वयं अपना सम्बन्ध मे किछ स्पष्ट नहि लिखि ओ ओहि भारतीय परम्पराक निर्वाह केलन्हि जे वाल्मीकि, व्यास आर कालिदास प्रचलित कए गेल छलाह। महाकविक वाणीये हुनका अमरत्व प्रदान करैअ नेकि हुनक व्यक्तिगत यशोगान। मिथिलांचलक राजा-महाराजाक अतिरिक्त विद्यापति किछु एहनो शासक वृन्दक यशोगान केने छथि जकर ज्ञान हमरा लोकनिके नेपाल पोथी सँ होइछ। राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, द्वारा प्रकाशित विद्यापति पदावली (पृष्ट २५-२६) मे कहल गेल अछि जे विद्यापतिक समय मे जौनपुर दिशि सँ बैजल नामक एक सूबेदार पटना आएल छल। एकर आधार बताओल गेल अछि "प्रबोध चन्द्रिका" नामक एक पोथी। ई पोथी हम स्वयं (१० टा पाण्डुलिपिक आधा पर सम्पादित कए भण्डारकर शोध संस्थानक पत्रिका (१९६४) मे प्रकाशित करौने छी आर ओहि मे जे बैजल भूपतिक उल्लेख अछि से उत्कल स्थित पटनाक शासक छलाह नेकि बिहारक राजधानी पटनाक। जँ पदावलीक सम्पादक हमर उपर्युक्त ग्रंथक अवलोकन केने रहितथि तँ कथमपि ई दोष नहि रहि जइतन्हि। ओहि बैजल भूपालक चर्चा विद्यापति कएने छथि अपन नेपाल पोथी मे। विद्यापतिक सम्पर्क अहि उत्कलक शासक सँ कोना भेल किंवा ओहि शासक सँ ओ कोना प्रभावित भेलाह, ई एक विचारणीय विषय थिक मुदा अहि मे आश्चर्य चकित हेबाक बात नहि कारण विद्यापति अपना युग मे दिल्ली सँ बंगाल धरि प्रसिद्ध छलाह आर मुसलमान सुल्तानोक नाम पर कैकटा हुनक कविता छन्हि। बैजलदेव संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान छलाह आर पद्यक माध्यम संस्कृत व्याकरणक ग्रन्थ (प्रबोधचन्द्रिका)क रचना केने छलाह। हुनक विद्या विद्यापति के

आकर्षित केने होइत्ह तँ अहि मे किमाश्चर्यम् ? विद्यापति अपना युग मे राजनैतिक काज सेहो केलन्हि आर मिथिला कें नेतृत्व प्रदान केलन्हि ।

विद्यापति अपन युगक वर्णन निम्नलिखित शब्द मे केने छथि—

ठाकुर ठक भए गेल चोरें चप्परि घर लिज्झिअ
दास गोसाञ्नि गहिय धम्मा गए धन्ध निमज्जिअ ।
खले सज्जन परिभविअ कोइ नहि होइ विचारक ।
जाति अजाति विआह अधम उत्तम पतिपारक ।।
अक्खररस बुज्झनिहार नहि कइकुल गमियिक्खरि भउ ।
तिरहुति तिरोहित सव्वगुणेरा गणेश जबे सग्ग गउँ ।

मिथिलाक वास्तविक स्थितिक अहि सँ उत्तम चित्रण आर कतए भेटत ? (द्रष्टव्य—हमर—'मिथिला इन द एज आफ विद्यापति)। अहि स्थिति मे जाहि प्रकारक नेतृत्वक आवश्यकता छल से हमरा लोकनिकेँ महाकवि देलन्हि । कीर्तिसिंहक संग जौनपुर जाकए ओ महाराज इब्राहिम शर्की सँ भेंट कए मिथिला मे अर्सलानक अत्याचार कें अन्त करबाक निवेदन केलन्हि आर ओहि मे हुनका सफलता सेहो भेटलन्हि । शिवसिंह के शासन काल मे मिथिला पूर्णरूपेण स्वतंत्र राज्य बनि गेल । तुगलक साम्राज्यक पुरोहित भेला सन्ता जौनपुर आर बंगाल स्वतंत्र भएनेल छल आर ओहि दुनू राज्यक मध्य मिथिलेटा एहेन हिन्दू राज्य छल जे स्वतंत्र छल । जौनपुर आर बंगालक आँखि मिथिले पर लागल छल आर शिवसिंह यद्यपि किछु दिन 'पंचगौड़ाधिप'क संज्ञा सँ विभूषितो रहलाह तथापि हुनका मुसलमान शासक सँ संघर्ष करए परलन्हि आर एकर विशद् विश्लेषण हमरा लोकनिकेँ महाकविक 'कीर्तिपताका' मे भेटैत अछि । शिवसिंह सम्भवतः जौनपुरक हाथे पराजित भेलाह आर हुनक परिवार कें लए कए विद्यापति द्रोणवार पुरादित्यक ओतए किछु दिन धरि रहलाह । विद्यापति आर शिवसिंहक मध्य अन्योन्याश्रय सम्बन्ध छल । ओहेन निश्छल प्रेम आर कतहु आनठाम देखबा मे नहि अबैछ । रामभद्रपुर पोथीक निम्नांकित पद अहि प्रसंग मे उल्लेखनीय अछि—

सूखल सर, सरसिज भेल झाल ।
तरुनतरनि, तरल रहल हाल ।।
देखि दरनि दरसथि पताल ।
अबहुं धराधर धरसि न धार ।।
जलधर जलधन गेलि अलेखि ।
करए कृपा बड़ परदुख देखि ।।

पथिक पियासल आव अनेक।
देखि दुख मानए तोहर बिबेक॥
पलटलि आसा निरस निहारि।
कहबहुँ क ञोन होइति ई गारि॥
कञोन हृदय न उपजए रोस।
ओलधरि करिअ एहँ पए दोस॥
विद्यापति मह बुझ रसमन्त।
राएसिवसिंह लखिमादेवि कन्त॥

शिवसिंहक प्रति विद्यापति कें जे आदर छलन्हि ताहि सँ कम महारानी लखिमाक प्रति नहि। लखिमा पण्डिताइन छलीहे आर हुनक रचित संस्कृत पद्यक प्रकाशन ग्रियरसन महोदय केने छथि। मिथिला मे तीनटा लखिमा भेल छथि—चण्डेश्वरक पत्नी; शिवसिंहक पत्नी आर ओइनिवार वंशीय चन्द्रसिंहक पत्नी।

मिथिलाक जे वातावरण छल ताहि मे शिवसिंह एक महान नक्षत्र जकाँ बुझना जाइत छथि आर विद्यापति ओहि युगक मिथिलाक सूर्य छलाह। ओ मिथिलाक वस्तुस्थिति कें देखैत विभिन्न विषय पर जे असंख्य गीतक रचना केलन्हि ताहि सँ ई स्पष्ट जे ओ जनता-जनार्दनक इच्छा-आकांक्षा कें नीक जकाँ बुझैत छलाह आर ओकरे प्रतिनिधित्व ओ अपना गीतक माध्यम सँ केलन्हि। जीवनक एहेन कोनो अंग नहि अछि जाहि पर महाकविक कलम नहि चलल हो आर एहेन आन किओ कवि भारत मे देखबा मे नहि अबैत छथि जनिक गीत (५००-६०० वर्ष पश्चात्तियो) जन्म सँ मरणधरिक सब संस्कार मे गाओल जाइत हो। ई श्रेय मात्र विद्यापतियेटा कें छन्हि आर किनको नहि।

विद्यापति छलाहे ठोस अहि पृथ्वीक कवि जे मनुक्खक भौतिक उच्छ्वास कें चिन्हलन्हि आर अपन कोमल कान्त पदावलीक माध्यम सँ ओकरा अमरत्व प्रदान कएलन्हि। देश विदेश सँ जे कि ओ मिथिला मे अध्ययनक हेतु अबैत छलाह से अपना संग विद्यापतिक गीतो लेने जाइत छलाह। चैतन्य चरितामृत मे कहल गेल अछि —

कर्णामृत विद्यापति श्रीगीतगोविन्द।
दू हेरलोकगीते प्रभुर कराय आनन्द॥

एवंप्रकारे विद्यापतिक गीतक प्रसारेटा नहि भेल वरन अनुकरण सेहो। बंगाल मे विद्यापतिक प्रभाव वैष्णव लोकनि पर पड़ल आर हुनका वैष्णव परम्पराक कविक श्रेणी मे अग्रगण्य स्थान भेटलन्हि।

कविकण्ठहार विद्यापतिक काव्यसँ समस्त पूर्वोत्तर भारत आप्लावित भेल। हुनक पथ-प्रदर्शन जे मिथिला मे काव्यधारा प्रवाहित भेल से अद्यावधि चलि रहल अछि। लोक कण्ठ सँ प्राप्त अहुखन विद्यापतिक असंख्य पद ओहिना पड़ल अछि आर ओकर माधुर्य यथावत् बनले छैक। विद्यापतिक एखनो एहेन बहुत रास पद अछि जकर संकलन-संपादन नहि भेल अछि आर तेँ विद्यापतिक उचित मूल्यांकन एखन अपूर्ण रहल। नव-नव गीत सभहिक प्राप्ति सँ बहुत रास नव बातो प्रकाश मे आओत आर तखनहि हुनक उचित समालोचनो सम्भव होयत। हुनक एहेन बहुत रास गीत अछि जाहि मे कोनो राजा-महाराजाक किंवा रानी-महारानीक नाम नहि अछि। जन्म सँ मरण धरिक सब संस्कारक गीत, सब देवी-देवताक प्रति गाओल गीत एवं तत्सम्बन्धी व्यवहार आचारक संकेत आर ताहि पर किछु अपूर्व गीतक रचना अहि बातक संकेत दैत अछि जे महाकवि सब दृष्टिये महाकवि छलाह आर ऐतिहासिक परिवेश सँ पूर्ण रूपेण परिवेष्ठित। हुनक एकोटा पद उपेक्षणीय नहि अछि। प्राचीन कवि मध्य विद्यापतिक अतिरिक्त आर किओ एहेन देखबा मे नहि अबैत छथि जनिक कविता भिन्न-भिन्न भाषा सब मे भेटैत हो।

विद्यापति मात्र राजदरबारेक कवि नहि वरन् जनताक कवि सेहो छलाह। मिथिला भेल एक कृषि प्रधान देश जाहिठाम सामन्तवादी प्रथाक फलेँ किसानक स्थिति बड़ चिन्तनीय छल। गरीब किसानक आकुलता-विवशता एवं कुण्ठाक अभिव्यक्ति विद्यापतिक बहुत रास गीत सब मे भेटैत अछि—खास कए महेशवाणीक माध्यम सँ तँ ओ अहि वर्गक उचित प्रतिनिधित्व कएने छथि। कैकठाम तँ एहेन मार्मिक चित्रण भेटैत अछि जे ओकरा पढ़ला सँ तत्कालीन सामाजिक विषमताक वास्तविक ज्ञान प्राप्त होइछ। जे वस्तुस्थितिक पता हमरा लोकनि केँ आन साधन सँ नहि भेटैत अछि से विद्यापतिक काव्य सँ स्पष्ट भ जाइछ। एकर अतिरिक्त विद्यापतिक गीत मे स्वाभाविकता, सहजता एवं मौलिकता तँ स्पष्ट अछिये। उपमा-उपमेयता तँ सहजहि अपूर्व अछिये। मिथिलाक पारिवारिक जीवनकँ एकटा उदाहरण देखल जाए—

"हसि चलल भवानी तेज महेश
कर धँ कातिक गोद गणेश,
तोहों गौरी जनु नैहर जाह,
त्रिशूल बघम्बर बेचब, बरु खाह,
त्रिशूल बघम्बर रहे बर पाव
हम दुःख काटब नैहर जाय,

देखि अयलहुँ गौरी नैहर तोर,
सबके पहिरन बलकल डोर
जनु उबटी शिव नैहर मोर
नाँगट सँ भल बलकल डोर
भनहि विद्यापति सुनिये महेश
नीलकंठ भए हरथु कलेश ॥"

वास्तविकताक संग अपना केँ साक्षात्कार कए महाकवि विद्यापति युग एवं जनताक कवि भए गेलाह ओ इएह कारण थीक जे हुनक सब प्रकारक गीत अधुना लोक कण्ठ मे सुरक्षित अछि आर लोके कंठ संदेश-विदेश मे प्रचलित-प्रसारित भेल। महान कवि ओएह होइत अछि जे अपन जनता-जनार्दनक इच्छा-आकाँक्षा केँ लएकए चलैत अछि आर जकरा सभ किओ अपन बुझैत छैक। जाहि दृष्टि सँ देखल जाय, महाकवि महान छलाह आ जाधरि ई संसार रहत, ओ अमर रहताह। विशिष्ट अध्ययन सँ हुनक आर बहुत रास गीत हमरा लोकनिक समक्ष आओत।

विद्यापतिक अनुताप

प्रोफेसर श्री उमानाथ झा

अंगरेजीक एक कथनक अनुसार गलती करब मनुष्यक स्वभाव किन्तु क्षमा देवोचित। मनुष्य विवेकशील प्राणी होइछ परन्तु परिस्थितिविशेष मे विवेक शून्य भए जाइत अछि। आओर तखन ओकरा सँ अपराध होइत छैक। बाद मे अपन विवेकहीन कार्यपर ओकरा दुःख होइत छैक तथा ओ अपन त्रुटिक मार्जन करबाक प्रयास करैत अछि। आर्य लोकनिक त्रिकाल सन्ध्याक एक मात्र उद्देश्य आत्म-विश्लेषण छल। जहिना जल बाहरक मैल धोइत अछि तहिना ओ सभ प्रकारक दुश्चरितक मार्जन करओ। 'यदुच्छिष्टमभोज्यं यद्वा दुश्चरितं मम सर्वं पुनन्तु मामापो असतां च प्रतिग्रहं'। आथिमे सोन जकाँ पश्चात्ताप सँ अन्तःशुद्धि होइछ।

यौवनक तेज धार मे जे नहि भसिआयि ओ असाधारण मनुष्य। यौन-आकर्षणक आगू ऋषि-मुनि विचलित भए जाइत छलाह। देवराज जँ वज्र द्वारा असुर सँ अपन रक्षा करैत छलाह तँ रम्भा, मेनका, उर्वशी आदि द्वारा तपमग्न ऋषि सँ। आओर इन्द्र अपन एहि सेना केँ भंग करबाक विचार कहिओ कएलैन्हि तकर प्रायः कतहु उल्लेख नहि अछि। अप्सरा लोकनिकेँ 'छटनी'क विभीषिका कहिओ त्रस्त नहि कएलकैन्हि।

संसारक अनेक भक्त कवि भोगक बादहि योगमे प्रविष्ट भेलाह। सूर ओ तुलसीक जीवन वृत्तिसँ तँ सब परिचिते छी, निर्गुणवादी सन्त कबीरक गीत सँ ई नहि बूझि पड़ैछ जे हुनकर अनुभव अपूर्ण अथवा अप्रत्यक्ष रहैन्हि। अंगरेजी साहित्य मे एहि प्रसंग सत्रहम शतीक कवि डन (Donne) तथा हर्बर्ट (Herbert)क स्मरण होइछ। विद्यापतिक पदावली तथा अंगरेजीक 'मेटाफिजिकल' परम्पराक कविताक सादृश्य दिसि कतेक विद्वानक ध्यान गेलैन्हि अछि। (गतवर्ष मित्रवर श्री अमरनाथ ठाकुर एकगोट निबन्ध लिखने रहथि से संयोग ओ प्रमादवश अन्य लेखकक कृतिक रूप मे हालहि मे प्रकाशित भेल, से सुनबा मे आएल), परञ्च प्रायः ओलोकनि भावक अपेक्षा काव्य-कौशलक प्रति विशेष दत्तचित्त रहल होएताह। ई अत्यन्त स्वाभाविक परन्तु विद्यापतिक जीवनक अपराह्नक किछु पद पर दृष्टिपात कएला सँ अँगरेजी साहित्य सँ परिचित पाठक केँ अनायास डन तथा हर्बर्टक स्मरण होएतैन्हि।

डन तथा हर्बर्ट दुनू कवि अपन जीवनक पूर्वार्ध राजदरबार मे बितओल। बाद मे दुनू मसीही पुरोहितक रूप मे अभिषिक्त भेलाह। हुनक आरम्भिक रचना ऐहलौकिक (विशेषतः शृंगारिक) छैन्हि परन्तु बाद मे ओ भक्तमूलक पद रचलैन्हि जाहिमे अनेक ठाम ओ अपन उच्छृंखल युवावस्थाक उल्लेख करैत पश्चाताप प्रकट कएलैन्हि अछि। उदाहरणस्वरूप निम्नलिखित उद्धरण द्रष्टव्य—

(a) I dave not move my dim eyes any way,
Despair behind, and death before does cast
O such terror, and my feeble flesh doth waste
By sin in it, which it, t'wards hell doth weigh.

—Holy Sonnets.

(b) Wilt thou forgive that sin, by which I have won
Others to sin, and made my sin their door ?
Wilt thou forgive that sin which I did shun
A year or two, but wallowed in a score ?

—A Hymn to God the father.

(c) 'Oh my black soul ! now thou art summoned
By sickness, death's herald, and champion;
Thou art line a pilgrim, which abroad hath done
Treason, and durst not turn to whence be, is fled,'

—Holy Sonnets.

हर्बर्टक कवित्व शक्ति प्रायः हुनक अभिषेकक बादहि जगलैन्हि। The Temple नामक अपन कविताक संग्रह केँ ओ पहिल फल (first fruits) कहि ईश्वर केँ समर्पित कएलैन्हि। इहो सम्भव जे अपन प्रारम्भिक रचना केँ ओ नष्ट कए देलैन्हि कारण जे ओ अवश्य प्रणय-सम्बन्धी रहल होएत। परञ्च हुनक भक्ति प्रधान कविता मे अपन विलासपूर्ण अतीतक हेतु अनुतापक भाव देखि पड़ैछ। निम्नलिखित किछु उद्धरण उदाहरणार्थ प्रस्तुत अछि—

(a) O do not use me
After my sins ! look not on my desert,
But on my glory; then thou wilt reform
And not refuse me;

(b) Awake, sad heart, whom sorrow ever drowns;
Take up thine eyes, which feed on earth;
Unfold thy forehead, gathered into frowns;
Thy saviour comes, and with Him mirth, ...

(c) Sorry Iam, my God, sorry Iam
That my offences course it in a ring.

(d) Wherefore my faults and sins
Lord, I acknowledge; take thy plaques away.

विद्यापतिक पदावलीक अध्ययन सँ ई बुझना जाइछ जे जीवन अपराह्न मे विद्यापति कें सेहो भोगक प्रति वितृष्णा उत्पन्न भए गेलैन्हि तथा ओ अपन सद्गतिक निमित्त देवी-देवताक प्रार्थना कएलैन्हि। एही भक्ति प्रधान पद मे दश गोट पद एहन अछि जाहि मे कविक अनुतापक अभिव्यक्ति भेल अछि। प्रस्तुत निबंध मे ओही दशो पदक संक्षिप्त विवेचन कएल जाइछ।

बंगाल मे विद्यापति-रचित राधा कृष्णक प्रणय गीत कें वैष्णव लोकनि अपनाओल, एतेक धरि जे जाहि गीत मे राधा-माधवक उल्लेख नहि छल ओकरहु नायक नायिकाकें राधा कृष्ण मानि ओकरा भक्ति प्रधान मानल। जे कोनो कारण होउक मिथिला मे कालक्रमे विद्यापतिक श्रृंगार-रस-प्रधान पद सभक अपेक्षा नचारी आदि भक्ति-प्रधान पदक प्रचार अधिक भेल। फलतः भक्ति-प्रधान पद मौखिक परम्परा पर आधारित रहलाक कारणें सब प्रकारक भाषा परिवर्तन सँ तँ प्रभावित होएबे कएल ओहि सब मे पाठान्तर सेहो बहुत अधिक मात्रा मे आबि गेलैक। संगहि एहि मे क्षेपकक प्राचुर्य सेहो बूझि पड़ैछ। तें ओकर वर्तमान रूप देखला सँ ओकर प्रामाणिकता मे संशय आश्चर्यजनक नहि। विद्यापतिक पदक प्रामाणिक संग्रह (canon) मे एहि पद सब कें राखल जाए वा नहि ई एहन प्रश्न जकर पक्ष तथा विपक्ष मे अनेक तर्क उपस्थित कएल जाए सकैत अछि। प्रस्तुत निबंध मे ओकरा विद्यापति-रचित किन्तु न्यूनाधिक विकृत मानि कए ओकर विवेचन होइछ यद्यपि ओकर पूर्ण गवेषणाक अभाव मे एहि मत कें अन्तिम मानब उचित नहि।

एक कें प्रायः छोड़ि अनुतापमूलक ई दशो पद खूब प्रसिद्ध अछि। एहिमे दू गोट नेपाल-पोथी मे छैक, एक बेनीपुरीक संग्रह मे अछि (पाठान्तर चन्दाझाक पाण्डुलिपि) मे शेष सात नगेन्द्रनाथ गुप्त 'पद कल्प तरु' वा अन्य स्रोत सँ लेलैन्हि। एक गोट पदक पाठान्तर पण्डित श्री रमानाथ झा द्वारा गंगा नाथ झा रिसर्च इन्स्टीच्यूटक पत्रिका मे प्रकाशित भेल। एहि दशो पद मे पाँच गोट शिव-भक्तिक

अछि, एकमे हरिहर सँ प्रार्थना कएल गेल अछि, तीन मे कृष्ण भक्ति प्रकट अछि तथा एक मे अछि रामक प्रार्थना। विद्यापति पदावली मे रामभक्तिक पद इएह एक गोट मात्र अछि, परन्तु एक तँ ई विद्यापतिक भनिता युक्त नेपाल पोथी मे उपलब्ध अछि, दोसर भावक दृष्टि सँ ई प्रस्तुत नओ अन्य पदक सदृश्य अछि तेँ एकरहु विद्यापतिक रचना मानल।

एहिमे कोनो संदेह नहि जे ई दसो पद विद्यापतिक वृद्धावस्थाक थिक तथा एहि मे कवि अपन सद्गतिक हेतु कोनो ने कोनो देवी-देवताक प्रार्थना करैत छथि संगहि जीवनक अधिकांश समयक दुरुपयोगक चर्चा सेहो करैत छथि। रचना तिथि अज्ञात रहबाक कारणेँ कविक मनोभावक क्रमिक परिवर्त्तनक विषय मे निश्चित रूपेँ किछु कहब कठिन परन्तु एहि मे संदेह नहि जे अभिसार-संभोग आदिक पद कविक युवावस्थाक थिक, प्रेम सम्बन्धी आन पद ओकर बादक तथा भक्ति गीत वृद्धावस्थाक। आराध्य देव वा देवीक आकृतिक वर्णन—हुनक विस्तृत 'ध्यान'—यद्यपि भारतीय परम्परान्तर्गत अछि तथापि राधाक वयःसन्धि (यथा 'पहिल बदरि कुच पुन नवरंग' मे) अथवा नख-शिख (यथा 'माधव की कहब सुन्दरि रूपे' मे) आदिक वर्णन केँ भक्तिक अभिव्यक्ति मानब असंगत बुझना जाइछ। नायक नायिका सम्बन्धी अनेक पद मे राधाकृष्णक उल्लेख नहि भेटैत अछि। एहि प्रकारक अनेक पद राजनामांकित सेहो नहि अछि तेँ ई कहब जे दरबारी कवि रहबाक कारणेँ विद्यापति अपन पोषकक रुचिक अनुसारे श्रृंगार प्रधान पदक रचना कएलैन्हि मान्य नहि। तेँ जखन अनुताप प्रधान पद मे कवि अपन विलासी जीवनक प्रति क्षमा याचना करैत छथि तँ एहिमे कोन आश्चर्य ?

जाहि पाँच शिव गीत मे विद्यापति पश्चाताप प्रकट कएलैन्हि अछि ओकर प्रथम पंक्ति एहि प्रकारक अछि—

(१) सिब हो उतरब पार कओन विधि

विद्यापति पदावली (हिन्दी संस्करण)

मजुमदार —७७९

रमानाथ झा प्राचीन गीत — २७

(२) हर जनि बिसरब मो ममिता

मजुमदार —७७४

(३) बरिस चातर चिते बेआकुल

मजुमदार —६१५

झा — ३४

(४) तोंह प्रभु त्रिभुवन नाथे

मजुमदार —७७५

झा — २५

(५) शिव संकर हे, भलि अनुमति कल भेला

मजुमदार —७७६

पहिल पद मे कवि भवसागर पार उतरबाक निमित्त महादेवक प्रार्थना करैत छथि। अपन अतीतक प्रसंग कविक शब्द अछि—

"नहि कैल गुरु सेवा नहि कैल जाप,
खितल तीनू पन करइत पाप।"

परञ्च पाचक व्याख्या नहि करैत छथि। एहि उक्तिक प्रसंग ई कहल जाए सकैत अछि जे ई औपचारिक सूत्र (formula) मात्र थिक, परञ्च विचारणीय अना पद सभक सन्दर्भ मे एहि मत कें त्याग करए पड़त।

दोसर पद मे कवि कहैत छथि—

हर जनि बिसरब मो ममिता
हम नर अधम परम पतिता
तुअ सन अधम उधार न दोसर
हम सन जग नहि पतिता।

दुर्भाग्यवश ई पद ततेक विकृत रूप मे उपलब्ध अछि जे एहिमे विद्यापतिक भनिता देखि आश्चर्य होइत अछि।

'चरित चातुर' पद भाषा-भाव दुनू दृष्टि सँ सन्तोषजनक यद्यपि कविक अनेकानेक पदक समान इहो पाठशुद्धिक अपेक्षा रखैत अछि। एहि पद मे कवि कोनो पारम्परिक सूत्रक व्यवहार नहि कएलेन्हि अछि। भावावेशमे ई सम्भवो नहि। जाहि 'पुत्रकलत्र' सहोदर बान्धव'क निमित्त कविक 'बितल तिनू पन करइत पाप' जीवनक चारिम चरणमे हुनका सबसँ उपेक्षित भए कवि कातर स्वरें आर्त्तनाद कए उठैत छथि—

'ए हर मोसाओं नाह, मो जनि देह उपेखि'

कारण स्पष्ट अछि। मरणोपरान्त जखन यमराजक समस्त लेखा जोखा उपस्थित होएत तखन ओ की उत्तर देथिन्ह? कवि कहैत छथि—

अपथ पथ हम चरण चलाओल
भगतिहि मति न देल।

पर धन धनि मानस लाओल
मिथ्या जनम दुर गेल ।
कपट पर कलेवर गोड़ल मदन-गोहे''

'परधनि' ? अभिनव जयदेवक जीवन पर पण्डितराजक शब्द मे कोनो 'सुल्तानी लवंगी कुरंगी'क छाया पड़ल रहैन्हि की नहि तकर कोनो बाह्य प्रमाण नहि अछि परन्च सब प्रकारक नायिकाक वर्णन कएनिहार कवि केवल कल्पनाक आश्रय लेलैन्हि वा संस्कृत काव्यरूपी चश्माक व्यवहार कएलैन्हि से मान्य नहि। पदावली मे प्रत्यक्ष अनुभवक ततेक प्रमाण अछि जे ओकर उपेक्षा पूर्वाग्रह सँ अन्ध भएह कए सकैत छथि। तेँ विद्यापतिक चित्तक व्याकुलता केँ औपचारिक नहि यथार्थ मानए पड़त।

'तोँह प्रभु त्रिभुवन नाथे हे हर' एक गोट महेशवाणी थिक। एहि मे कवि संकट त्राणक हेतु महादेव सँ प्रार्थना करैत छथि। ई संकट ऐहिक नहि थिक से एहि पंक्ति सँ स्पष्ट अछि—

''करम धरम तपहीने हे हर, पड़लहुँ पाप अधीने''

पद छोट तथा अनलंकृत अछि परन्च एकर भावक अकृत्रिमता मे रत्ती भरि संदेह नहि। कवि अपन शिव प्रार्थनाक उपर्युक्त पाँचम पदक विषय मे कहल जाइछ जे एहि मे उपास्यदेव बाणेश्वर महादेवक उपासना कएलैन्हि अछि। किंवदन्ती अछि जे बिस्फीक उत्तर भेड़वा ग्राम मे जे बाणेश्वर महादेव छथि हुनके मन्दिर मे विद्यापति पूजा करैत छलाह। एहि पद मे परोक्ष रूपेँ कवि अपन अतीतक चर्चा करैत छथि—

''स्रवन नयन गेले तनु अवसन भेले
जदि तोहे होएब परसने।
की करब ततिखने होय गज मनि धने
झखइते बेआकुल मने॥''

स्पष्ट अछि जे कवि जीवन भरि श्रवण-नयन आदिक तृप्ति तथा ऐहिक सुखक निमित्त हय, गज, मणि, धनक चिन्ता कएलैन्हि परन्तु देहावसानक समय हुनका केवल भगवान शंकरक प्रसन्नता अपेक्षित रहैन्हि। तेँ—

''ईंद चाँद गन हरि कमलासन
सबे परिहरि हमे देवा।
भगत बछल प्रभु बान महेसर
ई जानि कइल तुअ सेवा॥''

पञ्चदेवोपासक, कृष्णभक्त विद्यापति सब देवता केँ छोड़ि महादेवक चरण गहल।

एहि दश मे तीनि पद जे कृष्ण कें सम्बोधित कए रचल गेल अछि ओकर प्रथम पंक्ति एहि प्रकारक छैक—

(१) तातल सैकत वारि बिन्दु सम

मजुमदार—७७६
झा — ३३

(२) माधव बहुत मिनति कर तोय

मजुमदार—७७१
झा — ३५

(३) जतने जतेक धन पापे बटोरल

मजुमदार—७७०
झा — ३२

काव्यक दृष्टिएँ एहि मे पहिल सर्वोत्तम। 'तातल सैकत वारि बिन्दु' तथा 'सागर लहरिक उपमा पर कोनो कवि कें गर्व भए सकैत छन्हि। 'परिनाम निरासा' कालिदासक 'दिवसा परिणाम रमणीयाः' कें प्रतिध्वनित कए ग्रीष्म एवं शिशिरक वैषम्यक प्रति ध्यान आकृष्ट करैत अछि। पश्चात्तापक अभिव्यक्ति एहि सँ नीक आओर की होइत ?—

तातल सैकत वारि बिन्दु सम सुतमित रमणि समाजे,
तोहें बिसरि मन ताहि समर्पल अब मझु हब कोन काजे।
आध जनम हम नीन्दे गमाओल जरा शिशु कत दिन गेला,
निधुवन रमणी रस रंगे मातल तोहे भजब कोन बेला॥"

कविक निराशा 'जगतारन दीनदयामय'क ऊपर 'तारण भार' समर्पित कए विस्वास मे परिणत भए जाइत छैन्हि।

प्रसंगवश एहिठाम ई कहब उचित जे एहि वर्गक पाँच पद मे भवसागर पार उतारबाक रूपक विभिन्न रूपमे प्रयुक्त भेल अछि। यथा—

"शिव हो उतरब पार कओन विधि"........
"तुअ पद परिहरि पाप पयोनिधि पार होएब
कओन उपाय"........
"भनहि विद्यापति अतिशय कातर तरइते इह
भव सिन्धु"........
"बेड़ भासल मांझ धारे हे हर भैरव धर कसआरे"........

एहि सँ ई बात स्पष्ट अछि जे 'समन समय' मे कवि आशा-निराशा, भय-विश्वास सँ आन्दोलित छलाह। एहि संशयक कारण ? विचारणीय पद सब मे कवि स्वयं कए-बेर एहि प्रश्नक उत्तर देने छथि।

दोसर पद मे माधव सँ 'बहुत मिनति' करैत कवि तर्कक सेहो आश्रय लैत छथि—

गणइते दोष गुण लेश न पाओबि जब तुहुँ
करब बिचार।
तुहुँ जग तारन जगते कहाओसि
जग बाहिर नहि मोञे छार॥"

तर्कक एहि प्रकारक प्रयोग भक्ति परम्पराक अनुरूप। उदाहरण स्वरूप पण्डित राजक 'गंगा लहरी' तथा शंकराचार्यक 'अपराध क्षमापन' स्तोत्र द्रष्टव्य।

तेसर पद अनुतापक भावना सँ ओतप्रोत अछि। 'जतने जतेक धन पापे बटोरलहुँ' स्पष्टतः दरबारी जीवन केँ इङ्गित करैत अछि। इहो निश्चित जे कविक अभिप्राय कोनहु अज्ञात पाप सँ नहि छलैन्ह आओर नहि ओ धनोपार्जन मात्र केँ पाप बुझैत छलाह। एहि प्रकारक आन पदक अभाव मे ई सब ग्राह्य होइत परञ्च पूर्व आलोचित पद केँ पढ़ला सँ संशयक स्थान नहि रहैत अछि। किन्तु अन्यत्र जए-बाक काज कोन जखन एही पद मे कवि कहैत छथि—

"जावत जनम हम तुअ न सेवल पद
युवति मति सँ मेलि।
अमृत तेजि किए हलाहल पीउल
सम्पदे विपदहि भेलि॥"

'खेत कएल रखवारे लूटल' मे प्रयुक्त रूपक सँ ई देखि पड़ैछ जे कविक दरबारी जीवन एकर रचनाकाल मे धूमिल अतीतक अङ्ग बनि चुकल छल। दरबारी कवि साधारणतः खेती ओ बनिजक स्मरण किए करताह ? पद-संघटनक दृष्टि सँ ई विशेष महत्त्वक, कारण एहि मे वाणिज्यक रूपक मेरुदण्डक समान अछि। खेतक 'रखवार' ओ मोति-मजीठ-कनकक 'चोर' एक्के, अर्थात् 'मनमथ'। कहबाक आवश्यकता नहि जे मोती, मजीठ (जाहि सँ लाल रङ्ग बनैत छल) तथा सुवर्ण प्रसाधन ओ शृङ्गारक वस्तु तेँ ऐहिक सुख वा भोगक प्रतीक। कवि केँ ओहि प्रकारक वाणिज्य सँ हानि भेलैन्हि तेँ ओ अन्त समय मे लाभदायक रामभक्तिक बणिजक प्रचार छथि।

प्रस्तुत निबन्ध मे विचारणीय अन्तिम पदक उपलब्ध दू पाठ मे बड़ अन्तर छैक। तरौनी-ताल पत्र पर आधारित नगेन्द्र नाथ गुप्तक पाठ अपूर्ण ओ भनिता-

विहीन छैन्हि। पं० श्री रमानाथ झा जीक द्वारा झा रिसर्च जर्नल मे प्रकाशित पाठ एक शब्दक अतिरिक्त पूर्ण तथा भनितायुक्त अछि। इहो पाठ पूर्ण सन्तोषजनक नहि बुझना जाइछ, परन्तु एहि ठाम एहि प्रश्न पर विचार करब अप्रासङ्गिक। ध्यान देवाक बात ई जे बयसक प्रति उक्तिक रूप मे कवि अपन जीवनक सिंहावलोकन कएलन्हि अछि। अपन युवावस्थाक सम्बन्ध मे कवि कहैत छथि—

" जौवन दसा खोजि खोअओलसि
काँच कपूर तमोर।
दुइ सिरिफल छाह सोअओलासि
कोमल कामिनि कोर। "

कहब अनावश्यक जे एहि प्रकारक भाव प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ आलोच्य सब पद मे भेटैत अछि।

उपर्युक्त विवेचन सँ एहि विचारक खण्डन होइत अछि जे विद्यापतिक राधा-कृष्ण वा नायक नायिका-सम्बन्धी पद शृङ्गारिक नहि। राधा-कृष्ण सम्बन्धी पद यदि वैष्णव साहित्यक अविच्छिन्न अङ्ग बनि गेल तँ ओहि सँ ई निष्कर्ष नहि बहराइत अछि जे ओहि पदक उद्भव शृङ्गार नहि अपितु भक्ति मे छैक। विद्यापतिक पद तथा वैष्णव पदावलीक आन रचनाक सूक्ष्म विवेचन सँ ई बात स्पष्ट भए जाइत अछि।

यदा कदा इहो मत व्यक्त होइत अछि जे विद्यापतिक प्रणय-गीत रहस्यवादी कविताक समान आध्यात्मिक अछि। एहि प्रसङ्ग एतबए कहब पर्याप्त जे एहि प्रकारक मत पूर्वाग्रह वा प्रमाद पर आधारित अछि। कोनो रहस्यवादी कविताक समक्ष— ओ पाश्चात्य हो वा भारतीय विद्यापतिक कविता केँ रखला सँ कोनहु मर्मज्ञ पाठक केँ दुनूक मौलिक अन्तर बुझबा मे देरी नहि लगतैन्ह।

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे उपर्युक्त दस पद विद्यापतिक रचानक अर्थबोध तथा मूल्याङ्कन मे बड़ सहायक अछि। विद्यापतिक जीवन एवं व्यक्तित्व विषयक ज्ञान सेहो एहि दस पद सँ बढ़ैत अछि। इहो कहब अत्युक्ति नहि होएत जे उपर्युक्त पद विद्यापतिक कवि-जीवन केँ नवीन रूप मे प्रकट करैत अछि।

●

विद्यापतिक किछु कवितामे दुखक विविध रूप

प्रोफेसर श्री दामोदर ठाकुर

शृङ्गार साहित्यक रस हैवाक संगहि जीवनक स्वाभाविक अनुभव सेहो अछि। कोनो कोनो साहित्यिक कृति मे शृङ्गारक रस आ जीवनक अनुभव मे सम्बन्ध ओ सामंजस्य रहैत अछि आ अहि कारण सँ साहित्यक रस, काल्पनिक ओ विचित्र अनुभव नहि भए स्वाभाविक अनुभवक विशिष्ट आ सूक्ष्म स्वरूपक सृजन भाए आ जीवन दुनू मे करैत रहैत अछि। कविता जीवनक विशिष्ट आ उन्नत अवस्थाक मापदण्ड अछि। तेँ यदि साहित्यक शृङ्गार रस आ जीवनक शृङ्गार अनुभव आ शृङ्गार बोध मे वैषम्य होय तँ साहित्यक रस उत्तरोत्तर कल्पने टा पर आधारित होइत जायत। साहित्यक सृजनकारी कल्पना निर्द्वन्द्व, स्वच्छन्द कल्पना नहि थिक, कारण स्वच्छन्द कल्पना तँ अभिलाषाक चित्रे टा प्रस्तुत कए सकैत अछि। कोनो रस केँ विशेषकए यदि हम स्वच्छन्द कल्पना सँ नहि किन्तु अनुभवगत ज्ञान सँ देखबाक चेष्टा करी तँ अपन प्रसंग द्वारा ओ रस एकटा स्वतन्त्र अनुभवक अनेकरूपता प्राप्त करत। अनुभवक स्पष्ट ध्यान सँ रसक एकांगी, एक-पक्षीय, साहित्यशास्त्र-वर्णित रूप प्रत्यक्ष अनुभवक अनेक सूक्ष्म परस्पर बन्धन सँ विलीन भए जायत। तखन शृंगार रस जनित अनुभव सँ कवि आन भाव सृजनक, शृंगारक सामान्य कविता नहि बनाए, तेहन कविता बनवैत छथि जाहि मे शृंगार आ अन्य रस अनुभवक नव संतुलन रहैत छथि।

विद्यापतिक स्वाभाविक अनुभव हमरा लोकनिक अनुभव सँ बहुत भिन्न अछि। किन्तु जे अनुभवक अवशेष चिह्न आ चिह्न योग परिवर्त्तनशील रूप हमरा लोकनि केँ भावागत अथवा समाजगत ज्ञान सँ भेटैछ, ताहि सँ हमरा लोकनि बूझि सकैत छी जे विद्यापति कविताक रस आ जीवनक अनुभव के एकत्र करबा मे सक्षम छथि। कविता आ जीवनक रस केँ एना एकत्र कए सकब समर्थ (Major) कविक चिह्न। कते कवि एहन छथि जे विशेष आ कठिन प्रयास सँ एहेन सामर्थ्य प्राप्त करैत छथि आ अनुभवक कोनो विशेष अंग परि हुनका लोकनिक सामर्थ्य सीमित रहैत छैन्ह। जेना Dryden आ Wordsworth समर्थ कवि रहितो जीवनक कते तरहक अनुभव केँ कविताक रस संगे एकरूप कए भाषा मे प्रत्यक्ष नहि कए सकैत छथि। शृंगार रसक कविता केँ विद्यापति एहन उदार अनुभूति आ सहज अनेकरूपता संगे

आन स्वाभाविक अनुभवक परिप्रेक्ष्य मे लीन कए दैत छथिन्ह जे श्रृंगार रसक कलात्मक भावा-प्रयोग पूर्ण कविताक भाषा प्रवाह मे अपन विशेष अर्थक वक्रात्मकता समाहित करैत एक श्रोत भए जाइत छैक। हमसब इहो देखैत छी जे कविता मे कवि श्रृंगारक कलात्मक आनन्दक स्पष्ट अनुभव कए रहल छथि आ संगहि संग अहि आनन्द सँ फराक अनुभव जेकर भाषा प्रथम बेर कलात्मक बनि रहल अछि पूर्ण कविता कें (श्रृंगार अथवा कोनो रस ओ कलात्मक श्रोत विशेषक दृष्टि सँ) पूर्णतया अप्रत्याशित गम्भीरता प्रदान कए रहल छैक। ई तथ्य जहिना विद्यापतिक श्रृंगार प्रधान कविता मे देखबा मे अबैत अछि तहिना हुनकर भक्ति अथवा धर्मप्रधान कविता मे देखबा मे अबैत अछि। जखन विशेष सौन्दर्यप्रधान रागात्मक भषाक प्रयोग विद्यापति करैत छथि तखनो स्वाभावोक्ति अथवा लोकोक्तिक भाषागत चमत्कार सँ अप्रत्याशित रूप सँ साधारण जीवन आ कवित्व रसपूर्ण कलाकृति दुनूक समान रूप अर्थ गाम्भीर्य प्रत्यक्ष करैत छथि। विकास, काव्य-विलास आ सौन्दर्य विलास दुनू श्रृंगारक क्षीण दिशा थिक जतए श्रृंगारक अभिव्यक्ति आ सृजन दुनूक प्राण-संचार सीमित आ क्षीण भेल जाइत छैक। वियोग आ दुख तँ अनेक समान दशाक हेतु एक नाम भेल, किन्तु स्वाभाविक जीवन सँ अनुभवक सामग्री लए कए विद्यापति अपन श्रृंगार, भक्ति, ज्ञान सबहक स्वाद कलाक दृष्टि सँ असाधारण बनबैत छथि। वियोग सँ फराक दुख-श्रृंगार कविताक लेल जहुना नव वस्तु आ विद्यापतिक भाषा मे अहि सब दुखक कल्पना एतें स्पष्ट आ प्रखर छैक जे श्रृंगार एहन विस्तृत अनुभवक एकरसता धरि पहुँचबाक प्रयास मे, अपनो स्वर के आओर गम्भीर आ सामर्थ्यवान बनबैत अछि। जेना राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित विद्यापति पदावली (दोसर भाग)क आठम कविता ली—

चिन्ता जे आसा कबलिल मोरि

भाषाक व्यवहारगत अर्थ मे चिन्ता शुद्ध चिन्तन क्रिया सँ फराक दुखक भेद भेल। वियोगक कलात्मक अभिव्यक्ति आन स्वाभाविक अनुभव कें संयोग आ प्रक्रिया सँ सामान्य जीवन आ भाषा जकाँ विश्वस्त आ स्पष्ट भएजाइत अछि। कविताक पंक्तिक प्रसंग मे,'आसा' सँ विरोध द्वारा, चिन्ताक अर्थ निराशा सन भए जाइत छैक। चिन्ता आ आशा दुनू मे भविष्यक विचार छैक तेँ कविताक पंक्ति सहज आ छोट किन्तु तकरा विपरीत, अनुभव मे जीवनक दीर्घकालक भावना संचित बुझि पड़ैत छैक।

दोसर पंक्ति मे—

कान कदु भेलि कहिनी तोरि।

श्रृंगारक कोनो विशेष प्रसंग अथवा तृतीयवचनक रीति अनुसार कविता मे जे स्थान होइक, कविताक अनुभव मे आन समान अनुभव दिस प्रसार नहि भेने, अर्थ रीति

ओ काव्यनुसार बान्हल रहत। जीवित साहित्यक कविता आ प्रथम कोटिक कविता कखनो एना, कविताक सृजन सँ पूर्व निश्चित अर्थ अथवा अनुभव संबद्ध नहि रहि सकैत छक। वियोग अथवा निराशाक दुख कर्णकटु बाक्यक दुख नहि कहायँछ। तेँ कविताक अपन भाषा आ अनुभवक प्रसंगानुसार बढ़बाक अनेक सम्भावित दिशा कविता सब मे दृष्टिगत होइत छैक आ कवि अपन विशेष गुण सँ ओहि सम्भावना मे अपन अनुभवक प्रत्यक्ष दृष्टि सँ किछु सम्भावना केँ अपन कविता मे आवश्यक बना दैत छथिन। कानकटु लोकभाषाटाक प्रयोग नहि थिक, प्रेमक आ विरहक आ एकान्त आ कलात्मक अनुभवक सामाजिक ओ स्वाभाविक अंग थिक। कानकटु आ कहिनीक अर्थ मे मैथिली भाषा मे विशेष सम्बन्ध छैक। अहिना तेसर पंक्ति मे फेदायल सन शब्द मे मनक आ शरीरक दुखक जे स्पष्ट रूप आ प्रसंग अंकित छैक से विद्यापतिक शृंगार कल्पना सँ पृथक नहि कयल जा सकैत अछि।

पावनि दीप मिझायल आज मे मिथिलाक पुरान जीवन आ संस्कृतिक चित्र देखि सकैत छी। किन्तु कोनो कविक लक्ष्य कहियो ई कहब नहि रहैत छैक जे हमरा समाज मे पावनि होइत अछि आ कि Cocktail party होइ अछि आ ओहि मे दीप जरायल जाइ छै कि gin पील जाई छै। कवि केँ तँ ओहि भावक जिज्ञासा रहइ छैक जे दीप मिझा गेला पर, अथवा Cocktail party क अन्त मे जखन एकटा अपरिचित अतिथि के छोड़ि एकान्त भए जाइत छैक तखन उदित होइत छैक। चिन्ता, निराशा, कर्णकटुताक संगे अपशकुन सँ जे अज्ञात भयक आशंका होइत छैक आ कि पुष्पवेला मे अन्धकारक मूर्त्ति सँ जे अभिव्यक्ति होइत छैक तेकर संयोजक क्रिया सँ अहि कविताक सृष्टि प्रवाह देखि सकैत छी। अहि भाव-प्रवाहक चित्र मे विद्यापतिक अनेको कविता मे रहस्य अनुभवक सनातन अंग मानल। भनिता मे जे राजा रानी छथि से रसिके नहि, अहि अनुभवक रहस्यक ज्ञाता से हो छथि। वर्णित अनुभव हुनके छियन्हि। जकरे होइत छैक सएह जनैत छैक। भनिता सँ पहिल पद मे सेहो विद्यापति कहैत छथि —

तञोजनितसि आओो दोसर कान्ह
तेसर जनइत हमर पराण।

इहो एकटा दुख भेल जे किओ दुख बूझि नहि सकल।

९म कविता मे वियोगिनी नारी जे अपना केँ अभागलि कहए तँ सोझबात भेल—एकटा वाक्य धरि, एकटा अनुभवक बिन्दु धरि सीमित रहल। किन्तु जहिना कोनो नीक कविता सब वाक्यक सुबद्ध शृंखला होइत छैक तहिना भिन्न अनुभवक शृंखला से हो हेबाक चाही। अभागलिक बादक पंक्ति मे विद्यापति कहैत छथि—साजनि हमर दिवस दोस। अभागलि सम्बोधन टा नहि रहिकए जीवनक एक पक्ष—समय

परिवर्तन, सुख दुखक परिवर्तन सेहो। एकर दोसर दिसि एकरा संतुलित करैत विद्यापति आपद आ धैरज दुनूक प्रयोग कएलैन्हि। स्पष्टतः आपद आ धैरज श्रृंगारक प्रसंगे टा मे उपयुक्त नहि होइत छैक, आपद आ धैरज शब्द आ अनुभव दुनू सँ बेसी जीवनक कर्मक्षेत्र मे उपयुक्त। धैरजे जकाँ 'उपाय' सेहो एकटा शब्द भेल जकरा आपद आ संताप सँ विशेष सम्बन्ध छैक। श्रृंगार सुलभ कोमलता संगे स्थिरता आ पुरुषताक अभिव्यक्ति एहन कविताक अपन गुण। अहिना यद्यपि वर्णन अभिसारक अछि—किन्तु प्रथम भाव-क्षणक मूर्ति-पृथक अछि—धैर्य आ पौरुष सँ ओत-प्रोत अछि—

जलद बरसि जलधार
सर जओ पलय पहार।

काजर श्रृंगारक प्रसंगक शब्द किन्तु 'भुअंगम भीम' क सत्ता पृथक, स्वतंत्र। तहिना विद्यापतिक अनुभव आ भाषा श्रृंगारक रीति सँ स्वतन्त्र अछि। श्रृंगार रस सँ भिन्न सशक्त भाषाक उपयोग सँ पूर्ण कविता मे जीवनक उदार आ बहुमुखी अनुभवक स्पष्ट क्रिया देखि सकैत छी।

१२म कविता मे एक दिसि—बिनती, युवती चुम्बन, नअन, काजर अहि तरहक शब्दावली अछि तँ ओकरा साक्षात रतन, हाथि, सिंह, महेसर, सेखर, चन्दा सेहो अर्थशक्ति आ सौन्दर्य बोधक दृष्टि सँ कविता मे भावक नव विधान स्थापित करैत अछि।

सर, सरसिज, सूरक विद्यापतिक श्रृंगारपूर्ण रचना सँ सब परिचित छी—तैँ ओहने शब्द योजना सँ स्वतन्त्र प्रसंगक भाव आ दुखक भाव व्यक्त भेला सँ विद्यापतिक अनुभव आ शैली जे रीति स्वतन्त्र छनि से बुझि सकैत छी। सर आ सरसिजक एकटा वास्तविक दशाक भाव विद्यापति व्यक्त करैत छथि—

सूखल सर सरसिज भेल झाल।

झाल 'सूखल' सँ बेसी लोक भाषाक विचित्रता सँ पूर्ण शब्द बुझि पड़ैत अछि जकर विश्लेषण भाषाक विद्वान् लोकनि कए सकताह किन्तु कविताक शैलीमे तँ स्पष्ट अछि जे जेना एक दिसि हमरा सर सरसिज, तरुन तरनि सँ सम्भव सौन्दर्य आ पूर्व वर्णित कविताक प्रसंगक स्मरण होइत अछि तहिना 'सूखल, झाल, न रहल हाल' सँ रौदीक दुखक कठिन आ स्पष्ट चित्र प्रकट होइत छैक। सर, सरसिज जकाँ बराबर सेहो पाण्डित्यपूर्ण, कलात्मक अभिव्यंजनाक मूर्तिमान शब्द, अवश्ये मैथिली भाषा मात्र मे आ विद्यापतिक कविता मे एहन भाषाक प्रयोग अत्यन्त सहज आ प्रवाहमय छैक। तैओ कविताक पंक्ति मे एक सँ स्वाभाविक कथनक तीव्रता, एकाग्रता आर स्पष्टता

छैक-पोखरि सूखि गेल, कमल झड़ि गेल, प्रचण्ड रौद मे माछक कोनो हाल नहि रहल। खेत मे दराड़ि पड़ि कए पाताल देखय लागल। आबउ मेघ नहि बरसइ छैक। विद्यापतिक शैली सँ जे उत्कंठा आ तीव्रता शब्दक अंग प्रत्यंग सँ आ पद मे शब्द योजना सँ अभिव्यक्त होइत छैक-से साधारण जीवनक दुख कें कलात्मक शैली संगे एकरूप कए दैत छैक। 'अबहुँ धराधर धरसिन धार' मे जेहन पुनरुक्ति छैक तेकरा वक्रोक्ति सँ पुनरुक्तवदाभास सेहो कहि सकैत छी। धाराधर आब धाराधर नहि छथि।

जलधर, जलधन पर्यायवाची शब्द द्वारा सघन भाषा सँ दैन्य दिसि इंगित होइत छैक। यद्यपि सम्भवतः शब्द भंडार मे जलधन विद्यापति सँ पूर्व प्राप्त होयत, किन्तु यथार्थ प्रयोग अर्थ-गौरव जेहन विद्यापति व्यंग्यात्मक वक्रोक्ति दारा अहिठाम प्रस्तुत कैने छथि से हिनकर विशिष्टता छनि। अतेक विद्यापति नागरक समान मेघोक विवेकक चर्चा करैत छथि तताए कविताक अप्रत्याशित रीति-उत्पन्न चमत्कार अछि। आन भनिता जकां अहू मे राय शिवसिंहक उल्लेख छनि। हुनकर लखिमा-देवी कन्त आ रसमन्त कहल गेल छनि। किन्तु आश्चर्य ई जे अहू ठाम राजा शिवसिंह अहि दशाक मर्म बेसी बुझता से उचिते बुझि पड़ैत अछि। धरतीक एहन दारुण दशा भए जाय तँ राजा अवश्ये बुझत। रसमन्त बुझायल दशा कें, विवेकशील श्रेष्ठ पुरुष मेघक अविवेक आ पिआसल लोकक गारि श्राप कें उपयुक्त बुझनिहार छथि। वस्तुतः धरतीक भरल रसमय रूप सँगे राजाक जे शृंगारमय परिपूर्ण ध्यानक विद्यापति अपन कविता मे उल्लेख करैत छथि तकर किछु सादृश्य छैक—आ शृंगार आ दुख विविध अनुभूति मे सनातन द्वन्द्वक कारण, उच्च कोटिक कविता मे दुनु एक दोसरा कें परिपूर्ण करक हेतु प्रवेश करैत रहैत छैक।

४७म कविता मे व्यापार आ प्रेमक तुलना भाषा मे निहित अछि।

से अतिनागर लग्नी रस सार।
पसरओ बीथी पेम पसार॥

दुनू पक्ष एक समान राखि (अतिनागर रस-सार) खेल अथवा बाजार पसार जेकां पसरओ आ पसारक पुनरुक्ति मे प्रेम, क्रिड़ा अथवा व्यापारे जकां अछि। तहिना यौवन नगर जकां साधारण वस्तु आ ओइठाम रूप, स्वरूप आ रसक खोज अछि—किन्तु बेसाहत, मुलइहह, बनजार पसारे जकां हाट-बजारक साधारण प्रसंगक शब्द अछि। मोल-भाव सँ स्वरूपक अनुपात रहबाक जे रीति उपदेश अछि ताहि सँ अपन सरूप बेसी बुझय आ अनका जाति भमे गमार बुझी दिसि संकेत छैक। एहन विरोध विद्यापति अहि प्रसंगमे अनेको बेर व्यवहार करैत छथि—जे कृष्ण गोआर छथि आ ई गमार छथि आ कृष्ण नागर छथि। रूपगर्विता कें शृंगारक प्रसंग सँ बाहर भाषा

मे रीति उपदेशक विद्यापति काव्यकौशल आ भावमर्मज्ञता द्वारा शृंगार शैलीक अपन व्यक्तिगत काव्यधर्मक अनुसार विकास करैत छथि। बहुत रूप आ रसक मर्मज्ञ नागर कृष्ण मे आ अनेक रस-रूप-व्यापार मर्मज्ञ कवि मे बहुत सादृश्यता छनि। तैं जहिना मर्मज्ञ रस ओ रूप कें भावना मात्रक अतिरंजित आवेश सं फराक यथार्थ जकां बुझैत छथि तहिना विद्यापति रस आ रूप कें केवल कवीत्वमय शैली मे बद्ध ओ सीमित नहि मानैत छथि।

५०म कविता मे प्रेमक परिवर्तनक उपमा, विद्यापति बाढ़िक पानि सं दैत छथि। जेना भमर आ फूलक उपमा शृंगारक कविताक एकटा स्थायी अंग छैक तहिना बाढ़िक पानि एकटा नव तरहक उपमा आ विद्यापति कोन कोटिक कवि छथि तकर अन्दाज अही सँ कए सकैत छी जे दुनू उपमा क्रमानुसार एके कवितामे अछि आ दुनू पर एहन सहज अधिकार छनि कवि कें, शृङ्गारक रीति आ जीवनक नीति कें समानभाव सँ एक अर्थ मे ओ बुझइ छथि आ कविता मे ओकर निर्वाह करैत छथि। जीवन बहुमुखी आ परिवर्तनशील भेलो पर, शृङ्गारक प्रसंग कें मानव जीवनक अर्थ-बोध सन पूर्ण दृष्टि दैत विद्यापति कविताक भाषा मे कहैत छथि—

फिर भए चाहिअ अपन गेआन।
मधु लए के घुर मधुपक संग।
भावर गौरव ई बड़ रंग॥

भमर आ फूलक उपमामे भमर आ फूलक असादृश्य सं उत्पन्न ई वक्रोक्ति अत्यन्त सरल बुझि पड़ैछ—कृत्रिम चमत्कार कखनो एते सरल नहि बुझि पड़ैत छैक। यदि कोनो कवि कें विद्यापति जतए कि हुनकासँ बहुत कम्मो कौशल होइतनि किन्तु हुनकाजकां जीवनक सत्य मे निष्ठा नहि होइतनि तँ ओ अवश्ये एकरे श्रेष्ठ चमत्कार बुझितथि जे पुष्प जकां भए गेल। विद्यापतिक शृङ्गारक कवितामे विस्तृत जीवनक जे सघन भार छैक ताहि सं हुनकर काव्यकौशल सदा संतुलित आ कविकर्मरत रहैत छैक।

महाकवि विद्यापतिक राजनीतिक मूल्यांकन

डॉ० शङ्कर कुमार झा,

विद्यापतिक लोकप्रियता दिनानुदिन ततेक बढ़ल जा रहल अछि जे मिथिलांचलक कोन कथा समस्त आर्यावर्त्त मे सोत्साह श्रद्धापूर्वक 'विद्यापतिपर्वक' आयोजन द्वारा ओहि महापुरुषक प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कयल जाइछ, जे एक तरहें मिथिला ओ भारतीय संस्कृतिक गौरवक पर्यायवाची भए गेल छथि। ई कहब कोनो संकीर्ण जातिगत वा सम्प्रदायगत पक्षपात नहि मानल जाए सकैछ कारण भारत सरकार स्वयं हुनक कृतित्व ओ वर्त्तमान राष्ट्रीय सन्दर्भ मे ओकर महत्त्व स्वीकार कए हुनक सम्मान मे हुनक जन्मतिथिक अवसर पर डाकटिकट जारी कैलक अछि। एतबे नहि; विद्यापतिक काव्य सौरभ ततेक सम्मोहक ओ आकर्षक अछि जे भारते नहि; देश विदेश सेहो हुनक ख्याति समाने स्तर पर पसरल अछि—तें तँ भौतिकवादी दर्शनक मुख्यस्थान रूस मे पर्यन्त, रूसीभाषा मे पर्यन्त 'विद्यापति पदावलीक' अनुवाद भेल अछि। महाकविक प्रतिभा एक विश्वकविक प्रतिभा अछि जकर पुष्टि यू० एन० एस० को० सन अन्तर्राष्ट्रीय संस्था विभिन्न देशक विशिष्ट साहित्यक–विश्वक मुख्य भाषा सब मे ताहि मध्य अंग्रेजी भाषामध्य 'आर्चर' महोदयक परिचयात्मक लेखक संग विद्यापतिक एक सय गीतक प्रकाशन–द्वारा स्वस्पष्ट अछि। जँ महाकवि कें नैसर्गिक प्रतिभा नहि रहितन्हि तँ नावेल पुरस्कार विजेता कविकुल शिरोमणि कवीन्द्र रवीन्द्र हिनक काव्य सौष्ठवपर एना मुग्ध किऐक होइतथि आ हुनकहि अनुशरण मे 'भानु सिंहेर पदावलीक' नामे अमर काव्य सृजन किऐक करितथि? जँ विद्यापतिक काव्य मे साहित्यिक विलक्षणता वा अभूत पूर्व रसास्वाद नहि छलैन्ह तँ किऐक महर्षि अरविन्द सन आध्यात्मिक मनीषी अपन जीवन यौवनक चरमोत्कर्ष मे बीछल पद सभक स्वान्तः सुखाय अंगरेजी मे अनुवाद कयलनि। एखनहुँ, जे बंगालक प्रबुद्ध वर्ग एहिबातक सगर्व प्रचार करैत छथि जे विद्यापतिक गुण-गौरवक आविष्कार ओ प्रचार करबाक श्रेय बंगाल कें छैक, ओ हिन्दी साहित्य मे विद्यापति कें मात्र एक विख्यात रसिक हिन्दी कवि सिद्ध करबाक एखनहुँ जे असफल अभियान चलि रहल अछि से इएह सिद्ध करैत अछि जे कविक रूप मे विद्यापतिक तेहन मौलिक प्रतिभा अछि जकर उपमा नहि देल

जाए सकैछ । महाकवि 'माधव कत तोर करव बड़ाई, 'उपमा तोहर करब ककरा संग कहितहुँ अधिक लजाई' जतबे' नैसर्गिक निकुंजवनक माधवक हेतु उपयुक्त, ततबे कविता काननक शाश्वत चिर-नवीन माधवक हेतु । अस्तु; विद्यापति कवि रूपें मेटे वा दान्ते, कालिदास वा टैगोर सँ जँ आगाँ नहि तँ हुनक समकक्ष अवश्य छथि, ई सर्व स्वीकृत ओ अकाट्य सत्य अछि ।

परञ्च विद्यापति केँ मात्र एक पैघ कविक रूप मे देखब की ओहि महान् बहु-मुखी प्रतिभाक प्रति अन्याय नहि ? जे कविक संग-संग महान् समाज सेवी, कुशल राजनीतिज्ञ, शास्त्र विद् विधिवेत्ता,सफल प्रशासक, मधुर गायक ओ अद्वितीय इतिहास-कार छलाह । ई हर्षक विषय थिक जे स्वतन्त्र भारत मे सांस्कृतिक नव जागरणक जे लहरि आएल अछि ताहि क्रम मे विद्यापति सम्बन्धी अध्ययन ओ शोध कार्य सँ क्रमशः विद्यापतिक व्यक्तित्वक विभिन्न पक्ष पर प्रकाश देल जाए रहल अछि । ओना, स्वतन्त्रता सँ पूर्वहु कतोक गोटे विद्यापतिक काव्यगुणक अतिरिक्त अन्यान्य पक्ष सभ पर ध्यान देने छलाह यथा स्वनामधन्य महामहोपाध्याय पं० हर प्रसाद शास्त्री कीर्तिलताक बंगला अनुवादक भूमिका मे विद्यापति केँ एक समसामयिक इतिहासकारक रूप मे देखबाक आग्रह कयने छलाह । पं० शिव नन्दन ठाकुर द्वारा संकलित ओ सम्पादित 'महाकवि विद्यापति'क भूमिका मे सेहो एहि बातक प्रयास कयल गेल अछि जे विद्या-पतिक ज्ञान राजनीति, इतिहास ओ भूगोल ओ अनेकानेक क्षेत्र मे जतबे प्रकार छल ततबे व्यवहारिक राजनीति मे हुनक कर्म क्षेत्र व्यापक छल । स्वतन्त्राक बादहुँ एहि दिशा मे स्तुत्य प्रयास कइल अछि । श्री रामनाथ झा, पुरुष परीक्षाक भूमिका मे ई सिद्ध करबाक प्रयास कयलनि जे विद्यापति एक एहन महान् समाज सुधारक छलाह जे सरल सुबोध मैथिली सन जनभाषाक माध्यम सँ चिर उपेक्षिता मिथिलाक नारीक उद्धारक हेतु ओ सामन्तवाद सँ जर्जर आर्थिक सामाजिक विषमता सँ परिपूर्ण समाजक कठेक ने कुरीतिक विरुद्ध आवाज उठाओल । श्री राधा कृष्ण चौधरी ओ डा० श्री उपेन्द्र ठाकुर क्रमशः 'हिस्ट्री ऑफ बिहार' आ 'हिस्ट्री ऑफ मिथिला'क सामग्री जुटेबा मे, विशेषकए तत्कालीन युगक चित्र उपस्थित करबामे विद्यापतिक अनेको पोथीक प्रामाणिकता स्वीकार कैने छथि । प्रोफेसर श्री चौधरी मिथिलामिहिर मे प्रकाशित एक लेख मे विद्यापतिक संगीतज्ञ होएबाक प्रासंगिक चर्चा करैत हुनक प्रभाव गुरुदेवक कालबैशाखीक संगीत पर होएब सिद्ध कयने छथि । स्व० महामहोपाध्याय डाक्टर उमेश मिश्र ओ डाक्टर श्री जयकान्त मिश्रक सम्पादन मे तीरभुक्ति सँ प्रकाशित विद्यापतिक नाटक 'गोरक्ष विजय' मे ई अप्रत्यक्ष रूप सँ देखाओल गेल अछि जे विद्यापति एक नाटककार सेहो छलाह तथा हुनक नाटक परम्परागत संस्कृत

नाटकक अनुसरण होइतो सर्वथा मौलिक अछि। पटना उच्चन्यायालयक भूतपूर्व मुख्यन्यायाधीश पं० श्री लक्ष्मीकान्त झा 'Studies in Law' (स्टडीज इन लॉ) पुस्तक मे 'मिथिलाक निबन्धकारगण' शीर्षक मध्य विद्यापतिक कनिएक प्रतिष्ठित निबन्धकारक रूपमे कयने छथि जाहि मे विद्यापतिक ऐतिहासिक परिचयक संग-संग निबन्धग्रन्थक सेहो उल्लेख अछि। ओ विद्यापति विरचित 'विभागसार' मे वर्णित विधिक दृष्टिएँ स्त्री धनक विशुद्ध मैथिल पारिवारिक विवेचन सँ ततेक प्रभावित छथि जे कतेक ने परिश्रम ओ व्यय सँ ओहि पोथीक हस्तलिपि ऊपर कए कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक भूतपूर्व उपकुलपति डाक्टर सोहोंनीक सौजन्य सँ ओकरा प्रकाशित कराय रहल छथि। विद्यापतिक धार्मिक समुदायक सम्बन्ध जे निरर्थक विवाद बंगाली विद्वान् लोकनि दिसिसँ प्रारम्भ भए के चलल आबि रहल अछि जे विद्यापति चैतन्य महाप्रभुक प्रेरक परमपूज्य वैष्णव छलाह, तँ विद्यापति शैव छलाह से आब निश्चित रूपे समाप्त भए रहल अछि। श्री रमानाथ झा, साहित्य अकादमी मे मैथिलीक प्रतिनिधि तथा जयदेव गांगुली सन बंगाली विद्वान् आब एहि निष्कर्ष पर आबि गेल छथि जे विद्यापति विश्वक महान् धर्मात्मा ईसामसीह, •बुद्ध, गाँधी ओ टैगोरे जकाँ सर्वधर्म समन्वयक पक्षपाती छलाह जाहि सँ धार्मिक एकता बनल रहए, ओ तेँ हुनका कोनो धर्म विशेषक परिधि मे नहि बान्हल जाए सकैछ।

मुदा एतेक प्रयास भेलो सन्ता विद्यापतिक जीवन ओ दर्शनक कैकटा पक्ष एहन अछि जे महत्वपूर्ण होइतो जन साधारणक कोनकथा बृहद् समाजहुक ध्यान आकर्षित नहि कए सकल अछि। हम एहि लेख मे इएह चेष्टा कयल अछि जे विद्यापतिक काव्यक मोहक माधुर्यसँ जनमानस ततेक परिप्लावित ओ आच्छादित अछि जे हुनक जीवनक सभसँ विशेष महत्त्वपूर्ण भाग— राजनीतिज्ञ विद्यापतिक सिद्धान्त ओ व्यवहार दिसि ओकर ध्यान जाइतो नहि छैक। अद्यावधि एहि दृष्टिकोण सँ कतहु कहिओ विद्यापतिक अध्ययनो नहि कएल गेल अछि, ओना वातावरण मे ई गप्प छिड़ियागेल अछि जकर प्रमाण जे पटना मे आयोजित विद्यापति पर्वक अध्यक्षता करैत बिहारक भूतपूर्व मुख्यमंत्री पण्डित श्री बिनोदानन्द झा समर्थ बजलाह जे विद्यापति एक राजनैतिक चिन्तक छलाह। दुर्भाग्यवश, हुनक जाहि-जाहि पोथीक आधार पर, मुख्यतया हुनक राजनैतिक रूपक चित्र भेटि सकैत छल ताहि मे पुरुष-परीक्षा छोड़ि सम्यक् रूपें शुद्ध पाठ युक्त कम्मे पोथी उपलब्ध अछि ओ जेहो उपलब्ध अछि यथा 'लिखनावली' 'मणिमंजरी' 'भूपरिक्रमा'—से ततेक जर्जर ओ अशुद्ध प्रतिलिपि अछि जे ओकर अध्ययन करब सर्वथा कठिन। कतोक पोथी यथा 'विभागसार' अद्यावधि प्रकाशितो नहि भए सकल अछि। 'कीर्तिपताका' सन पोथी जे म० म० डा० उमेश मिश्रक सौजन्यसँ प्रकाशितो भेल अछि ताहिमे सम्भवतः दोसर आन

पोथीक किछु भाग मिलर भए जएबाक दोष आबि गेल अछि जे डाक्टर अरविन्द तथा प्रोफेसर श्री रमानाथ झा सेहो स्वीकार कयने छथि। एक कारण इहो जे साहित्यिक इतिहासकार लोकनि हिन्दीक महारथीक संग-संग मैथिलीक जयकान्त बाबू परि विद्यापतिक राजनैतिक पक्षक चर्चा पर्यन्त नहि कएने छथि, ओ तें विद्यापतिक पाठक लोकनिकें ई कहिओ स्वाभाविको उत्कण्ठा नहि भेलैन्ह जे विद्यापतिक साहित्यिक पक्षक अतिरिक्तो हुनक आन पक्ष दिसि ध्यान दए सकथि। इतिहास ओ राजनीति शास्त्रक अध्ययन सँ हमरा ई प्रेरणा भेटल अछि जे जाहि युग ओ सामाजिक पृष्ठभूमिक उत्पत्ति विद्यापति थिकाह ताहि मे राजनीति, अर्थनीतिक गूढ़ ज्ञानक समावेश होएब ओ साहित्य सृजनक राजनैतिक परिवेश होएब ध्रुव, तें हम हिनक आनरूप छोड़ि विशुद्ध राजनैतिक रूपक अध्ययन करबाक प्रयास कएल अछि।

महाकविक जीवन वृत्तान्त सँ परिचित समाजक हेतु ई बूझब कठिन नहि होयबाक चाही जे ओ समकालीन परिस्थितिक आधार पर विद्यापतिक जीवन ओ कृतित्व मे राजनैतिक पुट होयब ओतबे आवश्यक जतबा पूर्व दिसि सूर्योदय होयब। विश्वसाहित्य सँ अवगत छात्र कें लगले ई स्मरण भए जयतैन्हि जे महाकवि दान्ते, शेक्सपीयर, चौसर, लैंगलैण्ड, मिल्टनक काव्यक पाछाँ हुनक राजनैतिक परिवेश कतेक दृढ़ रूपें समाविष्ट अछि। विद्यापतिक जन्म ओ जीवन दुनूक्षण राजनैतिक अराजकताजन्य अस्थिरता मध्य। दिल्ली सुलतानक राजनैतिक ह्रासक क्रम मे प्रायः सभ दिसि प्रान्तीय शासकगण ओ छोट-छोट अर्धसार्वभौम राज्य सभ अपन पूर्ण स्वाधीनताक घोषणाकए एकात्मक राज्यक हँसी उड़ा रहल छल। मिथिला—जे पूर्ण स्वाधीन राज्य तँ कहियो नहि छल—सेहो आन निकटवर्ती राज्यक देखादेखी कखनो दिल्ली कखनो प्रान्तीय सामंत शासकक उपेक्षा करैत अनेकानेक आक्रमण सँ आक्रान्त छल। एहन संघर्षशील क्रान्तिकारी युग मे उत्पन्न भावुक व्यक्तित्व जँ क्रान्तिक अग्रदूत हो त कोन आश्चर्य? विद्यापतिक परिवार 'ठक्कुर'क परिवार छल। 'ठक्कुर' उपाधि सामंती उपाधि छल आ सामंत होयबाक कारणे राज्य सुख समृद्धि मे हिनक ओ हिनक समस्त परिवारक पूर्ण मनोयोग होयब उचिते बुझबाक चाही। हिनक कतोक पूर्वज यथा चण्डेश्वर, वीरेश्वर, गणेश्वर, उच्च राज्य पदाधिकारी यथा महामत्तक (आधुनिक गृहमंत्री) महासंधिविग्रहिक (परराष्ट्र मंत्री) प्राक् विवाद (आधुनिक मुख्य-न्यायाधीश) छलथिन। ई स्वयं सन्धिविग्रहक होयबाक संग-संग पुरोहित रूपें 'सभ्य' छलाह ज्ञातव्य जे पाश्चात्य सामंतवादी व्यवस्था जकाँ मिथिला मे सेहो राज्य-आश्रित सामन्त लोकनि कें राजाक संग युद्ध मे भाग लेबय पड़ैत छलैन्हि, तें विद्यापति, चन्दबरदाई जकाँ कविरूपें नहि समर्थ सामन्त सरकारी पदाधिकारीक

रूपमे मिथिलाक राजा शिवसिंह ओ आनो राजा लोकनिक संगे युद्ध क्षेत्र मे जाइत छल होयताह; ओ गेलो छल होयताह से विश्वास कयल जा सकैछ। गेल होयताह से निश्चित रूपें एहि कारणे कहैत छी जे 'कीर्तिलता' ओ 'कीर्तिपताका' मे युद्धक जे जीवन्त ओ यथार्थ वर्णन अछि से मात्र कल्पना शक्ति सँ सम्भव नहि। विद्यापतिक तँ यद्यपि कल्पनो शक्ति ततेक उर्वरा ओ चमत्कारक छलैन्हि जे हुनका प्रसंग शंका सम्भव नहि—जे बिनु देखने सद्यःस्नाता ओ आगि फुकैत कोमलांगीक नख-शिख वर्णन कए सकैत अछि, तकरा सँ असम्भवे की? राजदरबारक जे सान्निध्य ओ सम्मान हिनका कीर्तिसिंह, शिवसिंह ओ हुनक उत्तराधिकारी शासकगण सँ भेटलैन्ह तकरा देखैत ई स्वतः विश्वास भए जाइत अछि जे ई मिथिलाक ओइनिवार राजवंशक स्थायित्व, अभ्युदय ओ शक्ति बिस्तारक हेतु अपन बुद्धि ओ बाहुबल सँ किछु उठा नहि रखने होयताह। चण्डेश्वरक 'राजनीति रत्नाकार' ओ भट्ट लक्ष्मीधरक जे विद्यापतिहिक सदृश्च बंगाल राज्यक सन्धिविग्रहिक छलाह, राजधर्म सँ अनुप्रेरित भए राजनीति सम्बन्धी पोथी पुरुषपरीक्षा लिखल जकरा ओ स्वयं 'दण्डनीति' विषय कहने छथि। एकर अतिरिक्त कीर्तिलता, कीर्तिपताकासन ऐतिहासिक काव्यमालाक परम्परा मे मौलिक रूपें अवहट्ठ मे लिखल ग्रन्थ मे विद्यापति तत्कालीन संदर्भ मे राजनैतिक मुक्तिक सन्देश व्यक्त कयल। ताहु सँ बेसी 'लिखनावली' मे राजा, सेनापति, चर, दूत, सन्धि, साक्षी, राज्यपदाधिकारी यथा पार्णागारिक, भांडागारिक, मुकद्दम आदि तत्कालीन प्राचीन प्रशासकीय, शब्दावलीक प्रयोग द्वारा ओ सिद्ध कए देलन्हि जे ओ जँ सर्वथा राजनैतिक पुरुष नहि छलाह तँ कम सँ कम ओतबे राजनैतिक अवश्य छलाह जतेक साहित्यिक।

पृष्ठभूमि छोड़ि आब हुनक राजनीति विषयक ग्रन्थक समीक्षा आवश्यक। 'पुरुष परीक्षा' विशुद्ध दण्डनीति विषयक ग्रन्थ थिक से मात्र कविक अपन स्पष्ट उक्तिमेटा सँ नहि सिद्ध होइत अछि—आश्चर्य जे श्री रमानाथ झा कें एकरा 'दण्ड-नीति विषयक' ग्रन्थ होयबा पर किएक शंका भेलैन्ह—एहिमे तँ इहो एकटा स्पष्ट प्रमाण अछि जे ओहिमे न्यूनाधिकमात्रा मे प्रायः ओहि सातो अंगक उल्लेख अछि जकरा प्राचीन भारतीय राजनीति शास्त्र मे 'सप्ताङ्ग' कहल गेल छैक। प्राचीन भारतक राजनैतिक आदर्श मनु सँ लय 'शुक' धरि धर्मसम्मत राजतंत्र रहल अछि, तँ ओहि परम्पराक क्रम मे विद्यापति सेहो आदर्श राजधर्मक मौलिक मापदण्ड उपस्थित कयल। ज्ञातव्य जे पुरुष परीक्षा मे वर्णित कथा समूह मे चौबीसटा कथा राजा पर केन्द्रित अछि, सतहटा मंत्रीपर, मोर पथिक मे राजकुमार-राजकुमारीक उल्लेख आयल अछि। पुरुष परीक्षाक 'अनुशयी' कथा मे सनातन भारतीय राजनीतिक सार एहि रूपें मुखरित भेल अछि—धर्ममर्जय राजेन्द्र! धर्मोराजस्यकारणम् कथमन्ये

नराः सर्वे नरदेवः कथं भवान्"। राजाक सफलताक रहस्य प्राच्य एवं पाश्चात्य दुहु राजदर्शन मे इएह मानल गेल अछि जे राजा पुत्रवत् अपन प्रजाक पालन करैत सम्मान पूर्वक अपन मन्त्रीक मंत्र मानि शासन करय इएह भाव एहि श्लोक मे द्रष्टव्य —

"विरक्ता मन्त्रिणो यस्य तस्य राज्येकुतः स्थितः
विरक्तासु प्रजास्वापुः क्षीणं भवति भूपतेः"

राजक स्थायित्वक हेतु सेना एवं कोषक महत्त्व कतेक अछि से जतवा कौटिल्यक एक अध्याय सँ स्पष्ट नहि होइत अछि ततवा विद्यापतिक एक श्लोक सँ—'राजा च विना सेनया न कुतः संभवति। सेना च धनाधीना'। आजुक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे राज्यक श्रीवृद्धिक निमित्त मैत्री सन्धिक जतेक महत्त्व अछि ततबे पन्द्रहम शताब्दीक अस्थिर राजनीति मे सेहो छल तें विद्यापति 'सुबुद्धिकथा' मे कहने छथि जे 'नष्टे कोषे, हते सैन्ये, भृत्येच विकृतिगते, कुलीनेन कृतामैत्री प्रंसः कल्पलतायते ॥ एवंप्रकारेण अनेकानेका दृष्टान्त सँ 'पुरुष परीक्षा' मे राजनैतिक विचारक परिपक्वता विद्यापति देने छथि जकर विशद व्याख्या एतय सम्भव नहि अछि–हम अपन शोध ग्रंथ मे देने छी।

विद्यापतिक सृजनात्मक व्यक्तित्व

श्री हरिहर झा

विद्यापति-काव्यक लोकप्रियता केवल विषयक आकर्षकता अथवा आह्लादकता पर निर्भर नहि रहल अछि अपितु ओहि विषयक समुचित उपस्थापनहु पर। बुझी तँ ओ विषय एतेक आकर्षक अथवा आह्लादक भेल किएक, तकरहु कारण ओकर उपस्थापने मे ताकए पड़त। कारण, सत्काव्ये मे किएक, सफल कलाकृति मात्रे मे अनुभूति एवं अभिव्यक्ति अविभाज्य रहैत अछि। कला जीवनक अनुभूति मात्रे नहि थिक; ओ तँ जीवन सँ संग्रहीत सामग्रीक संस्कार एवं संयोजक द्वारा सौन्दर्यक सृष्टि करैत अछि, साधारण केँ असाधारण बनबैत अछि, अव्यवस्थित केँ व्यवस्थित।

एकर अर्थ ई नहि जे विषय तथा उपस्थापनक दृष्टि सँ विद्यापतिक सबहि कविता समान रूपेँ सफल मानल जाए सकैत अछि। जखन कालिदास, शेक्सपियर, रवीन्द्रहुक सब रचना अवद्यता सँ मुक्त नहि अछि तखन विद्यापतिक विषय मे ई दावा करब दुराग्रह मात्र होएत। कारण, महाकविक महत्ता एहि मे नहि जे हुनक सब कृति सर्वगुण-सम्पन्न अछि अपितु एहि मे जे हुनक सृजनात्मक कार्यकलापक पाछाँ मे एक सचेष्ट, प्रयोगशील एवं विकासवान व्यक्तित्व परिलक्षित होइत रहैत अछि। पौर्वापर्यक आधार पर विवेचन कएला सँ जे सातत्य शेक्सपियर अथवा रवीन्द्रक रचना मे प्रतिभासित होइत अछि सएह विद्यापतिहुक रचना मे भेटैत अछि। टी०एस० इलियट शेक्सपियरक सबहि रचना केँ एक कविता मानैत छथि; कारण शेक्सपियरक सृजनात्मक व्यक्तित्वे ओकरा सब मेँ एकताक सूत्र मे बन्हने अछि। इएह बात विद्यापतिहुक रचना-समुदाय मे लागू होइत अछि। बुझी तँ हुनक समग्र कृतित्व, हुनक सचेष्ट, सृजनात्मक व्यक्तित्वेक अभिव्यक्ति थिक।

काव्य शाब्दिक अभिव्यक्तिक सर्वोच्च रूप थिक। कवि केँ अपन युगक चेतनाक चरम बिन्दु कहल गेल अछि। देखल गेल अछि जे महाकविक प्रादुर्भाव एहन समय मे होइत अछि जखन जनजीवनक विकासक क्रम मे भावजगतक संचित संभावना केँ मुखरित होएब सम्भवे टा नहि, आवश्यक भए गेल रहैत छैक। महाकवि ओहि पुञ्जीभूत किन्तु मूक सम्भावना केँ मुखर बनबैत छथि। अतः हुनका द्वारा भावजगतक विस्तारक संग-संग भाषा क्षेत्रक विस्तार स्वतः भए जाइत अछि। देशिल बयना केँ अपन अभिव्यक्तिक माध्यम बनाएब, जतए ततए सँ निर्विकार रूपेँ शब्द तथा बिम्बक

संकलन करब, कोनो अनुभूति कें सुन्दरतम रूप मे प्रेषित करबाक यथासम्भव प्रयास करब—ई सब विद्यापतिक महाकवित्वेक द्योतक थिक। हुनक आरम्भिक रचना मे जे युवकोचित भावप्रवणता, बिम्ब-सम्पदा एवं लयमयता भेटैत अछि तकरा पश्चातिक रचना मे उपलब्ध मांसलता, वास्तुपरकता, नियन्त्रण तथा श्लेषात्मकता सँ पृथक नहि कएल जाए सकैत अछि। कारण, ई सब ओही संवेदनशील, सृजनात्मक व्यक्तित्वक अभिन्न अंग थिक जाहि मे कालक्रमे नव-नव आयाम प्राप्त करबाक क्षमता छल। आओर कोनो कविक संवेदन कतेक व्यापक, सूक्ष्म एवं तीव्र भए सकैत अछि, एकर सबसँ स्पष्ट प्रमाण एहि बात मे भेटि सकैत अछि जे कोनो वस्तुस्थिति अथवा भाव-स्थिति मे ओकर प्रतिक्रिया कतेक व्यापक, सम्पन्न एवं क्षिप्र होइत अछि तथा ओहि प्रतिक्रियाक सम्पन्नता, क्षिप्रता एवं समग्र विशिष्टता कें कतेक सफल रूप मे उपस्थित कएल गेल अछि ? विद्यापतिक कवित्वक एहि पक्षक विवेचन हुनक प्रतिनिधि कविताक विश्लेषणेक द्वारा कएल जाए सकैत अछि; अर्थात् निमतिक रूप मे हुनक परीक्षण कएला सँ हुनक संवेदनशीलता एवं शिल्प-कुशलताक बीच परस्पर-स्पर्द्धित्व देखल जाए सकैत अछि।

विद्यापति-काव्यक नेवता सँ कम महत्वपूर्ण ओकर नाटकीयता नहि अछि। बुझी तँ नाटकीयता हुनक उपस्थापनशैली मे सन्निहित अछि एकर मूल रहस्य ई जे ओ जीवन कें गतिशील रूप मे देखैत छथि। रीतिकालीन कवि जकाँ ओ अनुभूति कें जीवन-प्रवाह सँ पृथक कए ओकरा सजएबाक पक्ष मे नहि छथि; कारण, एहि रूपें अनुभूतिक अलंकरण ओकर मरण सिद्ध होइत अछि। वस्तुतः उपस्थापनक नाटकीयता विद्यापतिक सृजनात्मक कल्पनाक सजगता एवं प्राणवत्ताक परिचायक थिक। ओ तँ अपन चेतना पर कोनो अनुभूतिक आघात सँ उत्पन्न प्रतिक्रिये कें अपन विषय-वस्तु बनबैत छथि तथा ओकर अखंडता कें सुन्दरतम रूप मे प्रेषित करबाक प्रयास करैत छथि। ओहि मनःस्थिति मे भाषा माध्यम मात्र बनि जाइत अछि; शब्द तथा बिम्बक स्वतन्त्र सत्ताक प्रश्न नहि उठैत अछि। एहन क्षण मे विद्यापति निर्विकार रूपें पीन पयोधरक तुलना कनक शम्भु सँ तथा ओहि पर डोलैत मोतिक हारक तुलना सुरसरि सँ करए लगैत छथि कारण, जखन कविक समग्र चेतना संलग्न रहैत अछि तखन ओकर अनुभूतिक भौतिक, आध्यात्मिक तथा बौद्धिक पक्षक पृथक्करण उचित नहि।

विद्यापति अपन विषयवस्तुँ कें नाटकीय स्थितिक रूप मे देखैत छथि। साधारणतः कविताक आरम्भे बड़ आकस्मिक ढंग सँ कएल जाइत अछि तथा ओकर पहिल पंक्ति विद्युत् शक्ति सँ आविष्ट तार जकाँ पाठक अथवा श्रोताक चेतना कें

झंकृत कए दैत अछि। उदाहरणतः "शैशव यौवन दरसन भेल!" "दिने दिने उन्नत पयोधर पीन"; "की आरे नव जौवन अभिरामा"; "माधव की कहब सुन्दरि रूपे"; "ससन परस खसु अम्बर रे देखल धनि देह"; "कामिनी करए सनाने"; 'आज पेखल नन्दकिशोर'; "सामरि हे झामर तोर देह"; "माधव कत तोर करब बड़ाई"; "वैयस कतए तजि गेला।" आओर जखन पाठक अथवा श्रोता सावधान भए जाइत अछि तखन ओकरा स्थिति विशेषक विकास एवं परिणति सँ अवगत कराओल जाइत अछि। मन्त्रमुग्धताक अवस्थे मे ओकर तादात्म्य कविकसंग भए सकैत अछि। कवि कोनो कामिनी केँ स्नान करैत देखैत छथि। आओर देखू हुनक प्रतिक्रिया केहन होइत अछि तथा ओकर विकास एवं परिणति कोना होइत अछि? सब सँ पहिने कविक मोन मे होइत छन्हि, "आजु मझु शुभ दिन भेला।" एहन एहन दिन विरले होइत अछि। केश सँ पानि खसैत देखि हुनका भान होइत छन्हि, "मेह बरिस जनि मोतिम हारा।" ओहि कामिनी केँ अपन मुँह कान पोछैत देखि ओ अनुभव करैत छथि, "माजि धएल जनि कनक मुकूटे"। आओर ओकर 'उदसल कुचजोरा' केँ देखि हुनका बुझि पड़ैत छन्हि जेना "पलटि बैसाओल कनक कटोरा।" ओकर हावभावकेँ देखि देखि कविक उत्तेजना उत्तरोत्तर बढ़ैत जाइत अछि आओर जखन ओ ओकरा नीवि-बन्ध खोलैत देखैत छथि तखन हुनका अनुभव होइत छन्हि, आब मनोरथ शेष भए गेल। वस्तुतः विद्यापति जखन कोनो अनुभूतिक सम्भावना केँ विकसित करैत रहैत छथि तखन ओ ओहि प्रक्रियाक प्रत्येक चरण मे पाठक अथवा श्रोताहु केँ अपना संग रखने रहैत छथि।

जतए कोनो अनुभूतिक सम्यक् प्रेषणक हेतु विद्यापति ओकर पृष्ठभूमिक उल्लेख आवश्यक बुझैत छथि ततए साधारणतः ओ पहिल दू पंक्ति मे—जे तेसर किन्तु मुख्य पंक्ति सँ पैघ होइत अछि—ओकर संक्षिप्त उल्लेख कए समुचित वातावरणक सृष्टि करैत छथि आओर तखन ओहि अनुभूतिक विकास एवं परिणति देखबैत छथि। "सुन्दरि तुअ मुख मंगल दाता" तथा "माधव हम परिणाम निराशा" एहि दुनू कविता मे उपस्थापन कइएहु विधा प्रयुक्त भेल अछि। पहिल कविताक प्रेमिकाक मुख एक विशेष क्षण मे ओकरा प्रेमी केँ मंगल-दाता बुझि पड़ैत छैक। विपरीत रतिक समय मे विगलित चिकुर ओकर मुखमंडल केँ घेर लेलक अछि; मणिमय कुंडल ओकर कान मे डोलि रहल अछि आओर सुरत जनित घाम मे ओकर तिलक बहि गेल अछि। एही अवस्था मे ओकर मुँख आनन्द-विह्वल प्रेमीक दृष्टि मे मंगल दाता बुझि पड़ि रहलैक अछि। यद्यपि सम्पूर्ण कविता प्रेमीक उक्ति थिक तथापि प्रेमिको केँ निष्क्रिय रूप मे नहि देखाओल गेल अछि। दुनू मे आदान-प्रदान भए रहल अछि प्रेमी ओकरा सौन्दर्य दैत अछि आओर ओ प्रेमी केँ मंगल। एहि

द्वन्द्वात्मक सम्बन्धक वर्णनक हेतु कवि सामरिक बिम्बक प्रयोग करैत छथि। अनुप्रासक सूक्ष्म प्रयोग वातावरणक निर्माण मे योगदान करैत अछि। एहि कविताक तुलना डन (Donne) क प्रसिद्ध कविता The Extasie सँ भए सकैत अछि; दुनू कविता मे स्त्री-पुरुषक बीच यौन-संबंधक भौतिक एवं आध्यात्मिक पक्षक सूक्ष्म समन्वय देखाओल गेल अछि। अनुभूतिक परिणतिक तुलना विद्यापति गंगा-यमुनाक तरंगक संगम सँ कएलन्हि अछि।

दोसर कविताक पहिल दू पंक्ति मे कवि अपन अतीत जीवन पर दृष्टिपात कए वर्त्तमान जीवनक दयनीयता दिसि ध्यान आकृष्ट करैत छथि। मोह-भंग, आत्म-ज्ञान अथवा पश्चात्तापक एहन स्पष्ट किन्तु सूक्ष्म एवं कारुणिक चित्रण अन्यत्र भेटब कठिन। भाव विह्वलता एवं यथार्थवादिताक समन्वय भेल अछि; कवि अपना कें आदि सँ अन्त धरि नियन्त्रित रखने रहैत छथि। शब्द तथा बिम्बक चयन मे अवश्यम्भाविताक भान होइत अछि। जहिना पहिल कविताक अंत तरंगक उल्लेख सँ भेल अछि तहिना दोसर कविताक अन्त 'लहरि'क उल्लेख सँ। तरंग अथवा लहरि गतिशीलताक प्रतीक थिक। कवि एहि दुनू शब्दक अनायास प्रयोग कए जीवन गतिशीलता दिसि, अनुभूतिक नित-नूतनता दिसि, इंगित करैत छथि।

वस्तुपरक दृष्टिकोणहु सँ कोनो अनुभूति कें उपस्थित करबा मे विद्यापति समान रूपें सफल भेल छथि। एकर एक उत्तम उदाहरण अछि वयस पर लिखल हुनक प्रसिद्ध कविता—"बएस कतए तेजि गेला"। एहि मे वयस सन अमूर्त विषय कें मूर्तरूप मे देखल गेल अछि। पश्चात्तापक स्थान स्वस्थ हास्य-बोध लए लेलक अछि। कवि बएस कें अर्थात् जीवन कें अर्थात् काल कें ई उलहन दए रहलाह अछि जे तोरहि सेवा मे हमर जनम 'बहि' गेल तथापि तों अपन नहि भए सकलाह। एहि प्रसंग मे 'बहल' शब्द बड़ मार्मिक सिद्ध भेल अछि—कविक जीवन रंग रभस मे केमहर दए कें बीत गेल से ओ नहि बुझि सकलाह। तेसर तथा चारिम पंक्तिमे "हे" शब्दक प्रयोग हुनक विवशता मिश्रित खेद कें सूक्ष्मता प्रदान करैत अछि। आओर अंतिम चारि पंक्ति स्पष्टता एवं यथार्थ वादिताक हेतु विशेष रूप सँ उल्लेखनीय अछि। कटु सत्य कें व्यक्त करबाक हेतु कवि ठेंठ एवं कर्णकटु शब्द तथा यथार्थ-वादी बिम्बक प्रयोग करबा मे एक्कोरती संकोच नहि कएलैन्हि अछि। समुचित संदर्भ मे प्रयुक्त भेला पर श्रुतिकटु शब्द-समुदाय हु उत्तम काव्य बनि सकैत अछि। शेक्सपियरक प्रसिद्ध पंक्ति "Bloody bawdy villain ! Remorseless, treacherous, becherous, Kindless villain !" एकर ज्वलन्त उदाहरण अछि। कविक दांत झड़ि मुंह पोपड़ भए गेलन्हि अछि आओर दांतहिक संग झड़ि गेल अछि हुनक 'सबे दाप'। कपुआएल सांप जकां बैसल ओ आब तीनू भुवन

देखैत छथि। भूत, वर्त्तमान एवं भविष्यक मर्म आब ओ जानि गेलाह अछि। "आँखि मलामलि दूर न सूझए वन फुटि गेल कासी"। अंतिम पंक्ति मे उपयुक्त शब्दक ध्वनिक द्वारा ओ उकासी सँ अवरुद्ध अपन वाणी दिसि संकेत करैत छथि— "धुआओ धराधर धरि निरोधिअ तर उपर उकासी।" श्लेषात्मक दृष्टिकोण आब कविक जीवन-दर्शनेक अभिन्न अंग बनि गेल अछि; ओ ओहि दृष्टिकोण सँ वाह्य जगतेटा केँ नहि, अपनहुँ के देखैत छथि। एहि कविता मे इहो विचारणीय अछि जे अकर अन्त कोनो भनिता सँ नहि कएल गेल अछि। एक तँ प्रायः कवि उकासीक कारण एहि सँ आगू नहि वाजि सकैत छथि, दोसर आब हुनका अपनहु कृतिक उपसंहार करबाक व्यामोह नहि रहल। आब हुनक जीवनेक उपसंहार निकट आबि गेल अछि। ई कविता वृद्धावस्था पर लिखल डब्लू॰ बी॰ यीट्सक कविता सबहक स्मरण करबैत अछि। किन्तु यीट्स केँ अन्तिम काल धरि सांसारिक जीवनक मोहकता सतबैत रहल तथा ओ खेदक भावना सँ अपना केँ मुक्त नहि कए सकलाह। विद्यापति भवितव्यताक प्रति स्वीकारात्मक दृष्टिकोण अपनावैत छथि। वस्तुतः हुनक सृजनात्मक व्यक्तित्वक आदि मे अन्त निहित अछि, तथा अन्त मे आदि। "In my beginning is my end".



पुनर्मूल्याङ्कनक प्रयोजन

श्री दीनानाथ झा

की हम विद्यापतिक प्रसंग किछु लिखबा वा कहबा मे समर्थ छी ? ई कहि हम अपन अज्ञता अथवा मध्यमवर्गीय औपचारिक विनम्रता नहि प्रगट कए रहल छी। यथार्थतः बाल्यावस्था सँ विद्यापतिक विषय मे ततेक कथा सुनल आ पढ़ल अछि आ ताहि सभ सँ माथ ततेक Biased भए गेल अछि जे आब अपनो दिशि सँ किछु कहि सकैत छी ताहि मे हमरा पूर्ण संदेह अछि। Biased शब्दक प्रयोग हम निन्दात्मक अर्थ मे नहि, प्रशंसात्मक अर्थ मे कएल अछि। विद्यापति कें कालिदास जकाँ पण्डित वर्गक 'स्थूलहस्तावलेपान्', कठोर व्यंग्यक प्रहार सहै पड़ल होयतनि से असंगत नहि। ताहि दिन मिथिला मे काव्य रस मर्मज्ञ वा आलोचकक अभाव नहि छल। प्रसन्नराघव सन नाटक तथा चन्द्रालोक सन अलंकार ग्रन्थक रचयिता पीयूषवर्ष जयदेव मिश्र हुनक समकालीन समवयस्क आ सहपाठी छलथिन्ह। यद्यपि मैथिली मे काव्य रचनाक मार्ग विद्यापति सँ शतावधि वर्ष पूर्वे ज्योतिरीश्वर आदि प्रतिष्ठित व्यक्ति प्रशस्त कए देने रहथि आ सम्भवतः विद्यापति सँ पूर्व बहुतो मैथिल कवि भए चुकल छलाह जनिक रचना दुर्भाग्यवश आब प्राप्त नहि अछि, तथापि विद्यापतिक गीत कें पण्डित लोकनि रजनी-सजनी बुझने होएथिन से कोनो आश्चर्य नहि। कतए संस्कृत आ कतए मैथिली। मुदा विद्यापति कें भवभूति जकाँ ई कहबाक प्रयोजन नहि पड़लन्हि जे कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी। आरम्भ मे पण्डित वर्ग सँ जे विरोध भेल होेउ लोक भाषा मे लिखबाक हेतु वा आन कोनो कारण सँ किछुए दिन बाद पाछाँ विद्यापतिक समक्ष पण्डित समाज कें हारि मानए पड़लनि। केओ आचार्य लिखने छथि--

काव्यं यशसे अर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतर क्षतये सद्यः परनिर्वृतये।

विद्यापति कें जिबितहि काव्य रचनाक उपर्युक्त सभ अभीष्ट फल प्राप्त भए गेलैन्हि। संस्कृतक एक सँ एक पण्डित ओ कविक अछैत 'सप्रक्रियाभिनव जयदेव महाराज पण्डित ठक्कुर' आदि राजकीय सम्मान सँ विभूषित-पुरस्कृत होयब कम गौरव आ सौभाग्यक विषय नहि। 'बालचन्द विज्जावहि भाषा दुहु नहि लजगइ दुज्जन हासा' आदि उक्ति वा लोकोक्तियो एहि विचार कें पुष्ट करैछ जे राजदरबारे मे नहि जन-मानसो पर अपन समय मे विद्यापतिक पूर्ण आधिपत्य स्थापित भए गेल छलनि। तहिया सँ अद्यपर्यन्त हुनक यशःकाय कहियो क्षीण वा मलिन नहि भेलनि। केहनो

बिहार बसात हो, दाही जरती हो कीर्त्तिलता पसरितहि गेल आ कीर्त्तिपताका फहराइते रहल।

तिहुअण खेतहि कान्तितुकित्तिवल्लि पसरेइ
रक्खर खंमारंभजंओ मंचावन्धिण देइ—

कीर्त्तिसिंह कें लक्ष्य कए लिखल गेल रहुए मुदा, उपयुक्त भेल कविएपर। अक्षर रूप खाम्हपर केहन मचान बान्हल गेल जे टुटबाक कथे कोन दिनानुदिन दृढ़तरे भेल जाइछ? ई बड़ रहस्यात्मक। विद्यापति स्वयं सम्भवतः एहि प्रश्नक उत्तर मात्र 'देसिल बयना सभ जन मिट्ठा' सँ दैत छथि। समकालीन काव्यरस मर्मज्ञ हुनका 'अभिनव जयदेव, सुकवि, वाणीरसास्वविद आदि उपाधि सँ विभूषित कएने छथिन्ह। 'अभिनव जयदेव'क की तात्पर्य से प्रायः स्पष्ट नहि। जयदेव सँ विद्यापति प्रभावित भेल रहथि सेहो स्पष्टे—गीतगोविन्दक शतशः पाँतीक अनुवाद पदावली मे भेटैछ। मुदा अभिनव जयदेव कहि विद्यापतिक आश्रयदाता गजरथेत्यादि समस्तप्रक्रियाविराजमान श्री मद्रामेश्वरीवर लब्ध प्रसाद भवानी मनभक्ति भावना परायण रूपनारायण महाराजाधिराज श्रीमच्छिव सिंह आ हुनक सर्वगुण सम्पन्न सभासद विद्यापतिक उचित सम्मान कएल अथवा कृपणता देखाओल, से विचारणीय प्रश्न। ओना तँ भाषा कविक हेतु संस्कृत पंडित मंडली सँ अभिनव जयदेवक मान्यता साधारण उपलब्धि नहि। एहि मान्यताक अर्थ भेल जे ललित पद संस्कृतेटा मे नहि लोक भाषाओ मे बनाओल जा सकैछ। ओहि युग मे जखन संस्कृतक प्राबल्य छल, लोकभाषा सभ धूली तँ ठेहुनिये दैत रहए, भारतवर्षक मुर्धन्य पण्डित वर्ग सँ संस्कृतक गढ़ मे एतबे कहा लेब—हरदा बजालेब कनिये टा बात नहि छल। अनुमान कएल जा सकैछ जे पण्डित लोकनि कें कतेक तारतम्य भेल होयतनि।

ई तँ एक पक्ष भेल। दोसर पक्ष ई जे अभिनव, अभिनवे, नव नहि। पण्डितलोकनि बड़े चतुरता सँ, शालीनता सँ विद्यापतिक मूल्य—जयदेव सँ बेसी नहि किछु कम्मे लगाओल। सुकवि आ वाणी रसास्वादविद् तँ ताहू सँ कम भेल। जें हेतु अभिनव जयदेवक उपाधिक कल्पना कयनिहार कोनो धुरन्धर पण्डिते छल होएताह। ई बूझब आवश्यक जे संस्कृत साहित्याकाश मे जयदेवक की स्थान छनि। व्यास-वाल्मीकि तँ अवदात छथि—सूर्य-चन्द्र जकाँ। आन कवि मे कालिदास, भास, भवभूति, माघ, भारवि, हर्ष, बाण आदिक उज्ज्वल नक्षत्र मण्डली मे जयदेव छथि की नहि सेहो संदेहास्पद। संस्कृत साहित्य मे Applied criticismक नितान्त अभाव अछि। काव्यक सिद्धान्त रूपें बड़ गम्भीर आ सूक्ष्म विवेचना कएल गेल अछि। ध्वनि, रस, वक्रोक्ति, अलंकार आदिक जेहन वैज्ञानिक विश्लेषण संस्कृत मे अछि सम्भवतः संसारक आन कोनो प्राचीन वा अर्वाचीन साहित्य मे नहि।

मुदा कोनो कविक कृतिक सांगोपांग विश्लेषण उपलब्ध नहि अछि। कवि प्रशंसा आ कवि समाज प्रशंसा मे कतोक उक्ति अवश्य अछि जाहि आधार पर ई अनुमान कएल जा सकैछ जे विद्वत्समाज मे कोन कविक की स्थान छलनि। यथा वाल्मीकिक प्रसंग मे—

वाल्मीकि कविसिंहस्य कविता वनचारिणः श्रृण्वन रामकथा नादं को न याति परंपदम् सदूषणापि निर्दोषा, सखरापि सुकोमला नमस्तस्मै कृता येन रम्या रम्या रामवती कथा इत्यादि। कालिदासक स्तुति मे तँ सहस्रशः श्लोक भेटत—

कवयः कालिदासाद्याः कवयो वयमप्यमी।
पर्वते परमाणौ च पदार्थत्वं प्रतिष्ठितं।
पुष्पेषु जातिर्नगरीषु काञ्ची नदीषु गंगा कविकालिदासः।
× × ×
पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठकारधिष्ठित-कालीदासः
अद्यापि तत् तुल्य कवेर भावाद् अनामिका स्वर्थवती बभूव। इत्यादि।

भारविक विषय मे—

प्रकाशं सर्वतो दिव्यं विदधाना सताम्मुदे
प्रबोधन परा हृदया भारवेरिव भारवेः।

माघक प्रसंग मे—

माघेन विघ्नितोत्साहा नोत्सहन्ते पदक्रमे
स्मरन्तो भारवेरेव कवयः कपयो यथा।
× × ×
उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थ गौरवं
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयोगुणाः।

एतए सभ कविस्तुति प्रस्तुत करब सम्भव वा आवश्यक नहि हमर ई प्रस्तावना जे कवि प्रशंसा कें मात्र प्रशंसा नहि मानल जाय। संक्षेप मे ओ कविलोकनिक कृतिक Total assessment थीक। कतहु कतहु एहि मे विभिन्न रुचि वा दृष्टिकोणक कारणें परस्पर विरोध अवश्य भेटत परन्तु ताहि सँ विशेष अन्तर नहि पड़ैछ। जयदेवक विषय मे पंडित लोकनिक की निर्णय भेल से अन्वेष्टव्य। मैथिल विद्वान शिरोमणि पक्षधर जे विद्यापतिक समकालीन छलाह जयदेवक नाम तक नहि लैत छथीन्ह।

यस्याश्चौरः चिकुरनिकुरः कर्णपूरो मयूरो,
भासो हासः कविकुल गुरु कालिदासो विलासः
हर्षो हर्षः हृदयवसतिः पंचबाणस्तु बाणः
केषांन स्यात कथय कविता कामिनी कौतुकाय।

कहल जा सकैछ जे कविता कामिनीक मनोमुग्धकारी वर्णन करबा मे पक्षधर कें जे नाम उपयुक्त बूझि पड़लैन्हि अथवा छन्द मे जनिक नाम सटीक बैसलनि तनिके

नाम ओ सेल। संस्कृत मे ततेक महाकवि भेलाह अछि जे एक श्लोक मे सभक नामक समावेश सम्भव नहि। मुदा ई विचारणीय जे शब्द-माधुर्यक हेतु पक्षधर मयूरकविक नाम लेल जयदेवक नहि। हमरा जनैत मयूरकविक नामोल्लेख भ्रमवश नहि, मात्र छन्द मिलएबाक हेतु नहि अपितु खूब सोचि विचारि कें कएल गेल। मयूर कविक संस्कृत काव्य जगत मे—सुधी समाज मे—केहन प्रतिष्ठा छलनि से निम्नलिखित प्रशस्ति सँ ज्ञात होएत—

तावत्कवि विहंगानां ध्वनिर्लोकेषु शस्यते
यावन्नो विशति श्रोत्रे मयूर मधुर ध्वनिः
दर्पं कवि भुजंगानां गता श्रवणगोचरम्
विषविद्ये व मायूरी मायूरी वाङ निकृन्तति।

की जयदेव मे मयूर सँ कम माधुर्य छनि ? केओ संस्कृत कवि वा समालोचक (प्रायः जयदेवे) जयदेव कें निम्नांकित श्रद्धांजलि समर्पित कएने छथीन्ह—

सरसा भूतसद्भावा रुचिरा सकलप्रिया।
यस्य भाषा सश्रृंगारा जयदेवः स राजते।
साध्वी माध्वीक चिन्ता न भवति भवतः
शर्करे कर्कशाऽसि
द्राक्षेद्रक्ष्यन्ति के
त्वाममृत मृतमसि क्षीरनीरं रसस्ते।
माकन्द क्रन्द कान्ताधर धरणितलं
गच्छ यच्छन्ति भावं
यावच्छृङ्गार सारस्वतमिह
जयदेवस्य विष्वग्वचांसि।

माधुर्यक एहि सँ पैघ की प्रशंसा भए सकैछ ? मुदा सम्भवतः एहि अमृततुल्य चीनियों सँ, दाखो सँ बेसी मधुर आ मदिरो सँ अधिक मादक माधुर्य कें संस्कृतिक आचार्य लोकनि उत्तम कोटि काव्यक माधुर्य नहि मानल। पद लालित्य मे दंडीक पताका फहराइते रहल। हमरा संदेह अछि जे राग-ताल मे निबद्ध रहलाक कारणें जयदेवक पदावली कें आचार्य लोकनि मात्र गीत मानलनि। स्वयं जयदेव अपन रचनाक नामकरण 'गीत गोविन्द' कएने छथि।

× × ×

जयदेवक छायानुकरण करबाक कारणें शिवसिंहक विदग्ध सभापति विद्यापति कें उचिते अभिनव जयदेवक उपाधि देल। आरम्भ मे जयदेव जकाँ विद्यापतियोक सभ गीत रागताल मे निबद्ध—छल। आ विद्यापतिक पदावलीक रक्षा गवैये तथा लोककंठे करैत अएलैन्हि अछि। तँ की विद्यापति मात्र गीतकार छलाह ? अपन समकालीन पंडित आ आचार्य लोकनिक हेतु विद्यापति उत्तमकोटिक कवि रहथु वा

नहि; हुनक कीर्त्तिलता पसरितहि गेल। माघ, भारवि, हर्ष, बाण, जयदेव जिनका सँ विद्यापति प्रभावित भेल रहथि, कालक्रमे विस्मृतप्राय भए गेलाह।

किं कवेस्तस्य काव्येन सर्ववृत्तान्तगामिनी कथेन भारती यस्यन प्रत्नोति दिगन्तरम्।

दू तीन सय वर्ष पश्चात् गोविन्ददास विद्यापति कें निम्नलिखित श्रद्धांजलि देल—

कविपति विद्यापतिमतिमाने
याक गीतजगचित्त चोराओल गोविन्द गोरि सरसरस गाने
भुवने अद्भुत जत भारतिवाणी
ताकर सार सारपद संचल बान्हल गीत कतहु परमाणी
×　　　　×　　　　×
आनन्दे नारद धरयन थेहा
से आनन्द जगभरि बरिसल विद्यापति कवि सेहा।

गोविन्द दासो विद्यापतिक पदावलीक हेतु 'गीत' शब्दक प्रयोग कएल मुदा हुनका अभिनव जयदेव नहि, कविपति कहल। संगहि एहु रहस्यक उद्घाटन कएल जे विद्यापति समस्त उपलब्ध भारतिवाणीक—Bells letters क—सार संचित कए गीत बनाओल।

कविता रस माधुर्यं कविर्वेत्ति न तत्कविः
भवानी भृकुटी भंगं भवोवेत्ति न भूधरः।

अपन समकालीन पण्डित, कवि एवं रसिकक हेतु विद्यापति भने अभिनव जयदेव छल होएताह मुदा परवर्त्ती कवि लोकनिक हेतु नव काव्य परम्पराक जन्मदाताक रूप मे कविपति सिद्ध भेलाह। संस्कृत अपभ्रंशक काव्य परम्परा लुप्त भए गेल। विद्यापति द्वारा प्रवर्तित काव्य परम्परा दिनानुदिन विकसित होइत कवीन्द्र रवीन्द्र मे अपन परिणति पाओल। एहि दृष्टि सँ उत्तर भारतक प्रचलित भाषा साहित्य मे विद्यापतिक वैह स्थान छैन्हि जे वाल्मीकिक संस्कृत साहित्य मे। किंवदन्ति अछि जे वाल्मीकिक मुँह सँ अनायास निःसृत—

मा निषाद प्रतिष्ठांस्त्वमगमः शाश्वती समाः
यत्क्रौंच मिथुनादेक मवधीः काममोहितम्,

सँ संस्कृतक बकार फूटल। विद्यापतिक मुँह सँ कोन पद पहिने बहरायल तकर प्रमाण नहि। परन्तु जे कोनो पद बहराएल होअओ, उत्तर भारतक भाषा सभक हेतु ओ गंगोत्री भए गेल। प्रायः वैह ध्यान मे राखि गोविन्ददास-विद्यापति कें कविपति कहल।

×　　　　×　　　　×

पाश्चात्य सभ्यताक सम्पर्क सँ जखन बंगाल मे नव जागरण भेल, मातृभाषाक प्रति नव अनुराग उत्पन्न भेल, सांस्कृतिक मूल्यक अन्वेषण होमय लागल, विद्यापति-

चण्डीदासक महत्व बढ़ि गेल। पाश्चात्य शिक्षाक दिव्यचक्षु सँ विद्यापतिक एक विलक्षण रूप शिक्षित समुदायक समक्ष उपस्थित भेल। चैतन्यक समय सँ विद्यापति मुख्यतः लोककण्ठे मे रहलाह—कण्ठहि कण्ठ पड़ाएल बनियाँ। बंगाल मे छापाखाना खुजबाक कारणेँ विद्यापति लिपिबद्ध भए पहिल बेर व्यापक रूपेँ पाठ्यक्रम मे किंवा अंगरेजिया पण्डितक Drawing Room मे उपस्थित भेलाह।

कतहु विद्यापतिक तुलना चण्डीदास सँ तँ कतहु शेली—कीट्स—बायरन सँ होमय लागल। अनुसन्धान मे पाश्चात्य विद्वान तथा शासकवर्ग कम योगदान नहि कएलनि। अंगरेजीक रोमांटिक साहित्यक अनुशीलन सँ विद्यापतिक रसास्वादनक हेतु एक अनुकूल वातावरणो उत्पन्न भए गेल छल। यावत् धरि रवीन्द्रनाथक उदय नहि भेल आ भ्रमवश विद्यापति बंगलाक कवि मानल जाइत रहलाह, विद्यापति बंगाली लोकनिक माथे पर रहलाह। पाछू आवेश किछु कमय लागल—श्रद्धा तँ बनले अछि आ बनले रहत। विद्यापति पर ऐतिहासिक दृष्टि सँ बंगालियोक ततबे अधिकार छनि जतबा मैथिलक। कए सय वर्ष तक मैथिल सँ अधिक बंगालिये विद्यापति केँ सेबने रहलाह जकर प्रभाव पदावलीक उपलब्ध पाठ पर स्पष्ट अछि।

मैथिलीक कवि सिद्ध भेलोक उपरान्त मैथिल बहुत दिन तक विद्यापतिक नाम रटबाक अतिरिक्त किछु नहि कएल। व्यवहारक गीत अवश्य मैथिलानी सभ अपन कण्ठ मे रखने रहलीह। आश्चर्यक विषय जे मैथिल विद्यापति पदावलीक एक नीक संस्करण तक नहि बहार कए सकलाह। आरम्भ मे मैथिलेतरे बिहार सँ विद्यापति पदावलीक नीक वा अधलाह संस्करण बहार कएल एहू संस्करण सभक लक्ष्य प्रायः ई सिद्ध करब छल जे विद्यापति हिन्दीक कवि छलाह, जे मैथिली हिन्दीक एक बोली थीक। मैथिली मे जागरण चन्दा झाक समय मे अवश्य आएल। मुदा शासकवर्गक कुदृष्टिक कारणे श्रीमन्तलोकनिक उपेक्षाक कारणे जागरण कुंठित भए गेल। चन्दाझाक समय सँ बीसम शताब्दीक द्वितीय-तृतीय दशक तक मैथिलीक अनेक पत्र पत्रिका बहराइत रहल मुदामैथिलीक प्राचीन साहित्यक शास्त्रीय अध्ययन अथवा नव साहित्यक सृजनक दिशा मे कोनो संघटित प्रयास नहि भेल। संघटित प्रयास हमरा जनैत बीसम शताब्दीक तृतीय दशक सँ आरम्भ भेल—मैथिली साहित्य-पत्रक प्रकाशन सँ। तहिया सँ अद्यपर्यन्त विद्यापति पर अनेक लेख—निबन्ध, थीसिस लिखल गेल अछि। विद्यापतिक वंश, व्यक्तित्व, विश्वास, गुण दोष पर अनेक गुणाढ्य लेख लिखल गेल अछि। विद्यापति केँ श्रेष्ठ कवि सिद्ध करबाक प्रयास भेल अछि—मिथिला, मैथिल-मैथिलीक गौरवक हेतु। प्रयास श्लाघनीय मुदा साहित्येतर, साहित्य बाह्य। विद्यापति मैथिल छलाह कि बंगाली, शैव छलाह कि शाक्त, भक्त छलाह कि रसिक आदि प्रश्न महत्वपूर्ण अवश्ये किन्तु पदावलीक

रसास्वादनक हेतु महत्त्वपूर्ण नहि। जँ आइ ई सिद्ध भए जाए जे विद्यापति मिथिलाक निवासी नहि छलाह, तँ की विद्यापतिक महत्त्व घटि जयतनि ? तँ विद्यापतिकाव्यक नव विश्लेषणक, नव मूल्यांकनक प्रयोजन।

नव मूल्यांकन कोन रूपेँ हो से कहबाक हम अधिकारी नहि छी। हम एतबे कहि सकैत छी जे तथ्यक निरूपण हो विद्यापतिक समग्र काव्य कृतिक विश्लेषण-विवेचन हो। से तखनहि सम्भव जखन कोनो पूर्वाग्रह नहि रहय। ताजमहल संसारक सर्वोत्कृष्ट स्थापत्य—ई भावना मनमे राखि जे ताजमहल केँ देखताह तिनका ताजमहल सुन्दर लगबे करतनि—सौन्दर्य कथीमे से बुझथून्ह वा नहि। अपवाद भए सकैत अछि। आल्डस हक्सले केँ ताजमहल नहि नीक लगलनि। आ किएक नहि नीक लगलनि तकर ओ उल्लेखो कएने छथि। मुदा आल्डस हक्सले सन कतेक व्यक्ति छथि ? संगहि ताजमहलक प्रसंग हक्सलेक कथन केँ के मोजर दैत छनि ? हमर अभीष्ट ताजमहलक अवमूल्यन नहि अछि। हम ई कहय चाहैत छी जे पूर्वाग्रह निन्दात्मक वा प्रशंसात्मक प्रवृत्ति—कलाक यथार्थ रसास्वादन वा मूल्यांकनमे साधक नहि बाधक होइछ। लोकप्रियता आ यथार्थता दुन् एक वस्तु नहि। विद्यापतिक उचित मूल्यांकन मे आनो कतेक बात बाधक अछि। एखनतक विशुद्ध विद्यापति पदावलीक नितान्त अभाव अछि। एक विद्यापति मे अनेक विद्यापति समाएल छथि जे भाषा, भाव, छन्द आदि सँ स्पष्ट अछि।

एकटा लोटा छल, बेटा छल तीन।
पानि पिबै काल होअए छिनाछीन।

कथमपि विद्यापतिक रचना नहि। विद्यापति लोकप्रियताक कारणे कविये नहि कवि सम्प्रदाय भए गेलाह। तँ की सम्पूर्ण कवि सम्प्रदायक मूल्यांकन कएल जाय ? क्षीरसँ नीरकेँ पृथक करबाक हेतु हँसक प्रयोजन अछि। लोककण्ठ मे रहबाक कारणेँ विद्यापतिक अनेक चिक्कन शब्द ऊभड़-खाभड़ भए गेल आ ऊभड़ खाभड़ शब्द चिक्कन भए गेल जे मधुर केँ कर्कश आ कर्कश केँ मधुर बना देलक। एकर समाधान विद्वन्मण्डलीये कए सकैछ। सौभाग्यवश मिथिला मे आइयो अधिकारी विद्वानक अभाव नहि अछि।

दोसर प्रश्न अछि मापदण्डक कोन पद्धति सँ विद्यापतिक कृतिक मूल्यांकन कएल जाय ? संस्कृतक रस-अलंकार पद्धति नीरस, हृदयहीन अछि। शरीरक विलक्षण विवेचना करैछ मुदा आत्मातक नहि पहुँचि सकैछ। पाश्चात्य समीक्षा पद्धति मे भावुकता अधिक अछि, युक्ति कम। प्रयोजन अछि दुनू पद्धतिक उचित समन्वयक। विद्यापति अपनहुँ Reason and Romanceक समन्वयक प्रतीक छलाह।

●